246

रुपेश

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

[द्वितीय परिच्छेद]

विषय **पृष्ठांक**

द्वितीय परिच्छेद

रावण सदाशिव सम्वादात्मक

तन्त्र-मन्त्र साधना

त्रेता युग में कैलास पर्वत के शिखर पर, जो कि अनेक रत्नों से शोभित, अनेक वृक्षों एवं लताओं से व्याप्त था। जिस पर भाँति-भाँति के पक्षी मधुर ध्वनियों में किल्लोल कर रहे थे।

जहाँ पर सब ऋतुएँ अनेकानेक फूलों एवं फलों से सुन्दर ज्ञात होती थीं और शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन चल रहा था।

जहाँ पर वृक्षों की अटल एवं सुखद छाया में अप्सराओं की सुन्दर संगीत ध्ववनि होती थीं और कोकिकालाओं का समूह बनों से प्रविष्ट होकर कुहुकता था, एवं ऋतुराज बसन्त अपने सेवकों के साथ सदा निवास करते थे।

जिस कैलास पर्वत के शिखर पर सिद्ध, चारण, गन्धर्व तथा अपने गणों सहित गणेशजी और स्वामिकार्तिकेय जी सदा निवास करते थे। उसी रम्य कैलास शिखर के ऊपर चराचर जगत के श्रीशंकर जी मौन धारण कर निवास करते थे।

जो सदा कल्याण करने वाले, आनन्द मूर्ति एवं दयारूपी अमृत के सागर हैं। जिनका वर्ण कर्पूर एवं कुन्द-पुष्प की भाँति उज्ज्वल और जो पवित्र सत्त्वगुणमय तथा व्यापक हैं।

जिनके दिशायें ही वस्त्र हैं, जो दीन दुखियों के स्वामी योगियों में सर्वश्रेष्ठ तथा योगियों को अत्यन्त प्रिय हैं। जिनकी जटायें गंगाजी की धारा से सदा भीगी रहती हैं।

जो विभूति से भूषित, शान्ति स्वरूप, सर्पों की माला एवं मुण्डों की माला धारण किये हैं। जिनके तीन नेत्र हैं, जो तीनों लोकों के स्वामी तथा त्रिशूलधारी हैं।

जो शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले, ज्ञानरूप, मुक्ति प्रदान करने वाले, आदि अन्त रहित, कल्पनातीत तथा विशेष रहित निरंजन हैं।

जो सबका हित करने वाला, देवताओं के भी देवता तथा निरामय अर्थात् जो रोग रहित हैं। जिनका ललाट अर्धचन्द्र द्वारा देदीप्यमान है और जो पाँच मुख वाले तथा सुन्दर भूषणों से भूषित हैं!

इस प्रकार प्रसन्न मुख शंकरजी को देखकर रावण ने संसार के हित की कामना से उनसे पूछा।

रावण उवाच

हे देवों के देव! जगत् गुरो!! सदाशिव! संसार का सदा कल्याण करने वाले मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मेरे स्वामी, क्षण मात्र में ही सिद्धि को प्रदान करने वाली ऐसी तन्त्र विद्या को आप हमसे कहिये।

शिव उवाच

भगवान् शङ्कर बोले—हे वत्त्र ! तुमने संसार के हित की कामना से यह अच्छा प्रश्न किया, अत: तुम्हारे समक्ष इस उड्डीश नामक तन्त्र को कहता हूँ।

केवल पुस्तक में लिखी हुई विद्या बिना गुरु के सिद्धि प्रदान नहीं करती है, अत: बिना गुरु के इस तन्त्र शास्त्र पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता है अर्थात् तन्त्र शास्त्र की जो भी क्रियाएँ की जायँ वे गुरुओं की सहायता से ही की जायँ।

पहले इस शास्त्र में षट् कर्म—१. मारण, २. मोहन, ३. उच्चाअन, ४. विद्वेषण, ५. आकर्षण तथा ६. वशीकरणादि के लक्षणों कका वर्णन करता हूँ। जो कि तन्त्र मत के अनुसार सिद्धि रूपी फल को देने वाले हैं।

षट्-कर्म

१. शान्ति कर्म, २. वशीकरण, ३. स्तम्भन, ४. विद्वेषण, ५. उच्चाटन एवं ६. मारण इन छ: प्रकार के कर्मों को मुनियों ने षट्कर्म कहा है।

षट्-कर्म-लक्षणम्

जिस प्रयोग से रोग, या किसी प्रकार की बाधािदिकों की शान्ति या अनिष्ट ग्रहों की शान्ति आदि की जाती है, उसी प्रयोग को शान्ति कर्म कहते हैं, जिस प्रयोग के द्वारा किसी स्त्री, राजा, शत्रु या इष्ट को वश में किया जाता है अर्थात् अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण कराया जाता है, उस प्रयोग को वशीकरण करहते हैं। जिस प्रयोग से अग्नि, जल, शत्रु के पराक्रम या शत्रु की सेना की रुकावट की जाती है उसी को स्तम्भन कर्म कहते हैं। जिस प्रयोग से एक दूसरे से लगे प्रेम को छुड़ा दिया जाता है, उसको विद्वेषण कहते हैं। जिस प्रयोग से मनुष्य अपने स्थान को छोड़कर भाग जाता है, उसे उच्चाटन कहते है। जिस प्रयोग से मनुष्य का मरण हो जाता है, उसे मारण कहते हैं।

विषय-कथनम्

हे राक्षसराज रावण, इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण में आकर्षण, दूसरे प्रकरण में उन्मादन, तीसरे में विद्वेषण, चौथे में उच्चाटन, पाँचवें में ग्रामोच्चाटन, छठवें में जलस्तम्भन, सातवें में स्तम्भन, आठवें में वशीकरण इसके अतिरिक्त और भी अन्धा, बहिरा एवं गूँगा आदि बनाने का प्रयोग नवें, दशवें प्रकरण में वर्णित है।

इस ग्रन्थ में बहिरा बना देना, मूर्ख बना देना, भूत लगा देना, ज्वर चढ़ा

देना, बुद्धि का स्तम्भन करना, दही को नष्ट कर देना, पागल बनाना, हाथी-घोड़ा को कुपित कर देना, सर्प एवं मनुष्य को बुला देना, खेती आदि का विनष्ट करना, दूसरे के ग्राम में प्रवेश करना इसके अतिरिक्त भूतादिकों की सिद्धि, पादुका सिद्धि एवं नेत्र के अञ्जन आदि की सिद्धि शास्त्रीय रीति से वर्णित है।

इन्द्र जाल की क्रीड़ा, यक्षिणी मन्त्र साधन, गुटिका बनानाा, आकश में गमन करना, मरे हुए को जिलाना इसके अतिरिक्त और भी भयंकर विद्याओं, उत्तम मन्त्रों एवं उत्तम औषधियों तथा गुप्त कार्यों का वर्णन करूँगा। जो शङ्कर जी के कहे हुए उड्डीश को नहीं जानता वह क्राधित होकर क्या कर सकता है। यह उड्डीश तन्त्र सुमेरु पर्वत को हिला देने वाला तथा पृथ्वी को सागर में डुबा देने वाला है।

यह तन्त्र शास्त्र नीच कुलोत्पत्र को, पापी को, मूर्ख को, भक्ति हीन को, भूख (दरिद्र को), मोह में फँसे हुए को, शंकित चित्त वाले को और विशेष करके निन्दा करने वाले प्राणी को कदापि न देना चाहिए। क्योंकि इनसे उड्डीश तन्त्र की क्रिया नहीं हो सकती है। फिर सिद्धि तथा फल तो दूर रहा।

यदि इस विद्या की प्रतिष्ठा एवं अपनी आत्मा की रक्षा चाहे तो देवता व गुरु-भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, उपकारी तथा सुमति वाले विद्वान् के प्राप्त होने पर ही उन्हें यह विद्या प्रदान करे। इसी में इस शास्त्र की प्रतिष्ठा है।

इस तन्त्र शास्त्र के प्रयोग में तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत, होम, काल बेला आदि का विचार नहीं किया जाता है। केवल तन्त्र के ही बल से औषधियाँ सिद्धि प्रधान करने वाली होती हैं। जिसका साधन करने से क्षण मात्र में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

जैसे चन्द्रमा से हीन रात्रि, सूर्य से हीन दिवस तथा राजा से हीन राज्य सुखकर नहीं होता, उसी प्रकार गुरु से हीन मन्त्र भी सुख तथा फल देने वाला नहीं होता है। अत: इसमें गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है।

जैसे इन्द्र का वज्र दैत्यों का विनाशक है, वरुण का पाश महा बलवानों का भी बाधक है, जैसे यमराज का दण्ड सबको दण्डित करता है एवं जैसे अग्नि देव सबको भस्म करने की शक्ति रखते हैं।

उसी प्रकार इस शास्त्र में विहित प्रयोग भी शक्ति रखते हैं। यह असत्य नहीं है, कहाँ तक कहा जाय इन मन्त्रों की शक्ति तो ऐसी है कि सूर्य को पृथिवी पर बुला ले।

अपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करे तो कोई दोष नहीं है। यदि बिना प्रायोजन किसी पर मारण प्रायोग किया जाय तो

अपना ही नाश हो जाता है। जो इस तन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करते उनको सिद्धि भी नहीं मिलती है।

मारण-प्रयोग

हे रावण ! अब मैं तुमसे मारण नाम का प्रयोग करता हूँ। जो कि मनुष्यों को शीघ्र सिद्धिकर है।

मारण का प्रयोग जिस किसी पर थोड़ी सी गलती कर देने पर भी नही करना चाहिये। मारण का प्रयोग किसी पर तब करे, जब जान ले कि यह हमको जान से मार डालना चाहता है।

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को स्वयं नष्ट कर देता है, अतः अपनी आत्मा की रक्षा को चाहने वाला मारण का प्रयोग भी न करे, क्योंकि इसमें अपना ही प्राण जाने का भय रहता है।

जो व्यक्ति अपने ज्ञान-दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को देखने वाला है तथा प्रत्येक जीवात्मा को ब्रह्मा के ही समान समझता है, वह संकटापन्न स्थिति उत्पन्न होने पर मारण का प्रयोग कर सकता है। यदि दूसरा कोई मारण करेगा तो दोष का भागी होगा। कथञ्चित् मारण का प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे प्रमाण के अनुसार करे।

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता की भस्म एवं मध्यमा (बिचली) अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली मूर्ति बनावे।

और उस मूर्ति को काले कपड़े में लपेट एवं काले डोरे से बाँध कुशासन पर सुला कर एक दीप जलावे।

तथा मारण मन्त्र का दशहजार जप कर पश्चात् १०८ उर्दी लेकर प्रत्येक को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

उस पुतली के मुख में मारण-मन्त्राभिमन्त्रित उर्दी डाल देवे। अर्धरात्रि के समय इस मारण प्रयोग को करने से इन्द्र तुल्य शत्रु भी मारा जाता है।

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रातःकाल उस मूर्ति को श्मशान भूमि में गाड़ दे। इस प्रकार बराबर एक माह तक प्रयोग करते रहने पर निश्चित शत्रु की मृत्यु होती है।

मारणमन्त्र—**ॐ नमः कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुं फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।**

इस ग्रन्थ के प्रयोग में जहाँ अमुक शब्द आवे वहाँ शत्रु का नाम लेता जावे। चार अँगुली प्रमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट उसी से शत्रु का नाम लिखे पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अङ्गार पर धूप

देवे। इस प्रकार तीन या सात रात्रि तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और निम्न लिखित मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे ग्रहयक्षभूतेनानेन शङ्कर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण हुं फट् स्वाहा ठः ठः।**

चार अङ्गुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में सिसके घर गाड़ दे। उसका परिवार सहित नाश हो जाय। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार एक अंगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घर में गाड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र का दश हजार जप कर दे तो शत्रु की सन्तति का विनाश होता है।

मन्त्र—**ॐ सुरेश्वराय स्वाहा।**

बिना मन्त्र जाप के कार्य नहीं सिद्ध होगा। अतः मंत्र जपे।

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दे तो शत्रु के परिवार का नाश होता है।

मन्त्र—**ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। सप्तदशाभिमंत्रितं कृत्वा निखनेत्।**

सत्रह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके तबी हड्डी गाड़े।

निम्ब की कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनागार में गोड़ने से शत्रु का मरण होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है।

इसी प्रकार शिरीष की कील शत्रु के घर आर्द्रा नक्षत्र में गाड़ने से शत्रु का नाश होता है।

मन्त्र—**हुँ हुँ फट् स्वाहा।**

एकविंशतिवारमभिमन्त्रितं कृत्वा द्वयोरपि प्रयोगे निखनेत्।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों में २१ बार अभिमन्त्रित करके गाड़ने से सपरिवार शत्रु का विनाश होता है।

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण

मन्त्र—**ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डंः डः अमुकं गृहण गृहण हुँ हुँ ठः ठः। अनेन मंत्रेण सहस्रवारमभिमन्त्रितं नरास्थि श्मशाने निखननेन मृत्युः।**

उपरोक्त मंत्र से हजार बार जिसके नाम पर अभिमन्त्रित कर मनुष्य की हड्डी श्मशान में गाड़े तो उसकी मृत्यु होय।

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हँड़िया में बन्दकर ऊपर से मिट्टी

लगाकर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरण तुल्य कष्ट पाने लगता है और भूमि खोदकर हंडी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है।

मंगलवार को शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी ला गोमूत्र में भिगोकर एक प्रतिमा (पुतली) बनावे।

जहाँ कोई मनुष्य न आ-जा सके ऐसे एकान्त स्थान पर या नदी का किनारा हो या बनादि हो, वहाँ पर एक वेदी बना उस पर पुतली को सुला दे और उसकी छाती में एक चोखा शूल (सूजा) गाड़ दे, पश्चात् बाम भाग में काल भैरव की स्थापना कर प्रतिदिन बलि एवं पूजन करे।

प्रयोग स्थान पर ११ वेद पाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बटुओं (बालकों) को भोजन करावे तथा कालभैरव के समक्ष कडुआ तेल का दीपक जलावे।

मूर्ति के दक्षिण (दाहिने) भाग में व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुख बैठकर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मंत्र जपे।

सावधान चित्त हो रात्रि काल में उक्त मंत्र का दश हजार जप करे, ऐसा करने से १९ दिनों में शत्रु का मरण होता है।

आर्द्रपटी साधन का विनियोग

ॐ अस्य श्रीआर्द्रपटी महाविद्यामंन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छंदः, हुं बीजं, स्वाहाशक्तिः, ममाऽमुकशत्रु-निग्रहार्थं जपे विनियोगः।

आर्द्रपटीसाधन मन्त्रः—**ॐ नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रानयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि एहि जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवशाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुं फट् स्वाहा।**

केवल जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्।

स्नानादि से शुद्ध हो पवित्र आसन पर बैठकर पहले आर्द्रपटी का विनियोग करे अर्थात् 'ॐ अस्य श्री.) से लेकर 'विनियोगः' तक वाक्य पढ़कर हाथ में लिये हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ दे। इस आर्द्रपटी मन्त्र का केवल एक मास पर्यन्त जप करने मात्र से ही शत्रु का मरण हो जाता है। यह आर्द्रपटी मन्त्र सब मंत्रों से श्रेष्ठ तथा तत्काल फलदायक है।

प्रयोग—कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त समाप्त करे तथा अमुकशब्द के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारणसहित १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करे। समाप्ति के दिन शत्रु के पैर के नीचे मिट्टी लाकर पुतली

बनावे तथा काली को बकरा की बलि देकर उसी रक्त में वस्त्र को भिगोवे ओर उक्त वस्त्र में पुतली को लपेट दे। पश्चात् मन्त्र का जप करता रहे। जब तक रक्त सूखेगा उतने ही समय में शत्रु समाप्त हो जायेगा।

बैरिमारण कवच

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋृषिर्गायत्री छन्दः, श्रीकालीदेवता, सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोग।

हाथ में जल से उपरोक्त मंत्र मढ़कर पृथ्वी पर छोड़ दे।

काली का ध्यान

ध्यान—इस प्रकार करे कि भगवती काले वर्ण की तीन आँखों वाली, चार भुजाओं वाली, जिसकी जिह्वा बाहर निकलती हुई है और वह देवी चन्द्रमा के समान कान्तिमान है।

तथा नील कमल के समान श्याम है, शत्रुओं का नाश करने वाली, नरमुण्ड, खड्ग, खप्पर एवं कमल पुष्प अपने चारों हाथों में लिये हुई हैं।

लाल वस्त्र पहिने, भयंकर दाँतों वाली, बड़े जोरों से हँसती हुई एवं नंगी शरीर वाली काली।

मुर्दे पर बैठी हुई, मुण्डों की माला पहनी हुई, महादेवी काली का ध्यान करते हुए निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिये।

कवच

हे भयंकर रूप धारण करने वाली एवं सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सब देवताओं द्वारा स्तुति की जाने वाली काली हमारे शत्रु का नाश करो।

ह्रीं ह्रीं स्वरूप वाली, ह्रीं ह्रीं सं हं रूपी बीज को धारण करने वाली, पुनः ह्रीं ह्रीं क्षें क्षौं स्वरूपवाली काली, आप सदा शत्रुओं का नाश करने वाली हैं, अतः हमारे भी शत्रु का विनाश कीजिये।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपवाली तथा संसार का बन्धन छुड़ाने वाली हे भगवती, आपने जिस प्रकार शुभ-निशुभ का वध किया था उसी प्रकार अमुक नाम वाले मेरे शत्रु का वध कीजिये।

ब्राह्मी (गायत्री), शैवी (पार्वती), वैष्णवी (लक्ष्मी), वाराही एक नारसिंही आदि अनेक रूप धारण करने वाली शंकर प्रिया हे कालिके शत्रु का विनाश करने के लिये आपको नमस्कार करता हूँ।

कौमारी, श्री (लक्ष्मी रूपी), सुरेश्वरी (इन्द्राणी रूपी) तथा भयंकर रूप धारण करने वाली और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली हे चामुण्डे! हमारे शत्रुओं को भक्षण कर जाओ।

ह्रीं ह्रीं रूपिणी तथा मुण्डों की माला धारण करने वाली है कालिके, विकराल दाँतों दाँतों वाली एवं रक्त पान से प्रसन्न होने वाली हमारी सदा रक्षा करो।

मन्त्र—**रुधिरपूर्णवक्त्रे च रुधिरावितस्तिनि मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषण शोषय यातुधानिके चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा। ॐ जहि जहि किटि किटि किरि किरि कटु-कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरुषान् राजश्रियं देहि देहि नूतनं नूतनं धान्यं भक्षय भक्षय क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं स्वाहा।**

हे राक्षसराज रावण, मैंने इस दिव्य कवच का तुमसे वर्णन किया। जो इस कवच का भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करेंगे उनके शत्रुओं का नाश होगा तथा शत्रु रोग से पीड़ित होंगे एवं धन-पुत्र सुख से रहित हो जायेंगे। इस कवच के एक हजार पाठ करने के बाद सिद्धि मिलती है। कवच सिद्ध होने पर मारण प्रयोग में अवश्यमेव सफलता प्राप्त होती है अन्यथा नहीं।

मारण कवच एवं मंत्र सिद्ध करके जलती हुई चिता से अंगार लावे पश्चात् अग्नि शान्त होने पर कोयले को चूर्ण कर शत्रु के पैर से स्पर्शित जल मिलाकर खूब घोंटकर स्याही बनावे, जब स्याही बन जाय फिर लोहे की कलम से शत्रु की कुरूप मूर्ति बनावे, जिसके पैर दक्षिण एवं शिर उत्तर की ओर हो पश्चात् उस मूर्ति हृदय पर अपना हाथ रखकर मंत्र सहित उक्त कवच का पाठ करे।

प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र जानने वाले विद्वान् से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करावे या स्वयं प्राणप्रातिष्ठा मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा करे पश्चात् मूर्ति के कण्ठ को तीखे शस्त्र से एक ही बार में काट दें, फिर कटी हुई मूर्ति के मय शिर व धड़ के ऊपर जलते हुए अंगार से लेपन करें। इस प्रकार करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर प्राण त्याग देता है और केवल बायाँ पैर पोंछने से दरिद्र हो जाता है।

यह कवच बैरियों का नाश करने वाला तथा उनको वश में करने वाला और महान् ऐश्वर्य का दाता एवं पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि करने वाला है। प्रात: काल या सायंकाल पूजा के समय इसका पाठ करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है।

और इसके केवल पाठ मात्र से शत्रु का उच्चाटर होता है, अर्थात् देश छोड़कर परेदश भाग जाता है। पश्चात् दास की तरह वश में होकर रहता है, यह शंकरजी का वचन सत्य है, सत्य है इसमें संशय नहीं है।

माला-निर्णय

मूँगा, हीरा तथा मणि की माला पुष्टि एवं वशीकरण प्रयोगों में आवश्यक है, आकर्षण प्रयोग में हाथी दाँत की माला से जप करे, विद्वेषण तथा उच्चाटन में स्फटिक या घोड़े के दाँतों की माला सूत में या बालों में गूँथकर जप करे। जिस प्रयोग में जिस प्रकार की माला लिखी है उसी प्रकार की माला पर जप करने से सिद्धि होती है।

शत्रु-मारण प्रयोग में या शत्रु सैन्य-स्तम्भन प्रयोग में गदहे के दाँतों की माला या स्फटिक की माला से जप करे।

धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिये शंख की माला से जप करे तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिये कमल की माला से जप करे।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रों का जप किया जा सकता है। स्फटिक, मोती, मूँगा, रुद्राक्ष तथा पुत्रजीव की माला पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

शान्ति एवं पुष्टि के प्रयोग में माला को कमल के सूत्र में पिरोवें, आकर्षण तथा उच्चाटन के प्रयोग में घोड़े की पूँछ के बालों में माला को गूँथें।

मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु (हड्डी) में रहने वाले पतले चर्मतन्तु (तागे) में माला को पिरोवे और अन्य कार्यों के लिए कपाल का सूत ही प्रशंसनीय है। अर्थात् सूती तागे में माला पिरोनी चाहिये।

सत्ताइस दाने क माला सिद्धि प्रदान करने वाली होती है, अभिचार कर्म प्रयोग में १५ दाने की माला होनी चाहिये। जिस प्रयोग में जैसी माला का वर्णन है, उसमें वैसी ही माला द्वारा प्रयोग करना चाहिए।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रसिद्धि किये जा सकते हैं, ऐसा मन्त्र शास्त्र के तत्त्वदर्शियों ने कहा है तथा एक सौ आठ (१०८) दाने) की माला सब कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाली होती है।

वशीकरण प्रयोग में पूर्व मुख होकर बैठे तब फिर जपादिक कर्म आरम्भ करे एवं अभिचार में दक्षिण मुख बैठे, धन की इच्छा से जप करने वाले पश्चिम मुख बैठे तथा शान्तिकर्म, आयु, रक्षा, पुष्टि एवं विद्या आदि प्राप्ति के लिए उत्तर मुख बैठकर जप करना चाहिए।

जप-लक्षण

जप तीन प्रकार का होता है। १. वाचिक, २. उपांशु तथा ३. मानसिक। १. जिस जप में मन्त्र का उच्चारण दूसरे को भी सुनाई पड़े उसे वाचिक जप कहते हैं।

२. जो दूसरे को और अपने को भी स्वयं सुनाई न पड़े उसे उपांशु जप कहते हैं। ३. जिसमें जिह्वा, दाँत तथा ओष्ठ का हिलना न दिखाई दे, मंत्र के अक्षरों को केवल मन से ही चिन्तन किया जाय उसे मानस जप कहते हैं। मानस का ही विशेष अभ्यास हो जाने पर अजपा जाप के नाम से ऋषियों ने पुकारा है।

पराभिचार (मारण प्रयोग) में वाचिक जप करे अर्थात् मन्त्रों का जोर-जोर से उच्चारण करे, शान्ति एवं पुष्टि कर्म में उपांशु अर्थात् दूसरे को सुनाई न दे तथा मोक्ष एवं ज्ञान-प्राप्ति के निमित्त मानस जप करे।

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अन्धे हो जाते हैं। यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दे तो फिर पहले की भाँति देखने लगते हैं।

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल देने से घोड़ा मूर्छित हो जाता है तथा जल में चंदन घिस कर पुनः नाक में पुनः नाम में डाल देने से स्वस्थ हो जाता है।

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील बना अश्विनी नक्षत्र ओन पर घोड़साल में गाड़ दे तो घोड़े मरने लगते हैं।

अश्वमारणमन्त्रः—**ॐ अश्वं पच पच स्वाहा।**

(अयुत-जपात् सिद्धिः)

उक्त मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है, उपरोक्त कील इसी से अभिमंत्रित करके घोड़साल में गाड़े।

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाह के घर में गाड़ दे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जायेंगी।

मस्त्यनाशनमन्त्रः—**ॐ जले पच पच स्वाहा।**

(इत्येनन मन्त्रेणायुतजपात् सिद्धिः)

यह मंत्र दश हजार जपने पर सिद्ध होता है। इसी मंत्र से अभिमंत्रित कर कील गाड़नी चाहिए।

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र—**ॐ कुम्भं स्वाहा।**

(अयुत् -जपात् सिद्धिर्भवति)

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान

पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाता है।

तैलनाशनमन्त्रः—**'ॐ दह दह स्वाहा' (इत्यनेन सहस्त्रसंख्याकजपः)**

यह मन्त्र एक हजार जपने से सिद्ध होता है। उपरोक्त कील इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ही गाड़े।

गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सब शाक नश्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

जामुन की लकड़ी की आठ अंगुल की कील अहीर के घर में जहाँ गायें दूही जाती हों वहाँ अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है। यह भी प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सोपाड़ी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण! मैं खेती के विनाश की विधि संक्षेप में कहता हूँ कि, जिस क्रिया को करने मात्र से अन्न के फसलों का सम्यक् विनाश होगा।

जहाँ पर आकाश से बिजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनावे तथ निम्नलिखित मंत्र से अभितंत्रित कर जिस खेत में गाड़ दे उसकी फलस विनष्ट हो जायेगी।

सस्यनाशनमन्त्रः—**ॐ नमो वज्रपाताव सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

मोहनाभिधान

हे रावण! अव इसके आगे मोहन कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो, जो शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

सिन्दूर, केशर व गोरोचर को आँवले क रस में पीसकर तिलक करने से सब लोग मोहित हों जाते हैं।

सहदेई के रस में तुलसी का बीज घोटकर रविवार के दिन तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

मैनसिल एवं कपूर मिलाकर केला के रस में घोंटकर तिलक करने से सभी लोग निश्चित मोहित हो जाते हैं।

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन कदली के रस में घोटकर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं।

काकड़सिंगी, चन्दन, वच तथा कूट इनको एक में मिलाकर इसका धूप कपड़े एवं शरीर तथा मुख आदि पर देने से मोहन शक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देखकर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि जीव भी मोहित हो जाते हैं, पान की जड़ का तिलक भी मोहनकारक है।

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोटकर मोहन मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जात हैं। बिना मोहन मंत्र मोहन मंत्र सिद्ध किये ये सब प्रयोग सिद्ध नहीं होते, अत: मन्त्र अवश्य सिद्ध कर लें।

चिड़चिड़ा, भृङ्गराज, लाजवन्ती तथा सहदेविका इन सबको साथ घोटकर मोहन मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करेन से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

श्वेत दूर्वा (सफेद दूब) तथा हरताल एक साथ पीसकर एवं मोहन मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते है।

विल्वपत्र को अच्छी तरह छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में घिसकर गोली बनावे ओर उसे मोहन मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सब जगत् मोहित होता है।

मोहनमन्त्र:—**ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र एक लक्ष जप करने पर सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध कर ले तो सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तब तिलक करना चाहिये।

स्तम्भन प्रयोग

श्री शंकरजी बोले—हे रावण ! अब मैं आगे स्तम्भन प्रयोग का वर्णन करता हूँ, ध्यान देकर सुनो कि, जिसके साधन से सिद्धि निश्चित रूप से हाथ में आ जाती है।

जल स्तम्भन का प्रयोग

शंकरजी बोले कि, इस स्तम्भन प्रयोग में पहले मैं जल का स्तम्भ कहता हूँ। केकड़ा का पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुआ का कलेजा, सूँइस की चर्बी तथा भिलावे का तेल इन सबको एक में मिलाकर पकावे। पकने के बाद इसका शरीर पर लेप करने से मनुष्य जल के ऊपर सुखपूर्वक स्थित हो सकता है अर्थात् डूब नहीं सकता। सर्प, नक्र (नाक) तथा नेवला की चर्बी और डुण्डुम का शिर इन सबको एक साथ भिलावे के तेल में पकावे, पकने के बाद एक लोहे के बर्तन में रख लेवे पश्चात्

कृष्ण पक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा एवं प्रणाम कर तथा स्तम्भन मन्त्र से एक हजार आठ बार घी की आहुति शंकरजी के नाम से देवे। पश्चात् स्तम्भन मंत्र को पढ़ता हुआ तैल का शरीर के ऊपर लेप कर जल पर सुख पूर्वक बैठ सकते हैं अथवा चल-फिर सकते हैं। इसी प्रयोग को शंकरजी के प्रसाद से सिद्ध कर प्राचीन महात्माओं ने बहती हुई नदियों को पार कर चमत्कार दिखलाया है।

अग्नि स्तम्भन का प्रयोग

मेंढक की चर्बी तथा कपूर एक साथ मिलाकर लेप करने से अग्नि में शरीर नहीं जलता अर्थात् अग्नि का स्तम्भन हो जाता है।

घिकुआर का रस लेपन करने से कोई वस्तु आग में नहीं जलती, अग्नि का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण ! यह मेरा वचन सत्य है।

स्तम्भनमन्त्रः—**ॐ नमो भगवते जलं स्तम्भय स्तम्भय हुं फट् स्वाहा।**

यह मंत्र एक लक्ष जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाय तभी क्रिया करनी चाहिए।

आसन स्तम्भन का प्रयोग

मृतक की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें श्वेतगुञ्जा (सफेद कजीरी) का बीज बो दे और गौ के दूध से उसको खींचता रहे, जब वह जमकर लता के रूप में परिणत हो जाय तो उसकी शाखा (डालें) तोड़कर जिसके स्थान पर या जिसका निर्देश कर सामने डाल दे तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध प्रयोग है।

आसन स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर एक हजार बार जप कर तब प्रयोग करना चाहिए।

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर का विष्ठा पान में जिसको खिला दी जायेगी उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खर मञ्जरी की जड़ लावे, पश्चात् उसको पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर क्षत (घाव) नहीं होता है।

खजूर मुख में तथा केतकी कमर में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बाँध लेने पर सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है।

रविवार के दिन बेल के कोमल पत्तों को विस (कमल) के नाल के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है।

शस्त्र स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्रस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है।

मेघ स्तम्भन-प्रयोग

दो ईंट लाकर दोनों ईंटों द्वारा संपुट करे पश्चात् चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमंत्रित करे, फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देवे तो मेघ का स्तम्भन होता है।

निद्रा स्तम्भन का प्रयोग

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नास ले तो नींद न आवे अथवा मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोंटकर अञ्जन बना लेवे और दोनों आँखों में लगा ले तो नींद का स्तम्भन हो जाय।

जहाँ गायों या भैसों या अन्य पशुओं आदि के रहने के स्थान हों वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता है।

ऊँट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें उसका स्तम्भन हो जायेगा, यह सिद्ध प्रयोग है।

हरलात के रस से मदार के पत्ते पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचा में ईशान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण! यह मेरा कहना सत्य है।

सैन्य स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन श्वेत गुञ्जा-फल (सफेद कर्जिरी का फल) लेकर श्मशान भूमि पर गड्ढा खोदकर गाड़ देवें तथा ऊपर से पत्थर रखकर दबा दें, पश्चात् आठों योगिनियों की और रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवही, कुमारिका, लक्ष्मी तथा ब्राह्मी एवं गणेश, वटुकभैरव, क्षेत्रपाल तथा दिग्पालों का षोडशोपचार से अर्थात् चन्दन, पुष्प, धूप-दीपादिकों से पूजन कर मदिरा व मांस की बलि पृथक् पृथक् नामों से देवे, पश्चात् सैन्य स्तम्भन मन्त्र का दस हजार जप करे।

ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणी मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र चालीस हजार जपने से सिद्ध होता है।

सैन्य पलायन प्रयोग

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू की पाँख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर पलायन मन्त्र को शत्रु-नाम सहित लिखे पश्चात् भोजपत्र के सहित उन दोनों पाँखों को यंत्र में भरकर गले में बाँधकर जिस सेना के सन्मुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द करे तो केवल उसके शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाय।

पलायनमन्त्रः—**ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्य-पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र का दश हजार जप करने पर सिद्धि होती है।

विद्वेषण प्रयोग

श्रीशंकरजी बोले कि, हे रावण! अब मैं विद्वेषण नामक प्रयोग कहता हूँ, तुम ध्यान से उसका श्रवण करो जो कि महाकौतुक रूप है।

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ खूब पीसकर तिलक करने योग्य बनाकर फिर उसको विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करें तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं अर्थात् विद्वेषण हो जाता है।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर काले डोरे से एक साथ बाँध दें और।

जल में खड़े हो तथा उस बँधे पंखों को हाथों में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मंत्र से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण हो जाता है।

शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावे तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल पलेट भूमि में गाड़कर उस पर वेदी बनाकर अग्नि स्थापन के पश्चात् मालती के पुष्पों का विद्वेषण मंत्र द्वारा हवन करे तो विद्वेषण हो जाता है।

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी तथा कौवा ोड़ी को सात दिवस पर्यन्त चमेली के फूल के रस में भिगो दे पश्चात् उसे निकालकर पुनः सात दिवस पर्यन्त बिल्ली के मूत्र में भिगोवे फिर उसे निकाल लेवे पश्चात् शत्रु के घर के समीप उसी का धूप देवे। इस धूप की सुगन्धि जो-जो सूँघेगा उसमें परस्पर विद्वेषण होगा।

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन करे उसको अन्य से विद्वेषण होवे।

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में धूप दे उस सभा में क्षण मात्र में ही विद्वेषण हो जाता है।

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक में मिलाकर पुतली बनावे और उसे नीला कपड़ा ओढ़ावे तथा एक सौ बार विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार वालों में विद्वेषण हो जायेगा।

एक हाथ में कौवे का पर तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूत से बाँधकर शत्रु के घर

में गाड़ दे तो पिता-पुत्र में विद्वेषण हो जाय, जब शान्त करना हो तो उसे निकालकर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा।

विद्वेषणमन्त्रः—**ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये। एक लाख मन्त्र जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र बिना सिद्ध किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता।

उच्चाटन प्रयोग

शिवजी बोले कि, हे रावण! ध्यान देकर सुनो, यह उच्चाटन या वध उसी पर करना चाहिये कि जिसने घर, खेत, स्त्री, धन एवं पुत्र का अपहरण किया हो।

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसे जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ दे तो शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायेगा।

ब्रह्मदण्डी और चिता का भस्म शिवलिङ्ग के ऊपर लेपन करे तथा ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म और सरसो शनिवार के दिन शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है।

गूलर की चार अंगुल की लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के सोने के स्थान पर खोदकर गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

कौवा और उल्लू का पर उच्चाटन कन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील उच्चाटन मंत्र से अभिमन्त्रित कर त्रु के गृह में मंगलवार को गाड़कर स्वयं पेशाब कर दे तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाय।

सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ायी हुई माला एवं जल इन तीनों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन होता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय कलादंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय फट् स्वाहा।**

दस हजार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है। बिना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग निष्फल होगा।

मध्याह्न (दोपहर) में जहाँ गदहा लोटा हो वहाँ की धूल पश्चिम मुख होकर बायें हाथ से उठा लेवे, पश्चात् उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृह के स्वामी का उच्चाटन होवे।

उच्चाटनमन्त्रः—**ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।**

वशीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं— हो रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग करता हूँ जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फल) सबको सम भाग ले जल के सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ठः स्वाह।**

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें।

बेलपत्र तथ नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग ले कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा वशीकरण से अभिमंत्रित तिलक कर लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

रावशीकरण

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दूग्ध में घोट अभिमंत्रित कर तिलक कर लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग की वश में हों, अन्य मनुष्यों की क्या गणना? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र—**ॐ ह्रीं सः अभुकं मे वशमानय आनय स्वाहा।**

शिव उवाच

शंकर जी बोले—हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ जिसे स्त्रियाँ वश में की जाती हैं।

मधु के साथ खस खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्ण कर स्त्री के शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

वशीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं--- हो रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग करता हूँ जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

ककुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फल) सबको सम भाग ले जल के सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलावे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र मन्त्र---**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ठः स्वाह।**

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें।

बेलपत्र तथ नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग ले कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा वशीकरण से अभिमंत्रित तिलक कर लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

रावशीकरण

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दूग्ध में घोट अभिमंत्रित कर तिलक कर लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग की वश में हों, अन्य मनुष्यों की क्ता गणना? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र---**ॐ ह्रीं सः अभुकं मे वशमानय आनय स्वाहा।**

शिव उवाच

शंकर जी बोले---हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ जिसे स्त्रियाँ वश की जाती हैं।

मधु के साथ खस खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ ाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्ण कर स्त्री शिर पर डालने से स्त्री वश में हो जाती है।

नीलकमल, भौरे की दोनों पंख, तगर का जड़, श्वेत कौआगोड़ी सम भाग ले चूर्ण कर युवती के शिरपर डालने से स्त्री वश में होती है।

स्त्री-प्रसङ्ग के पश्चात् अपने वीर्य को बायें हाथ से स्त्री के बायें चरण के तलवे में लेप करने से स्त्री वशीभूत हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।

सेंधा नमक, शहद, कबूतर की विष्ठा एक में पीस लिंग पर लेप कर स्त्री से मैथुन करने पर स्त्री वश में हो जाती है।

गोरोचन, कुरैया, पारा और काश्मीरी केशर को धतूरे के रस में घोंट लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसङ्ग करने से स्त्री अत्यन्त वशीभूत होती है।

छोटी एवं पतली इन्द्रिय द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती हैं, उनके लिये मोटा एवं लम्बा होना चाहिये, अत: मोटा और लम्बा लिंग बनाने का प्रकार कहता हूँ।

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के सहयोग से पीसकर लिंग पर लेप करे तो लिंग मोटा और लम्बा मूसल की तरह हो जाय।

लोध, केसर, असगन्ध, पीपर और शालपर्ण कड़वा तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा-मोटा होता है।

बच, खरैटी व पासा भैंस के मक्खन में खूब घोंटकर लिंग पर मलने से लिंग तुरन्त लोहा के समान हो जाता है।

भिलावा-गिरी, सेवार, कमल पत्र की राख को सेंधा नमक के साथ जल के सहयोग से घोटकर लेप करने से घोड़े की तरह लिंग बन जात है।

सूअर की चर्बी और मधु एक में मिला लेप करने से करीब एक माह के बाद लिङ्ग लम्बा तथा मोटा भी बन जाता है।

असगन्ध, सतावर, कूट, जटामासी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिल के तेल में पका लिंग तथा स्तन पर लेप करने एवं खाने से कड़ा होता है।

इसी प्रकार मुसली का चूर्ण भी घी में मिला लेप करने से काफी लाभ होता है तथा पीपर, सेन्धा नमक और मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने से भी लिंग मोटा एवं लम्बा होता है।

यह ध्यान रहे कि उक्त औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती हैं तथा बाँहों में भी लगाई जाती हैं।

जटामाँसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतावर इनको कड़वे तेल में पका लिंग पर मलने से लिंग कड़ा, मोटा एवं लम्बा होता है।

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जल से सहयोग से घोटकर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भुत लाभ होता है।

गोरोचन, मछली का पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं घी के सहयोग से घोटकर योनि के ऊपर लगा पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है।

कुलथी, विल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशिल को सम भाग ले चूर्ण कर ताम्रपात्र में रख सरसों के तेल में सात दिन तक मीठी आँच में पका-पकाकर उतारता जाय, पश्चात् कपड़े से छानकर उस तेल को योनि पर लगा पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में होता है।

ककुनी, सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग ले घोड़े के मूत्र में घोट कर योनि पर लगा मैथुन करने से पुरुष वश में हो जाता है।

कुचकाठिन्य की विधि

रेड़ी का तेल, मछली का तेल व बिल्वफल का लासा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े होते हैं। यह ध्यान रहे कि मलते समय हाथ ऊपर की ओर रहे।

काले रंग का बिच्छु तथा खंभारी के रस को तिल के तेल में पकावे व केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर स्तन पर मले फिर तो गिरे स्तन भी कड़े होकर उठ जाते हैं।

श्वेत रंग के मोथे को काली गौर के दूध में पका लेप करने योग्य बना स्तन पर लेप करने से स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है।

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गज पीपर इन सबको शुद्ध जल के सहयोग से पीस स्तन पर लेप करेन से स्तन ताड़ फल एवं बड़े आम्र फल के जैसे होते हैं।

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पाक करे। जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर शीशी, बोतल में रख स्तन पर मले फिर तो ठीक तौर से एक बार मलने के बाद ही स्तन लोहे जैसे कड़े हो जायेंगे।

इन उपरोक्त विधियों का वर्णन स्त्री-पुरुष के प्रसङ्गार्थ श्री शंकर जी ने स्वयं किया है।

योनि संस्कार

निम्बपत्र को कोरी हाँड़ी में जल देकर खूब उबाल कपड़े से छानकर योनि

को धोवे पश्चात् काले अगर व गुग्गुल को आग में जला योनि को सेंक पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है।

जिस स्त्री की योनि में दुर्गन्ध मालूम पड़ती हो वह तो नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते पीस योनि पर लेप करे फिर दो-तीन बार के ऐसा होने से योनि-दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी।

रोम-नाशन

पलाश पत्र का भस्म तथा हरताल भस्म का चूर्ण केले के केले के रस में मिलाकर रोग स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं फिर कभी नहीं जमते हैं।

एक भाग हरताल का भस्म, पाँच भाग शंख का भस्म, पाँच भाग पिलखन का भस्म इन सबको केले के जल में मिला रोम स्थान पर लगाने से आराम से बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मजीठ भस्म को पलाश के फूल के साथ पीसकर लेप रने से भी बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोटकर रोम स्थान पर लगा धूप दिखाने से बाल साफ हो जाते हैं।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाने, धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं।

योनि-संकोचन

आमा हल्दी व खाने की हल्दी, कमल केसर तथा देवदारु की लकड़ी सम भाग ले जल में पीस योनि पर लगाने से योनि संकुचित होती है।

धव पुष्प, त्रिफला, जामुन की छाल, जामुन का रस, घी तथा मूलहठी समभाग लेकर पीसे फिर इसे योनि पर लगावे। यदि वृद्धा स्त्री हो तो भी उसका भग लकड़ी के तुल्य संकुचित हो जाता है।

नीले कमल का बीज, कटेरी, वच, काली मिर्च, कनेर की छाल व बीज, असन तथा हल्दी को समभाग घोटकर लेपन योग्य बना योनि पर लगाने से शीघ्र योनि संकुचित हो जाती है।

बीरबहूटी नाम की जड़ी को पीस पर लगाने से योनि सहज ही में कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है।

स्त्री-द्रावण

कामशास्त्रों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक बताया है सलिए औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती हैं, एतदर्थ उन औषधियों का संक्षिप्त वर्णन करता हूँ कि, जिससे औरतें भी पुरुषों के साथ प्रेमानन्द ले सके।

सिन्दूर, इमली के फल को मधु में घोटकर भगद्वार पर लगा मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र ही पतन हो जाता है।

त्रिफला चूर्ण को अच्छी तरह कपड़े से छानकर शहद में मिला योनि द्वार पर थोड़ा लगाकर स्त्री प्रसंग करने से स्त्रियाँ शीघ्र ही स्खलित हो जाती हैं।

पीपर, चन्दन, कटेरी तथा पकी इमली इन सबको घोट पीसकर लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री स्खलित हो जाती है।

अगस्त पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण, घी एवं शहद में मिला लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का पतन हो जाता है।

अच्छी लोध, धतूर, कटेरी व पिपरामूल सम भाग ले चूर्ण कर शहद में मिला लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र स्त्री का स्खलन होता है।

असगन्ध के पत्तों को हंडी में उबाले, पश्चात् उसे तेल में उरिद एवं मुलहठी दोनों सम भाग पीस लिंग पर लगा मैथुन करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

बेल का फूल व मुण्डी का फूल और कपूर पीस लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसंग करने पर स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

कटेरी की जड़ एवं फल भी, पीपर, काली मिर्च, गोरोचन सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लगा संभोग करने से स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

काली मिर्च, धतूर बीज, पीपर, लोध चूर्ण सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसी भी स्त्री क्यों न हो पर उसके पतन में देर नहीं होती है।

उपर्युक्त औषधियों को निम्नलिखित द्रावण मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिये। यह मंत्र १०८ बार जपने पर सिद्ध होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुदाय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणाम्मदं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा।**

आकर्षण प्रयोग

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण, अब मैं आगे आकर्षण विधि का वर्णन करता हूँ, जिसके ज्ञान से सचमुच आकर्षण होगा। निम्नवर्णित प्रयोगों से मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग, राक्षस, स्थावर, जंगम सभी का आकर्षण हो सकेगा इसमें संशय नहीं है।

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर बकरे के मत्र में कूट-पीसकर सुखा ले, जिससे कि भुरभुरी हो जाय, फिर तो जिसका आकर्षण करना हो उसके शिर पर थोड़ा डाल दे तो उसका आकर्षण हो जायेगा।

पंचमी की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लावे और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में खिला दे तो वह स्वयं वह स्वयं आकर्षित हो आपके पास चला आयेगा।

स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी ला गिरगिटान के खून में सान उसकी प्रतिमा (पुतली) बनावे, पश्चात् प्रतिमा के वक्षस्थल पर उसी स्त्री का नाम लिखे, जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमा को मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दे तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करे तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आयेगी।

यक्षिणी साधन

शंकरजी बोले कि मैं यक्षिणियों को सिद्ध करने का उपाय कहता हूँ कि, जिसके द्वारा मनुष्य की हर एक कामनाएँ सिद्ध होंगी।

इसके सिद्ध करने का कई प्रकार है—जैसे बहिन, माता, पुत्री तथा स्त्री के रूप में जो जिस भाव के इच्छुक हों उन्हें उन्हीं भाव का ध्यान करना चाहिये।

इस यक्षिणी साधन में मांस एवं पान का भक्षण अत्यन्त निषेध है, प्रातः काल स्नान कर नित्य क्रिया से छुट्टी पाकर जप करना चाहिये और किसी का भी स्पर्श न करना चाहिये। यह सब क्रिया तब तक करे जब तक वांछित पदार्थ देने वाली यक्षिणी प्रत्यक्ष रूप में प्रगट न हो जाय।

महायक्षिणी साधन

साधनमन्त्र—**ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः।**

उपर्युक्त मन्त्र को जितेन्द्रिय हो बेल वृक्ष पर चढ़कर एक मास पर्यन्त प्रतिदिन एक हजार जपे।

मांस तथा मदिरा प्रतिदिन रखे क्योंकि न जाने वह नाना रूप धारण करने वाली यक्षिणी कब आकर उपस्थित हो जाय।

जिस समय यक्षिणी आकर उपस्थित हो जाय उस समय उसे देखकर भयभीत न हो (वह भयानक रूप भी धारण कर सकती है), अपना जप करता जाय, जब वह यह वचन कहे कि हम अमुक दिन बलि लेंगे तथा वरदान देंगे तो उसे मानकर उसी दिन वर की याचना करें, जैसे धन की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो वही वरदान माँगे।

प्रसन्न हुई यक्षिणी सब कुछ देती है, इसमें सन्देह नहीं है यदि प्रयोग को अपने न कर सके तो किसी निर्भीक ब्राह्मण करावे। यह यक्षिणी-साधन देवताओं द्वारा किया गया है।

अथवा अपने सहायकों को रख ब्राह्मणों से करावे और प्रतिदिन तीन कुमारी कन्याओं को भोजन कराता रहे।

धनादि की सिद्धि होने पर धन अच्छे कार्य में खर्च करें, नहीं तो सिद्धि नष्ट हो जायेगी।

धनदा-यक्षिणी मन्त्र—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा।**

धन देने वाली यक्षिणी का जप पीपल के वृक्ष पर बैठकर करने से धनदा प्रसन्न होकर धन देती है।

पुत्र की इच्छा वाला व्यक्ति आम के पेड़ पर चढ़कर जप करे तो पुत्रदा यक्षिणी प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करती है।

बरगद के पेड़ पर चढ़कर महालक्ष्मी का जप करने से वह प्रसन्न होकर घर में चिरस्थायी हो जाती है।

मदार की जड़ के ऊपर बैठकर जप करने से जया नाम वाली यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्यों को सिद्ध करती है।

यक्षिणियों की साधना गुप्त रूप से करनी चाहिये, प्रत्यक्ष प्रकट रूप से करने में विघ्नों का भय रहता है तथा प्रयोग सिद्ध नही हो पाता।

भूतिनीसाधनम्

भूतिनी नाम की यक्षिणी अनेक रूप धारण करती है, जैसे कुण्डल धारण करने वाली, सिन्दूर धारण करने वाली, हार पहनने वाली, नाचने वाली, अत्यन्त नाचने वाली, चेटी, कामेश्वरी और कन्या आदि।

भूतिनीमन्त्र—**ॐ ह्रां क्रूं क्रूं क्रं कटुकटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च अं भः।**

भूतिनी का जप चम्पा के नीचे करे और प्रति दिन आठ हजार जप करे, पहले भूतिनी का पूजन करे पश्चात् गुग्गुल का धूप दे। उपर्युक्त विधि से करने पर सातवीं रात में भूतिनी आती है, जब इष्ट आ जाय तो उसे चन्दनमिश्रित जल से अर्घ्य देवे फिर तो प्रसन्न होकर भूतिनी उसी रूप में परिणत हो जाती है, जिस रूप में साधक की इच्छा है।

जब साधक यक्षिणी को माता के रूप में सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों को वस्त्राभूषण और भोजन प्रतिदिन देती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने

पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रसवाले दिव्य भोजनों को देती है, भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ा स्वर्गादि लोकों को भ्रमण कराती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है।

रात होने पर देवालय में सुन्दर पलंग बिछा सजावे तथा चमेली पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी कर मंत्र का अष्ट सहस्र जप करे। जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकारों से विभूषित होकर यक्षिणी प्रकट होगी और साधक का आलिंगनचुम्बनादि कर भोग करेगी तथा कुबेर के धन-कोष से धन भी लाकर देगी।

शव-श्मशान-साधन

शंकरजी बोले कि, अब मैं मसान सिद्धि-अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकार की जाती है उस आश्चर्यजनक क्रिया का वर्णन करूँगा जिसके ज्ञान के बाद साधक सिद्ध हो जाता है।

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय हो पश्चात् श्मशान भूमि में उस दिन जाय, जिस दिन मंगलवार को अमावस्या हो, फिर पुरुष शव का अन्वेषण कर उसकी छाती पर निर्भय हो बैठकर दश हजार मंत्र का जप करे पश्चात् वहाँ से उठ एकान्त में आ श्यामा और श्यामल सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे, यही शव-साधन की क्रिया है, ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी।

शवसाधनमंत्र—**ॐ ह्रीं शवमेनं साधय साधय स्वाहा।**

श्वेत काकजङ्घा, गिद्ध की चर्बी, असगन्ध इनको लेकर ऊँटनी के दूध में पीस लेप बना पैर के तलवे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है।

पादुका सिद्धि का मन्त्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत-बेताल-त्रासनाय शंख-चक्र-गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हूँ फट् स्वाहा।

इसी मन्त्र का लक्ष जाप पादुका (खड़ाऊँ) सिद्ध करता है, इसको सौ बार पढ़कर उपर्युक्त लेप अभिमंत्रित कर लेना चाहिए।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा।

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप कर पन्द्रह योजन आदमी जा सकता है तथा काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप कर पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापस आ सकता है।

पदलेपनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय हरति गदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।**

इस मन्त्र द्वारा लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब लेप को पैर के तलवे में लगावे।

काग क कलेजी, आँख एवं जीभ, मैनसिल, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन, मालती तथा बिदारीकन्द को सम भाग में ले घोंट लेप बना पाद तले लगाने से सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को उपर्युक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर लेना चाहिये।

मृतसञ्जीवनी प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, मैं मृत सञ्जीवनी विद्या का प्रयोग प्रेमपूर्वक कहूँगा, अकोल नाम वृक्ष के नीचे एक शिव लिंग स्थापित करे, पश्चात् घट के ऊपर कसोरे में यव रख तथा जल से परिपूर्ण करे, प्रथम शिवलिंग की विधिवत् पूजा करे फिर वृक्ष की एवं यव तथा घट की पूजा करे और वृक्ष व लिंग तथ घट तीनों को एक सूत्र में बाँध देवे।

तथा इस क्रिया में चार आदमियों को साधक बनावे फिर सब साधक बारी-बारी से प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन तक पूजा करता रहे जब तक कि वृक्ष में फूल-फल न लगे। जब फल पक जाय तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रखे।

उस कलश का प्रति दिन षोडशोपचार से पूजन करे, कुछ दिनों बाद फिर बीजों को निकाल उनकी गुद्दी निकाले, छिलके अलग फेंक दे, फिर कोंहार के यहाँ से बड़े मुँहवाला घड़ा ला उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागा से लेप करे।

पश्चात् शुद्ध मिट्टी रख उसें गोलाई में बीज बो दे फिर कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय तो ताम्रपात्र से ढँककर (ध्यान रहे कि इस प्रकार ढंका जाय जिसमें तेल निकल सके), घड़ा को औधा (नीचे मुख) कर ऊपर से आंच देकर तेल निकाले, जब तेल निकल जाय तब शीशी में रख ले और आधा मासा यह तेल तथा आधा-आधा मासा तिल का तेल मिलावे और जिस रोगी की मृत्यु सर्प काटने से हुई हो उस रोगी को नास दे तो वह जीवित हो जायेगा। सर्पदंशियों की यह अचूक दवा है।

अघोरमन्त्र—**अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः।**

इसी अघोर मंत्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी प्रयोग सिद्ध होता है।

विद्याधर सिद्धि

ॐ ह्रीं गौर्गोपतये नमः।

अर्ध रात्रि में विद्याधर मंत्र का तीन हजार प्रति रात्रि जप करने से विद्याधर की सिद्धि होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान एवं पुत्र और बल भी प्राप्त होता है।

शिवज कहते हैं कि, अब मैं इन्द्रजाल कौतुक का व्याख्यान करता हूँ, जिसके ज्ञान से प्रत्येक प्रकार के कौतुकों की जानकारी हो जाती है।

भूतकरणम्

भिलोय के रस में गुञ्जा (घुँघुची) विष, चित्ता तथा केंवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगता है।

भूत चढ़ने के लक्षण ये हैं कि, जैसे धीरे-धीरे शरीर का हिलना, बार-बार मूर्च्छा का आना अथवा हाथ कँपना, पटकना आदि।

खस, चन्दन, कंगनी, तगर, लालचंदन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।**

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतरता है।

लोहबान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसों, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, बच, चव्य, बनउर, जव, बकरे का बाल तथा मोर की पूँछ।

बछड़े के मूत्र में पीस के सुखावे तथा मिट्टी की परई में अग्नि जला इसका धूप दे तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी-शाकिनी और भी ज्वरादि अनेक प्रकार के दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है।

गुग्गुल, लहसुन, घी, साँप की केंचुल, बानर का बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा एक में मिलाकर धूप देने से बड़े-बड़े प्रेत शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह, पूतना, डाकिनी, एकाहिक ज्वरादि भी भयंकर से भयंकर नष्ट हो जाते हैं।

काली सरसों तथा काली मिर्च का अञ्जन भूत को उतार देता है, तगर, बकुची एवं निम्ब का अञ्जन भयानक ज्वर पीड़ा को शान्त करता है।

एक पात्र में गोरख मुण्डी की जड़ रखे पश्चात् हींग मिश्रित जल छोड़े फिर उस जल को पीने से ग्रहादि एवं भूतादिकों की बाधा शान्त होती है।

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने (नाक में सूँघने) से ब्रह्मराक्षसादि एवं भूतादि की बाधाएँ शान्त होती हैं।

भूतनाशनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपति स्वाहा।**

इस मन्त्र को यथाशक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं।

शंकरजी के अघोर मन्त्र का हृदय में अर्थात् अजपा जाप करने से ज्वर शान्त होता है।

बरगद के पत्ते पर निम्नलिखित मंत्र कोयले से लिखकर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है।

ज्वरनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुं फट् स्वाहा।**

इस मन्त्र को सिद्धि पर्यन्त जप करने से दूसरे पर ज्वर का आवेश हो जाता है।

उपर्युक्त मंत्र को भोजपत्र पर लिख दाहिने हाथ में बाँधे तथा नित्य १०८ बार जप करे तो सब प्रकार के ज्वर नष्ट हों।

धतूर का बीज, लोहे का मुर्चा, गोह की विष्ठा, करंज का बीज समान भाग ले चूर्ण कर जल में मिला खाने-पीने के साथ देने से पागलपन होता है तथा निम्नलिखित मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर जल पिला देने से पागलपन शान्त हो जाता है।

उन्मादनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा।**

इस मंत्र को एक लक्ष बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

शंकरजी कहते हैं कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने का प्रकार कहता हूँ, जिसके प्रयोग से शत्रु व्रणी (फोड़ा-फुन्सी वाला) होकर विनष्ट हो जाता है।

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बंदर के शिर का सम भाग ले चूर्ण कर शीशी में भर लेवे पश्चात् शत्रु की शय्या या उसके वस्त्रादिकों पर डाल दे, इसके डालते ही शत्रु व्रणों से पीडित होकर मर जायेगा। यह चूर्ण यमदण्ड के सदृश है, जिसका निवारण देवतादिक भी नहीं कर सकते मनुष्यों की क्या गणना है।

जब शत्रु को पीड़ा रहित करना हो तो नील, लाल कमल एवं लाल चन्दन का मुर्गी के पित्त में मिला लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी।

विस्फोटक-करणमन्त्र—**ॐ नमो भवति गृहवराहो सुभगे ठः ठः स्वाहा।**

लक्ष जप द्वारा विस्फोटक मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिये।

कुष्ठीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, अब मैं शत्रु को कुष्ठ रोग होने की विधि कहता हूँ कि जिसके प्रयोग से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है।

भिलावे का रस, घुंघुची एवं मेढ़क, गृहगोधी (चमगुदरी) इन सबको एक में मिला खाने-पीने के सामानों में खिला-पिला देने पर सात दिनों में ही कुष्ठ रोग उत्पन्न हो जाता है।

आँवला, खैर एवं नीम का चूर्ण, घी, शहद एवं शक्कर मिला पुराने चावल के साथ पीसकर खिलावे तथा परोरे की तरकारी और पुराने चावल का भात पथ्य दे तो कुष्ठ अच्छा हो जायेगा।

मक्षिकानिवारण प्रयोग

हरताल को जल में पीस लेप बना एक पुतली पर करके रख दे तो उसे सूँघकर मक्खियाँ भाग जायेंगी।

मूषकनिवारण प्रयोग

तिल, कुल्थी का चूर्ण, सफेद मदार के दूध में मिला मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं।

बकरी के मूत्र में बकरी की लेंड़ी तथा हरताल, प्याज सहित पीस कर चूहे के ऊपर इसका लेप कर लेप कर चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं।

बिल्ली की विष्ठा तथा हरताल एक में पीस चूहे के ऊपर लेप कर छोड़ देने से सूँघकर सब चूहे भाग जाते हैं।

मत्कुण-निवारण

मदार की रूई की बत्ती को महावर के रंग में कडुवे तेल में दीपक के जलाते ही खटमल भाग जाते हैं।

अर्जुन फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, वायविडङ्ग इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से सर्प, खटमल और मूस भाग जाते हैं।

सर्पनिवारण प्रयोग

सफेद गुड़, चंदन, वायविडङ्ग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल इन सबको एक में मिला धूप देने से सर्प, बिच्छू भाग जाते हैं।

नागरमोथा, सरसों, भिलावा, केवाच का फल, गुड़ तथा मदार का फल इनको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प, मूस, और भी विषैले कीटाणु भाग जाते हैं। जैसे कि कायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं।

मशक-निवारण

भिलावा, वायविडङ्ग, सोंठ, पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जंतुआं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं। बालू, सफेद सरसों एक साथ मिला खेत में डाल देने से टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूस, मच्छरादि सब प्रकार के जीव मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में बहेड़े की बाँझी लेकर निम्न लिखे मंत्र से अभिमंत्रित कर खेत में गाड़ देने से अन्न अधिक उपजता है।

अन्नोत्पादन-मन्त्र

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

रक्त निवारण

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटरी बाँध स्त्री की योनि में रख देन से खून का गिरना बंद हो जाता है।

आँवला, बहेड़ा तथा निसोत का चूर्ण जल के साथ पीसकर पीने से अधिक गिरता रक्त भी बन्द हो जाता है।

चावल का धोवन तथा सरफोंस की जड़ को पीसकर पीने से भी स्त्रियों और का खून बन्द होता है। यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा १० मासे से अधिक न हो।

देवदारु, रसाञ्जन, चिरायता, भिलावा, अडूसा, नागरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद के संयोग से सिद्ध कर पीने से शूलप्रशूल सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग

रविवार को सुगन्धरा की जड़ ला एक वर्णा गौर के दूध के साथ पीस ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूँग की दाल पथ्य खाने से बन्ध्यादोष विनष्ट होता है।

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का भोजन, धूप, अधिक ठंड इन सबसे बचना चाहिए। ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवाह करने से बन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है।

नागरमोथा, कंगुनी, वैर, लाहरस तथा मधु इनको बराबर लेकर पुराना चावल के धोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिन तक पूर्वोक्त पथ्य से पीव तो बन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है।

पीपर, केसर आदि व काली मिर्च घी के साथ चूर्ण कर खाने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

सफेद कटेली, जटामासी के पत्ते, नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है। पथ्य सात्त्विक भोजन करे।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूने पश्चात् प्रातः स्नान के बाद दूध व घी के साथ पाय तो वन्ध्या पुत्रवती हो।

रजोधर्म शुद्धि के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

पहले ब्यायी हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसे गौ के दूध के साथ नागकेशर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी-दूध के साथ भोजन करने से वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है।

तिल, रस, गुड़ तथा नये जवान बछड़े का मूत्र १ सेर इनको ले एक हण्डी में गौ की कंडी पर पकावे, पकने के पश्चात् ऋतु के समय सात बार पीवे तो अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो।

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ सबको समान भाग ले बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है।

विष्णुक्रान्ता को जड़ सहित भैंस के नैनू (नूतन घी) के साथ सात दिन खाने से काक वन्ध्या भी पुत्रवती होती है।

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं, जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पीत पुष्पा नाम की जड़ी जड़ सहित लावे, उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीस कर दस मासे पीवे तो पुत्र न मरे।

नीबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीस घी मिला पीने से पति प्रसंग द्वारा स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र होता है।

गर्भस्तम्भन

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो तो गौ के दूध में पद्माख, लालचन्दन व खस इन सबको बराबर ले पीस एक-एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं किरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज, काली गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है।

नील कमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये सब बराबर ले गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

पीपल की छाल, काला तिल, शतावर इन सबको बराबर ले गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल की केशर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

नील कमल व कमल की जड़, गोखरू गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा जाती है।

गदहपूर्णा, काकोली, तगर, नीलकमल, गोखरू इन सबको गौ के दूध के साथ पीने से पाँचवें मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कैंथ का गूदा ठंडे पानी में पीस और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नीलकमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

मुलहठी, पद्माख, मुस्त, नागकेशर, गजपीपर इन सबको गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास की गर्भपीड़ा जाती है।

इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस घोंट कर खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है।

पुराना खाँड़, मुनक्का, छुहाड़ा, शहद व नील कमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है।

सोंठ डाल कर पकाया हुआ गौ का दूध अथवा मुलहठी व देवदारु देवदारु आर सोंठ गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी दसवें महीने की व्यथा दूर होती है।

आँवला और मुलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ-स्तम्भन पूर्णरूपेण हो जातता है, फिर नहीं गिरता है।

कुम्भकार के हाथ की लगी मिट्टी, परवह चाक के ऊपर की हो, बकरी के दूध में मिलाकर पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है, फिर नहीं गिरता।

कसेरू, सिंघाड़ा नागरमोथा और रेड़ी इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भव्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

कोई की जड़, शहद, घी इनको दूध में डालकर खौलावे पश्चात् ठंडा कर सात दिन तक पीने से गर्भ स्राव, अरुचि आदि सब प्रकार का विकार नष्ट हो जाता है।

कमल की जड़, जिसको भसोड़ कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीन से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है।

ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा व काली मिर्च का काढ़ा बना पीने से गर्भ का रोग दूर होता है।

गौ के दूध में खाँड़ मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है या गंभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खाये या दूध पीवे तो भी गर्भ का सूखना बन्द हो जाय।

सुखप्रसव प्रयोग

बच्चा पैदा होने के समय यदि व्यथा अधिक हो और बालक उत्पन्न होने में कठिनाई मालूम पड़ती हो तो गदहपूर्ना की जड़ का चूर्ण योनि में रख देने से बालक सुख उत्पन्न है।

प्रसिद्ध काढ़ा दशमूल का और सेंधा नमक वे घी मिलाकर पीने से भी सुखपूर्वक बालक उत्पन्न हो है।

गर्भमोचन मन्त्र

ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथवाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा।

नहा-धो शुद्ध हो उपर्युक्त मंत्र से गरम जल अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिला देने से सुखपूर्वक बच्चा पैदा होता है।

करियारीकन्द, अपामार्ग (चिचिहिड़ा) या इन्दायन की जड़ को चूर्णकर पोटरी बाँध योनि में रखने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

तिल की जड़, बह्मदण्डी की जड़, मुलेठी, काली मिर्च तथा पीपर इन सबको कुचकुचाकर जल के साथ काढ़ा बनाकर पीने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है और रक्त गुल्म भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

माल कंगनी के नवीन पत्र, जपा (दुपहरिया) के फूल के साथ खाने से बन्द मासिक खुल जाता है।

श्री शंकरजी बोले कि, हे रावण! मेरे कहे गये इस उड्डीशतंत्र को सभी के लिए न देवे अर्थात् पात्र समझकर ही प्रदान करे अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा। इसकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्र प्रयोग

यह ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सररस्वत्यै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

निर्गुण्डीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। विद्या प्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शङ्करोदिम्। अयुतं जपेत्।

निर्गुण्डी की जड़ पर बैठकर एकाग्र मन से जप करे। इससे नित्य विद्या प्राप्त होती है। शंकर का यह कथन निष्फल नहीं होता। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

विद्या यक्षिणी साधन

यह ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

पञ्चविंशतिसहस्त्रं जपेत्। पञ्चमेवा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्त भवति।

मन्त्र का २५ हजार जप और पाँचवें दिन जप का दशांश होम करना चाहिये इससे विद्या प्राप्त होती है।

डाकिनी साधन

मन्त्र—**ॐ नमो चढ़ौ चढ़ौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पग पाली चढ्या कुणकुण वीर हनुमन्तवीर चढ्या धरती चढ़ पगपानचढ़ी एडी चढ़ी मुरचै चढ़ी मुरचै चढ़ी पिण्डी चढ़ी पिण्डी चढ़ी गोंडां चढ़ी गोडां चढ़ी जांध चढ़ी जांघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेट चढ़ी पेटसूं धरणी चढ़ी धरणीसूं पांसली चढ़ी हियासूं छाती चढ़ी छातीसूं खबा चढ़ी खवासूं कण्ठचढ़ी कण्ठसूं मुख चढ़ी मुखसूं जिह्वा चढ़ी जिह्वासूं कान चढ़ी कानसूं आंख चढ़ी आंखसूं ललाट चढ़ी ललाटसूं सीस चढ़ी सीससूं कपाल चढ़ी कपालसूं चोटी चढ़ी हनुमान् नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसन्तावीर ये वीर चढ़े।**

ग्रहण की रात्रि को चौका लगाकर घी का दीपक जलाये और एक पैर पर खड़ा होकर मन्त्र का १०८ जप करे तो डाकिनी उपस्थित होती है। उससे भयभीत न हो और सम्मुख बात करे। ऐसा करने साधक जो काम कहेगा उसे डाकिनी करेगी।

तस्कर ग्रहण चेटक

एक अन्य प्रयोग का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः किष्किन्धापर्वतपर कदलीवन तिस्के फल तोड़नेवाला चोर तेरे कुञ्जनको देनी पकड़ दे इतनी आज्ञा फुरो। इति मन्त्रः।

जिन पर सन्देह हो उनका नाम लिखकर आटे में गोली बनाये। इसमें से प्रत्येक गोली पर २१ बार मन्त्र पढ़कर पानी में डालता जाय। जिसने चोरी किया है केवल उसी के नाम गोली तैरती रहेगी, शेष डूब जायगी। इस प्रकार चोर के नाम का पता लग जायगा।

ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूल-खट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्दधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणिकालकूटा-टोपमण्डितकण्ठदेशाय जयजय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शयदर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बन्धबन्ध हुंकारेण त्रासयत्रासयवज्रदण्डेन हनहन-निशितखड्गेन छिन्धिछिन्धि शूलाग्रेण भिन्धिभिन्धिमुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय स्वाहा। इति मन्त्रः।

गुग्गुलं मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत्। मन्त्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रपीडितम्।। ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः। मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च।।

मधु से सिक्त गुग्गुल का घी के साथ धूप दे। हे हारीत! फिर हम मन्त्र से ग्रहपीड़ित को डरावे। ग्रहाविष्ट के द्वारा उसे उत्तम बलि देना चाहिये। तब वह ग्रहवाधा से मुक्त हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

भूतोपद्रवनाशका उड्डीश मन्त्र

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याडम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रों ह्रों क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीतिललाटे बन्धय बन्धय ह्रीं हृदसे स्तम्भय स्तम्भ किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादयप्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय। अनेन मन्त्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्येकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकचातुर्थिकपञ्चवातिक-पैत्तिकश्लेष्मिक सन्निपातकेसरिडाकिनीग्रहादीन्मुंचमुंच स्वाहा। गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।**

लोहे की सलाई से २१ बार झाड़ने अथवा छप्पर की तीली से झाड़ने से उन्मादादि भूतवाधा दूर होती है।

डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र

ॐ कालाभैरो कपिली जटा रातदिन खेलै चौपटा काला भैरूं भस्म मुसाण जेहि मांगू सो पकड़ी आन। डङ्किनी सङ्किनी पटसिहारी जरख चढन्ती

गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिणी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया। इति मन्त्रः।

तीर से झाड़ने तथा अभिमन्त्रित पानी पिलाने से बालक डाकनी से छूट जाता है—यह निश्चित है।

प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुण्ड घोर धोबीकी कुण्ड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बखेरता चल पारकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोड़ता चल सारका किवाड़ तोड़ता चल कुनकुनसो बन्द करता चल भूतकू पलीतकू देवकू दानवकू दुष्टकू मुष्टक चोटकू फेटकू मेलेकू घरेलेकू उलकेकू बुककेकू हिडकेकू भिडकेकू ओपरीकू पराईकू भतनीकू पलीतनीकू डङ्किणीकू स्यारीकू भूचरीकू खेचरीकू कलुबेकू मलबेकू उनकू मथवायकं तापकू तेजराकू माथाकी मथवायकू मगरांके पीडकू पेटके पीडकू सांसकू कांसकू मरेकू मुसाणकू कुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीड़ी चौपटाका मुसाण नुह्या मुसाण इन्हींको बन्दकरि एड़ीकी एड़ी बंध करि पीड़ाकी पीड़ी बंध करि जांघकी जाड़ी बंधकरि कट्यांकी कड़ी बंधकरि पेटकी पीड़ा बन्धकरि छातीकी शूल बन्धकरि सरिकी सीस बन्धकरि चोटीकी बन्धकरि नौनाड़ी बहत्तर कोठा रूमरूममें घर पिण्ड में दखलकर देस बङ्गालाका मनसारा मसेवडा आकर मेरा करज सिद्ध न करै तो गुरू उस्तादसूं लाजै सब्दसाचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।

मद्यमांस छडछरीला अतर तेल दीपक रविवारकी रविवार भाङ्गसुलफा चढ़ाना तो सिद्ध हो पीछे मन्त्र सातवार पढ़कर झाड़ दे तो सर्वोपद्रव दूर होकर सुखी होवे इसमें सन्देह नहीं।

नजर झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोलै छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहाँ की ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उड़ी कहांको जाया अबही वसकरले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुह्मारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके सिर पड़ै जाहर पीर नजरसो रक्षा करै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा मोर-पंख से झाड़ने से आराम होता है।

डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र

ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूं हूं हैं हौं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः

डाकिनी को चोट मारने का प्रयोग—उक्त मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित कर ओखली में डालकर मूसल से कूटने से उस मूसल की चोट डाकिनी को लगेगी। यदि इस मन्त्र से अपना सर मूंडे तो डाकिनी का सिर मुंड जायगा। किसी वस्तु पर मन्त्र पढ़कर जिसके घर में उस वस्तु को फेंक दे तो डाकिनी उसके घर में जाकर बोलेगी। इस मन्त्र को पढ़कर आंखों जल का छींटा मारने से डाकिनी जल उठेगी।

डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना

ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरौ यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय परायातकै तिस पापनका भण्डारा फूटै नरसा टूटै पाप न छूटै गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार झाड़ने से डाकिनी द्वारा ग्रसित को आराम होता है।

डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्तने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसूं कौन पकड़ल्याया जती हनुमन्त पकड़ल्याया एकताल दे एक कोठा तोड्या दो ताल दे दो कोठा तोड़्या तीन ताल दे तीन कोठा तोड़्या चार ताल दे चार कोठा तोड़्या पांच ताल दे पांच कोठा तोड़्या छः कोठा तोड़्या सात ताल दे सातवों कोठो खोलदेखै तो कौन खड़ी छै? डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चलै जती हनुमन्तसेरे झाड़े सूं चलै ॐ नमो आदेश गुरूको गूरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख अथवा लोहे से झाड़ने से सभी उपद्रव दूर होते हैं।

अन्य प्रयोग

ॐ नमो आदेस गुरूको गिरहवाज नटनीका जाया चलतीवेर कबूतर खाया पीवै दारू खाय जो मांस रोगदोषकूं लावै फांस कहांकहां सूं लावैगा गुदगुद में सुव्रावैगा वोटी वोटीमेंसूं ल्यावैंगा चामचाममेंसूं ल्यावैगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसूं ल्यावैंगा मारमार बन्दीकरकर ल्यावैगा न ल्यावैगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरैगा मेरा भाई मेरा देखादिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख से झाड़ने से भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि सब भाग जाते हैं।

डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो जय नरसिंह तीनलोक चौदहभुवन में हाथ चावी और होठ चावी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड़मार भगतनको प्राण राखि आदेश आदिपुरुषको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिलाकर पूछने पर डाकिनी-शाकिनी निश्चित रूप से बोलती है।

प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच-डाकिनीकुलोन्मूलाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विसर्गविसर पचपच हनहन कम्पयकम्पय मथमथ ह्रीं ह्रीं फट्फट् ठः ठः एहिरुद्रि। रुद्र आज्ञापयति स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर सरसों मारने से सब दोष दूर होते हैं।

दूसरे के कृत्य को उलटना

एकठोसरसों सोलाराई मोरो पठवलकी रोजाई खायखाय पड़ै भार जे करै ते मरै उलट विद्या ताहीपर परै शब्द साचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से राई और नमक उतारकर आग में डालने से दूसरे द्वारा की गई विद्या उलट कर करनेवाले पर ही जा पड़ती है।

रात्रिज्वर निवारण तन्त्र

काकमाचीभवं मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम्। निहन्ति नात्र सन्देहो यथा सूर्योदयात्तमः।।

काकमाची (काली मकोय) की जड़ कान में बाँधने से रात में होनेवाला ज्वर नष्ट हो जाता है। इसमें उसी प्रकार कोई सन्देह नहीं है जैसे सूर्योदय से अन्धकार नष्ट होने में सन्देह नहीं है। अथवा भाँगरा की जड़ को डोरे सहित कान में बाँधने से रात्रिज्वर दूर होता है।

अर्श निवारण तन्त्र

ॐ काका कर्ता क्रोरीकर्ता ॐ करतासे होय यो रसना दशहूंसे प्रकटे खूनी वादी बवासीर न होय। मन्त्र जानके न बतावे द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करै तो उसके वंसमें न होय शब्द सांचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से बासी पानी को २१ बार अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर (अर्श) की पीड़ दूर होकर फिर कभी नहीं होती। जो कोई इस मन्त्र का १ लाख जप करता है उसके वंस में कभी बवासीर का रोग नहीं होता। जो इस मन्त्र को जानकर अर्शरोगी को आबदस्त के लिये जल के लिये नहीं कहता उसे १२ ब्राह्मणों की हत्या का पाप लगता है। अतः आबदस्त के लिये इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ले जाने के लिये अवश्य कहना चाहिये। यदि कहने पर भी रोगी ऐसा जल नहीं ले जाता तो उससे मन्त्री (मन्त्र जाननेवाला, दोषभागी) नहीं होता। यह मन्त्र हमारा अनेक बार का परीक्षित है।

अन्यत्। ॐ उमतीउमती चलचल स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गाँठ दे। इसी तरह गाँठ देकर दाहिने पैर के अँगूठे में बाँधने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर हो जायगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको वनमें व्याई अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त काड़ा मकड़ा माकड़ा ए तीनू भस्मन्त गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र इश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

दीवाली की रात से एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर नीम की डाली से झाड़ने से दांत का दर्द तत्काल दूर होता है। यदि इस मन्त्र से कटाई के बीजों का धूआँ डाढ़ों में दिया जाय तो उसके सब कीड़े पानी में गिर पड़ेंगे।

अन्यत्। ॐ नमो कीडरेतूं कुण्डकुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुक काला में तोहि पूंछूं कहां ते आया तोडमांस सबको क्यौं खाया अब तूं जाय भस्म हो जाय गोरखनाथके लागूं पाय शब्द सांचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा नीम की टहनी से ७ बार झाड़ने से सब कीड़े मर जाते हैं।

अन्यत्। ॐ नमो नाड़ीनाड़ी नौसे नीड़ी बहत्तरसौ कोठा चलै अगाड़ी डिगै न कोठा चलै न नाड़ी रक्षा करै जती हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सूत में ६ गाँठ लगाकर उसे छल्ले की तरह बना ले फिर उसको नाभि पर रखकर मन्त्र पढ़े और उस पर फूँक मारे तो थोड़ी देर में धरण ठिकाने आ जायगी।

अन्य प्रयोग : वन में जब सङ्खाहुली फूले तो उसको हल्दी से रँगे चावलों से शनिवार को निमन्त्रित करे। फिर रविवार को प्रातःकाल जाकर सात प्रदक्षिणा करके

हाथ जोड़े, मस्तक झुकाये, स्तुति करे और सूर्य की ओर मुख करके उसकी जड़ में दूध डाले। फिर उसे खोद लाये। उसे कमर में बाँधते ही धरण यथास्थान आ जाती है—इसमें सन्देह नहीं है।

हूक का मन्त्र

ॐ नमो सारकी छुरी धारका वान हूकन चलै रे महम्मदा ज्वानकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मन्त्र को २१ बार पढ़ता जाय और प्रत्येक बार तेज छूरी से जमीन पर रेखा खींचता जाय तो हूक बन्द हो जाती है।

प्लीह निवारण मन्त्र

ॐ नमो हुतास पर्वत जहा सुरहगा सुरहगाय के पेटमें वच्छा वच्छाके पेट में तिल्ली दबादबाकर तिल्ली कटै सरकण्डा बढ़ै फीहा कटै हरौ फुरौ। इति मन्त्रः।

छुरी से भूमि पर लकीर बनाकर उसे काटता जाय और साथ ही साथ मन्त्र भी पढ़ता जाय तो तिल्ली ठीक हो जाती है।

कखलाई निवारणार्थ मन्त्र

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता आई पकै न फूतै चलै न पीठ रक्षा करै हनुमन्त वीर, दुहाई गुरू गोरखनाथ की शब्द साचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा, सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से २१ बार झाड़कर भूमि की मिट्टी उस पर लगा दे तो तीन ही दिन में कखलाई बैठ जायगी।

रींघनवायु का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो कामरूदेसकामा७१ देवी जहां बसै इस्मायल जोगी इसमायलजोगीके पुत्री तीन एक तोड़ै एक पिछोड़ै एक रींघनवाय तोड़ै शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मङ्गल और शनिवार को मणिहारी की मुंगरी से झाड़ने से आराम होता है।

सुखप्रसव

मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ मुक्ताः पाशा विमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद्गर्भ एहि माचिरमाचिर स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से ८ बार जल को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलाने से उसे सुखपूर्वक प्रसव हो जायगा।

कुछ अन्य मन्त्र

ऐं ह्रीं भगवति भगमालिनि चल चल भ्रामय पुष्पं विकासय विकासय स्वाहा।

ॐ नमो भगवते मकरकेतवे पुष्पधन्वने प्रतिचालितसकलसुरासुरचित्ताय युवतीभगवासिसे ह्रीं गर्भं चालय चालय स्वाहा। इति मन्त्रः।

उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी एक के द्वारा दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भवती को पिलाने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

नेत्रपीडा निवारण मन्त्र

ॐ नमो श्रीरामकी धनुही लक्ष्मणका बाण आंख दर्दकरै तो लक्ष्मण कुमारकी आन। इति मन्त्रः।

नीम की टहनी से इस मन्त्र को पढ़ते हुये २१ बार झाड़ने से तीन दिन में आँख की पीड़ा दूर हो जायगी—इसमें सन्देह नहीं है। यह अनुभूत प्रयोग है।

अन्यत्। ॐ नमो झलमलजहरभरी तलाई अस्ताचल पर्वतसे आई जहां बैठा हनुमन्ता जाई फूटै न पाकै न पीड़ा जती हनुमन्त हरै पीड़ा मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर नीम की टहनी से झाड़ने से पीड़ा मिट जाती है।

कण्ठवेल का मन्त्र

ॐ नमो कण्ठवेल तूं द्रुमद्रुमाली सिरपर जकड़ी वज्रकी ताली गोरखनाथ जागता आया बढ़ती बेलको तुरत घटाया जो कुछ बची ताहि मुरझाया घटगई वेल बढ़न नहिं पावै बैठी तहां उठननहिं पावै फूटै और पीड़ा करै तो गुरू गोरखनाथकी दुहाई सत्य नाम आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

सात दिन चाकू की नोक से झाड़े और भूमि पर २१ लकीर बनाता जाय। इससे कण्ठवेल समाप्त होता है।

बिच्छू झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरूको कालो विच्छूं कांकरवालो उत्तर विच्छूं नकर टालो उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं गरुड़मोरपङ्ख हकालू शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरीवाचा। इस मन्त्र से झाड़ने से विच्छूका विख उतर जाता है।

अन्यत्। कालीविच्छू कङ्करवाला हरी पूंछ भौंराला सोनाकागाडू रूपेका पतनाला आठ गांठ नौकोर नीचे विच्छू ऊपर मोर कौन मोरा रेतो भकभकार विच्छू रेतो बावन वीर नीड निकोरके कौन वैदमानुषपर गया खातेजाते लागी वार उतर रे विच्छू तुझे ख्वाजममन्दीनचिरागतृष्टीकी आन। इति मन्त्रः।

जहाँ तक विच्छू चढ़ा हो वहाँ पकड़कर बुहारी (झाड़ू) से झाड़ दीजिये। जैसे-जैसे दर्द नीचे उतरे वैसे-वैसे आप भी नीचे पकड़ते जाँय। जब दंश स्थान पर दर्द उतर आवे तब झाड़ना बन्द कर दे और दंश स्थान पर तेलिया मोहरा पानी में घिसकर लगा दे। इससे दंश स्थान की पीड़ा भी समाप्त हो जायगी।

सर्प झाड़ने का मन्त्र

खं खः। इति द्व्यक्षरो मन्त्रः।

जब कोई सर्प काटने का समाचार दे तब पानी को मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके समाचार देनेवाले व्यक्ति को देकर कहे कि 'जाकर इस पानी को सर्पदष्ट को पिला दो।' इस पानी को पीने से सर्पविष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ नमो भगवति वज्रमये हनहन ॐ भक्ष भक्ष ॐ खादय खादय ॐ अरिरक्तं पिब कपालेन रक्ताक्षि रक्तपटे भस्माङ्गि भस्मलिप्तशरीरे वज्रायुधे वज्रकराञ्चिते पूर्वां दिशं बन्ध बन्ध ॐ दक्षिणां दिशं बन्धबन्ध ॐ पश्चिमो दिशं बन्ध-बन्ध ॐ उत्तरा दिशं बन्धबन्ध ॐनागान् बन्धबन्धसॐ नागपत्नीं बन्धबन्ध ॐ असुरान् बन्धबन्ध ॐ यक्षराक्षसपिशाचान् बन्धबन्ध ॐ प्रेतभूतगन्धार्वादयो ये केचिदुपद्रवास्तेभ्यो रक्षरक्ष ॐ ऊर्ध्वं रक्षरक्ष ॐ अधो रक्षरक्ष ॐ क्षुरिके बन्धबन्ध ॐ ज्वल महाबले घटघट ॐ मोदिमोदि सटावलि वज्राङ्गि वज्रप्रकारे हुं फट् ह्रीं ह्रीं श्रीं फूं फें फः सर्वग्रहेभ्यः सर्वव्याधिभ्यः सर्वदुष्टोपद्रवेभ्यो ह्रीं अशेषेभ्यो रक्षरक्ष विषं नाशय अमुकस्य सर्वाङ्गानि रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।

जल को मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके पिलाने से विष उतर जाता है।

अन्यत्। ॐ हुं सूं ॐ नालकान्तिदंष्ट्रिणि भीमलोचने उग्ररूपे उग्रतारिणि छिलि किलि रक्त लोचने किलि किलि घोरनिःस्वने कुलु कुलु ॐ तडिज्जिह्वे निर्मांसे जटामुण्डे कट कट हन महोज्ज्वले चिलिचिलि मुण्डमालाधारिणि। स्फोटय मारय मारय स्थावरं विषं जङ्गमं विषं नाशय नाशय ॐ महारौद्रि पाषाणमयि विषनाशिनी वनवासिनी पर्वतविचारिणि कह कह ॐ हस नम नम दह दह क्रुध क्रुध ॐ नीलजीमूतवर्णे विस्फुर ॐ घण्टानादिनि ललज्जिह्वे महाकाये क्षुं हुं आकर्ष आकर्ष विषं धून धून हेहर यं ज्वालामुखि वज्रिणि महकाये अमुकस्य स्थावरजङ्गमविषं छिन्दि छिन्दि किटि किटि सर्वविषनिवानिणि हुं फट्। इति मन्त्रः।

पहाड़ के एक नीलवर्ण पत्थर के टुकड़े को अभिमन्त्रित करके दष्ट स्थान पर चिपका दे और मन्त्र पढ़ता जाय। जब तक विष रहेगा तब तक पत्थर दष्ट स्थान पर

चिपका रहेगा और विष के समाप्त होने पर स्वयं ही पत्थर अलग हो जायगा—इसमें सन्देह नहीं है।

सर्पकीलन का मन्त्र

ॐ नमो सर्पा रे तूं थूलं मथूला मुख तेरा बना कमलका फूला सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरी दादी भुवा जिनने तोकूं गोद खिलाया सर्पा रे सर्पा बान्धूं तेरा रतन कटोरा जामे तोकूं दूध पिलाया सर्पा रे सर्पा बीज कीलनी बीजपान मेरा कीला करै जो धाव तेरी डाढ भस्म हो जाय गुरु गोरख धी जाय जलाय ॐ नमो आदेश गुरूको मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्ष दिन पर्यन्त प्रतिदिन सवा पहर तक असंख्य बार जपे तो यह सिद्ध हो जाता है फिर इस सिद्ध मन्त्र से आरने उपले की भस्म को सर्प पर डालने से उसकी डाढ़ बन्द हो जायगी। फिर साधक उस सर्प को खिलौने की भाँति उठा सकता है।

सर्प कीलने का मन्त्र

बजरी बजरी बजरकिवाड़ बजरी कीलूं आसपास मरै सांप होय खाक मेरा कील्या पथर कीलै पथर फूटै न मेरा कीला छूटै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से साँप को एक कङ्कण मारने से उसका उत्कीलन हो जायगा।

सर्पों को भगाने का मन्त्र

ॐ प्लः सर्वकुलाय स्वाहा अशेषकुलसर्पकुलाय स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार मिट्टी को अभिमन्त्रित करके घर में डाल दे तो सर्प भाग जाँयेगे।

पागल कुत्ते का मन्त्र

ॐ कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसै इसमायलजोगी इसमायलजोगी का झामरा कुत्ता सोनाकी डाढ रूपा का कूंड़ा बन्दर नाचै रींछ बजावै सीता बैठी औषध वांटै कूवरका विष भाजै शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से झाड़ देने से पागल कुत्ते का विष उतर जाता है और किसी तरह की पीड़ा नहीं होती।

आधासीसी का मन्त्र

ॐ नमो वनमें व्याई वानरी, उछल वृक्षपै जाय। कूदकूद शाखानपै,

कच्चे वनफल खाय। आधा तोड़ै आधा फोड़ै, आधा देय गिराय। हंकारत हनुमानजी, आधा सीसी जाय। इति मन्त्रः।

बननें ब्याई अञ्जनी, कच्चे वनफल खाय। हांकमारी हनुमन्तने, इस पिण्डे से आधासीसी उतरजाय। इति मन्त्रः।

इन मन्त्रों से विभूति से झाड़ने से आधा सीसी दूर होकर पीड़ा समाप्त हो जाती है।

निम्नलिखित ६ कोष्ठ के यन्त्र को लिखकर सिर में बाँधने से आधा सीसी दूर होती है। निम्नलिखित चार कोष्ठ के यन्त्र को स्याही से कागज पर लिखकर माथे में बाँधने से निश्चित रूप आधा सीसी नष्ट हो जाती है। यह यन्त्र अत्यन्त गुप्त है।

कमल झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो वीरवैताल असराल नारसिंहदेव खादी तुषादी पीलियाकूं भिदानी कारै झारै पीलिया रहैन नकनिशान जो कहीं रहे जाय तो हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरुकी शक्ति फुरो मन्त्रं ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

काँसे की कटोरी में तेल भरकर रोगा के सिर पर रखकर मंत्र पढ़े और कुशा से उस तेल को चलाता जाय। जब तेल पीला हो जाय तब उतार ले। इससे पीलिया (कवल) रोग तीन दिन में अच्छा हो जायगा।

दर्द और थनपल को झाड़ना

ॐ वनमें जाई वानरी, जिनजाया हनुमन्त्र। सज्ज खधा ढाकिया, हो गया भस्मीभूत। इति मन्त्रः।

स्त्री का बांया स्तन दुखे तो अपने दाहिन, और यदि उसका दाहिना स्तन दुखे तो अपने बाये स्तन को कण्डे की राख से ७ बार झाड़ने से स्त्री को आराम हो जायगा।

जमोगा का मन्त्र

सुनरे जमोगे मतिकर अभिमान तेरा नहीं दुनिया में ठिकान, बालक दिया है श्रीभगवान बचोगे नहीं तूं जिमी आसमान दुहाई औघड़की छू खंदके मारता हूं वान। इति मन्त्रः।

रामसर की तर-कमान बनावे और मन्त्र पढ़कर तीर बालक को मारे तो जमुवे की पीड़ा से वह छूट जायगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

दबा पसली झाड़ने का मन्त्र

सत्य नाम आदेस गुरूका उंखंखारी खंखारा कहां गया सवालाख पर्वतों गया सवालाख पर्वतों जाय कहा करैगा सवाभार कोईला करैगा सवाभार

कोईलाकर कहाकरैगा हनुमन्त वीर नव चन्द्रहासखड्ग गढ़ैगा नव चन्द्रहास खड्ग घड कहाकरैगा जानवा डौरू पांसलीवाय काटकूट खारीसमुद्र नाखैगा जगद्गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

तिल के तेल और सिन्दूर से झाड़ने से आराम होगा।

सर्व रोग निवारक मंत्र

''पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत कटिक शिला कटिक शिला पर अंजनी जिन पाया हनुमान नेहला टेहला काँख की कखाई पीछे की आदटी कान की कनफेट रांग की बद कण्ठ की कण्ठमाल घुटने का डमरु डाढ़ की डढ़शूल पेट की ताप तिल्ली फिया इतने को दूर करे भस्मन्त नातर तुझे माता अंजनी की दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरू का।''

विधि—शनिवार को व्रत रख कर नियमपूर्वक रहकर एक माला उपरोक्त मंत्र की जपे। इसी प्रकार सात शनिवार तक करता रहे। ऐसा करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

कंखाई अदीठ, कनफेर, बद (एक प्रकार का चर्म रोग), कण्ठमाला, दाढ़ का दर्द इन्हें राख से झाड़ना चाहिए। डमरु को, ताप तिल्ली को छुरी से झाड़ें उपर्युक्त सभी रोगों के लिए भभूति बना कर देना चाहिए।

बवासीर नाशक मंत्र

''ओम नमो नमो सिद्ध नमो चौरासी उदर जड़ी रक्त सड़ी चूवे मत खड़ी पड़ी तोहे देखे लोना चमारिन धूप गुगल की दी अग्यारी जो रहे बवासीर तो हजार हराम गुरू गोरख की शक्ति आन गौरी माई की।''

विधि—दीपावली, होली अथवा ग्रहण काल में यह मंत्र जप कर सिद्ध किया जाता है। सिद्ध मंत्र से अभिमंत्रित काली मिट्टी की पट्टी पेडू पर बाँधें तथा अभिमंत्रित लाल धागा कमर में बाँधें। जिस व्यक्ति को यह रोग है वह नित्य शौच के जल को अभिमंत्रित कर प्रयोग करे तो लाभ होता है।

पीलिया झाड़ने का मंत्र

''ओम नमो वीखेताल असराल नारसिंह देव तुषादि पीलिया कूं भिदाती कौरे झौरे पीलिया रहे न नेक निशान जो कहीं रह जाए तो हनुमान की आन मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा।''

विधि—श्री हनुमान जी की मूर्ति के आगे नित्य एक हजार मंत्रों का जप कर इक्कीस दिनों तक इक्कीस हजार बार जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है।

साधना पूर्ण होने के बाद पीलिया ग्रस्त रोगी को सामने बैठाकर काँसे की कटोरी में तेल डाल कर उसके सिर के ऊपर रखें और तेल को कुश से हिलाते हुए इक्कीस बार मंत्र बोलें। ऐसा करने पर यदि कटोरी का तेल पीला हो जाए तो समझना चाहिए कि मंत्र सिद्ध हो गया है। इसी विधि को तीन दिन करते रहने से पीलिया का रोग मुक्त हो जाता है।

रोगी से हनुमानजी पर प्रसाद और गाय को घास, पक्षियों को अनाज आदि पुण्यप्रद कर्म करा देना चाहिए।

कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र

''ओम नमो कण्ठवेल महावेल तुम दरद दियो अब हिलो चलो तुरतहि जाओ सात लोक सात समुन्दर पार जा के डूबो हमें बचाओ न जाओ तो बहत्तर हजार चमार की नाद में गिरो दुहाई बाबा शंकर की गौरा पार्वती की।''

विधि—किसी भी नवरात्रों में प्रतिदिन एक माला जप कर उपरोक्त मंत्र को सिद्ध करलें। फिर आवश्यकता पड़ने पर रोगी को मोरपंख से झाड़ें। सोमवार से रविवार तक प्रतिदिन सात बार झाड़ देने से कण्ठवेल सूख जाती है और रोगी को पूर्ण लाभ मिलता है।

बालज्वर नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश भगवती बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।

प्रयोग—शिशु यंत्र, (जो कि ताबीज की तरह होता है) पर केशर की तिलक लगाकर नित्य एक हजार मंत्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यंत्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यंत्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाय तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है, और वह स्वस्थ हो जाता है। इस **'चमत्कारी ताबीज'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

नक्सीर स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो गुरु की आज्ञा सार-सार महासागरे बांधूं सातवार फिर बांधूं तीन बार लोहे की सार बांधे हनुमन्त वीर पाके न फूते तुरत सेखे।

उपर्युक्त मंत्र की सिद्ध करके आवश्यकता पड़ने पर भस्म से ७ बार रोगी को झाड़ना चाहिए।

मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा

मसान रोग सिर्फ बच्चों में ही पाया जाता है। यह एक अत्यंत खतरनाक बीमारी है। इसके प्रकोप से बच्चा दिन-ब-दिन बिना वजह कमजोर होता चला जाता है।

'सफेद मसान गुरू गोरख की आन यमदण्ड मसान काल भैरों की आन सुकिया मसान लोना चमारी की आन फुलिया मसान गोरे भैरों की आन हल्दिया मसान ककोड़ा भैरों की आन पीलिया मसान दिल्ली की योगिनी की आन कमोदिया मसान रामचन्द्र की आन कीकड़िया मसान कालिका की आन सिलसिलिया मसान वीर मुहम्मद पीर की आन।'

यदि किसी बालक को मसान रोग (अर्थात सूखा रोग) का प्रकोप हो गया हो तो इस मंत्र से दिया गया झाड़ा अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध होता है।

कलिया मसान नामक एक दुष्ट प्रेतात्मा के कोप भाजन का शिकार हुए अबोध ही मसान रोग से ग्रसित होते हैं। अतएव भूत-प्रेतादि उतारने के झाड़ों की तरह ही यह झाड़ा दिया जाता है। इस झाड़े को मोरपंख से सुबहो-शाम दोनों ही समय पर दिया जाता है।

एक बार में पूरा मंत्र पढ़कर फिर मोरपंखी से झाड़ा देवें। इस प्रकार एक बार में सात झाड़ें देवें। लगातार दोनों समय झाड़ा देने से वह रोगी बालक सात दिनों में पूर्णतः स्वस्थ हो जाएगा।

आधाशीशी नाशक मंत्र

'बन में जाई बंदरी जो आधा फल खाई खड़े मुहम्मद हांकवें आधा सीसी जाई।'

किसी भी ग्रहण के अवसर पर उक्त मंत्र को दस हजार बार जाप करके सिद्ध कर लें।

अब आधासीसी (माइग्रेन) के सिर पर २१ बार इस मंत्र को पढ़ कर फूंक मार देने से आधासीसी का रोग दूर हो जाएगा।

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

'ओम अगाली गगाली अताल पताल गर्द मर्द अदार कार फट उत्कन हूल।'

नेत्र बाधाओं युक्त रोगी को रविवार के दिन उक्त मंत्र का जाप करते हुए नीम के पत्तों के झोहरे (डाल) से इक्कीस बार झाड़ा देवें तो नेत्र बाधा से मुक्ति मिल जाएगी।

अन्न पचाने का मंत्र

'अन्न हाथ वज्र हाथ, भस्म करे सब पेट का भात, दुहाई हजरत शाह कुतुब आलम की।'

पाचन शक्ति नियमित करने के लिए यह एक स्वयंसिद्ध तथा प्रभावशाली मंत्र है। खाना खाने के पश्चात् अपने हाथ को इस मंत्र से ३१ बार अभिमंत्रित करके

पेट पर फेरें तो भोजन तुरन्त ही पच जाएगा। इस मंत्र के नियमित प्रयोग से पाचन संस्थान सुदृढ़ हो जाता है।

आँख की फूली काटने हेतु

'उत्तर कूल काछ सूत योगी का बाछ इस्माइल योगी की बेटी एक माशे चूल्हा एक काटे फूला काछ।'

यह एक स्वयंसिद्ध मंत्र है। फिर भी किसी शुभ नक्षत्र में मात्र एक माला जप करने से भी यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

किसी को आंख की फूली हो गई हो तो इस मंत्र को पढ़कर लोहे की कील से इकत्तीस बार जमीन में ठोकें तो आँख की फूली स्वतः ही कट जाएगी।

शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र

'लशकर फराउन हरदी नील गर्क शुद्ध जहाँ।'

पीली मिट्टी व दही से इस मंत्र को लिखकर सिद्ध कर लें। फिर उस पीली मिट्टी के वजन के समान गुड़ लेकर बच्चों में बाँट दें तो समस्त प्रकार की शारीरिक पीड़ा का नाश हो जाता है।

बवासीर नाशक मंत्र

'खुरीसानी की दोवासाई खूनी वादी तत्वा लजाय।'

बवासीर के रोगी शौच के पश्चात् उक्त मंत्र से अभिमंत्रित जल से आबदस्त (गुदा प्रक्षालन) लेवें तो बवासीर रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है।

'ईसा ईसा ईसा काँच कपूर के सीसा, यहव अधर जाने नहीं कोय, खूनी बादी एक न होय, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।'

उक्त मंत्र स्वयंसिद्ध मंत्र है। बवासीर रोग से मुक्ति पाने का यह सर्वाधिक सरलतम प्रयोग है।

शौच के वक्त गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) के लिए उपयोग में आने वाले जल को इस मंत्र से ५ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन (आबदस्त) करें तो नियमित प्रयोग से कुछ ही दिनों में बवासीर दूर हो जाएगी।

सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र

सूखा रोग का ही दूसरा नाम मसान रोग है, क्योंकि कालिया मसान नामक प्रेतात्मा की कुदृष्टि का शिकार होने पर ही बालक इसके शिकार बनते हैं। जब मसान हर समय बालक के साथ रहने लगता है, तब तो गंडे-तावीज बांधने के साथ ही यह झाड़ा देना भी अनिवार्य हो जाता है।

सपेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान, काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की

आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। गीलिया मसान, दिल्ली की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। कीकड़िया मसान, योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मदा पीर की आन।

मसान रोग का यह झाड़ा सामान्य रूप से नजर उतारने के झाड़ों के विपरीत भूत-प्रेत उतारने के झाड़ों के समान दिया जाता है। मोरपंख के झाड़न से सुबह-शाम दोनों समय देना अधिक उचित है। यह झाड़ा देते समय आप पूरा मन्त्र पढ़ने के बाद एक बार झाड़ें और इस प्रकार सात झाड़े एक समय में दें।

सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज

सामग्री—शिशु स्वास्थ्य यन्त्र, घी का दीपक व अगरबत्ती।

माला—मूंगे की माला।

समय—दिन या रात का कोई भी समय।

आसन—सफेद रंग का सूती आसन

दिशा—पश्चिम दिशा।

जप—संख्या-तीन हजार।

अवधि—तीन दिन।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेश भगवती भवानी बालकष्ट, बाल रोग, बाल पीड़ा दूर कर सर्व विधि सुख दे, जो मेरा आदेश नहीं माने तो राजा राम की दुहाई।**

मन्त्र सिद्ध किए हुए शिशु यन्त्र को सामने रखकर और उस पर केशर का तिलक लगाकर नित्य एक हजार मन्त्र जप करें। इस प्रकार तीन दिन करने पर वह यन्त्र विशेष प्रभावशाली हो जाता है, इसके बाद वह यन्त्र जिस बालक के गले में काले धागे में पहनाया जाए तो बालक का बुखार या अन्य किसी भी प्रकार का रोग दूर हो जाता है और वह स्वस्थ हो जाता है।

अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र

इस यन्त्र को केसर से भोजपत्र पर रविवार के दिन लिखकर, चांदी या तांबे के तावीज में करके, लाल डोरे की सहायता से दाहिने हाथ में बांधने से अंडकोष वृद्धि रुक जाती है।

यह यन्त्र अनार की कलम से लिखा जाता है तथा गले में भी बांधा जा सकता है।

ॐ नमो नलाई-ज्यां बैठ्या हनुमत आई पके न फुटे, चले बाल जति रक्षा करे। गुरु रखवाला, शब्द साचा पिंड काचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके

एक सादा पान बनवाकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमन्त्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिक धर्म ठीक और निर्धारित समय पर हो जाएगा।

'ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का। तोड़ूं गांठ औंगा ठाली। तोड़ दूं लाय। तोड़ दूं मरित। परित देकर पाय। यह देख हनुमन्त दौड़कर आये। अमुक की देह शांति पाये। रोग कूं वीर भगाये। रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई। फुरो हुकुम खुदाई।'

थोड़ा-सा अदरक लेकर इस मन्त्र से सात बार फूंककर मासिक धर्ममें होने वाली पीड़ाओं से ग्रसित स्त्री को खिलाने से मासिक-पीड़ा शांत हो जाती है।

'ॐ नमो आदेश मनसा माता का। बड़ी-बड़ी अदरख। पतली पतली रेश। बड़े विष के जल फांसी दे। शेष गुरु का वचन न जाए खाली। पिया पंच मुण्ड के बाभ पद ठेली। विषहरी राई की दुहाई।'

मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र

प्रथम मन्त्र—**ओं परब्रह्म परमात्मने अमुकी, गर्भ दीर्घजीवी सुतें।**

मृतवत्सा दोष निवारण के लिए ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को १००८ मन्त्र का विधिपूर्वक जप करें तो सिद्धि होती है।

द्वितीय मन्त्र—**ॐ अदिते दिते दिव्यां गति मासूति सुरि रस्मच गर्भा ठहः ठहः ठहः।**

साधक को चाहिए कि वह स्नानादि से निवृत्त होकर उपर्युक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए काचनी के पेड़ के नीचे जाए। सोमवार प्रदोष के दिन जब रात्रि में एक प्रहर रह जाए तो जाने का वही समय उपयुक्त रहेगा। धूप-दीप और नैवेद्य आदि से वृक्ष का पूजन करके पकी हुई फली तोड़ लाएं। गाय के दूध में इसके बीजों से मिश्रित खीर बनावें। गर्भिणी स्त्री को स्नानादि से पवित्र कराके सफेद मिट्टी से लीपे हुए चौके अथवा किसी परम पवित्र स्थान पर बिठाएं और उसे आदेश दें कि अदिति माता का ध्यान करते हुए खीर का सेवन करे। खीर के केवल उसे ७ ग्रास ही खाने चाहिए। स्त्री को इन नियमों का भी पालन करना चाहिए कि जब तक शिशु उत्पन्न न हो जाए तब तक किसी भी दूसरी स्त्री की छाय उस पर नहीं पड़नी चाहिए। उसे कुशा के आसन पर सोना चाहिए और दिन में एक बार ही भोजन करना चाहिए। इस प्रक्रिया से उत्पन्न होने वाले शिशु की सुरक्षा हो सकती है।

मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा

मृतवत्सा दोष से ग्रसित स्त्री का झाड़ा करने के लिए मछली पकड़ने वाला कांटा लाएं और उसे इस मन्त्र से सात बार फूंकें। इसी मन्त्र को जपते हुए रोगिणी का झाड़ा करें और इस कांटे को तावीज में भरकर कमर में पहनवा दें। वह निश्चित रूप से जीवित संतान उत्पन्न करेगी।

छोटी मोटी खप्पर, तूं धरती कितना गुण। जियके बल काट कू जान विज्ञान। दाहिनी ओर हनुमान रहे, बायीं ओर चील। चहुं ओर रक्षा करे वीर बानर नील। नील वानर की भक्ति लखि न जाय। जेहि कृपा मृतवत्सा दोष न आय। आदेश कामरू कामाख्या माई का। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।

गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा

'ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी। जाल बांधूं। जलबाई बांधूं। बांध दूं जल के तीर। पांचों दूत कलुवा बांधूं। बांधू हनुमन्त बीर। सहदेव की आन व अर्जुन का बाण। रावण रण को थाम ले नहीं तो हनुमन्त की आन। शब्द सांचा। पिंड कांचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।'

इस मन्त्र का जप करते हुए स्त्री का झाड़ा करें। लाल धागा लेकर सिर से पांव तक नापें और इस मन्त्र को उच्चारित करते हुए उसके ऊपर २१ गांठें लगाएं और स्त्री को धारण करवा दें।

ज्वरों के लिए झाड़ा

सभी प्रकार के बुखारों को उतारने में यह शाबर मन्त्र समान रूप से समर्थ है। रोगी को उत्तर की तरफ मुंह करके बैठा दें और स्वयं उसके सम्मुख बैठकर सात बार यह मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ा दें। लगातार तीन दिन सुबह अथवा शाम को यह झाड़ा दें, परन्तु तीनों दिन स्थान और समय एक ही रखें।

दोई भाई ज्वर सुरा महावीर नाम। दिन रात खटि गैर महावीर के नाम।। फर छुद से छतीस रूप महूर्तमों धराय। नाराज नामूर के घर दुआर फिराए।। ज्वाला ज्वरमाल ज्वर काला ज्वर झुमकि दार। ज्वर, उमा ज्वर, भूता ज्वर, झुमकि घोड़ा ज्वर।। भूमा, तिजारी ओ चौथाई। सवंग को भंग पोटन शिव ने बुझाई।। यह ज्वर-ज्वर सुरा ते कौन और तकाव। शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाव।। यदि आंगन में तु भूलि भटिकाय। तो महादेव के लागा तू खाय।। आदेश कामरू कामाख्या माई। आदेश हाड़ी दासी चण्डा की दोहाई।।

दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का।। बन में ब्याई अंजनी। जिन जायाहनुमन्त।। कीड़ा मकुड़ा माकड़ा। ये तीनों भस्मन्त।। गुरु की शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण के समय ११ माला जप हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय नीम की डाली लेकर दर्द वाले स्थान पर छुआते हुए मंत्र जपते हुए ही २१ बार झाड़ा करें तो उस व्यक्ति का दाँत/दाढ़ का दर्द कुछ ही क्षणों में दूर हो जायेगा तथा वह व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा, फिर रोगी व्यक्ति से पीला प्रसाद बटवा दें।

वायु नाशक हनुमान् मन्त्र

पर्वत पर बाइल काग। कै अण्डे, कै बच्चे? सात अण्डा, सात बहिन।। कौन-कौन बहिन? दाँत-चमोकनी मुँह-चमोकनी। आँख-चमोकनी। पैर-चमोकनी।। हाथ-चमोकनी।। बाय-बाय री हरहुल्ला। आवेगा अनुमान बाबा।। मारेगा लोहे का सोटा।। भाग-भाग रे बहन चोदबाय, सात समन्दर पार।। हुई जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री महावीर बजरंगी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर आवश्यकता के समय वायु-रोग से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से करें तो पीड़ित व्यक्ति वायु-रोग से निदान पाएगा।

समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र

कौरव-पाण्डव कहाँ गए? बन में गए। बन में क्या करेंगे? बन कटवाएँगे बन कटा के क्या करेंगे? सहस्त्र मन कोयला करेंगे? सहस्त्र मन कोयले का क्या करेंगे? छप्पन-छुरी बनाएँगे। छप्पन-छुरी का क्या करेंगे? बाय को, चीस को, भड़क को, फुँसी को, फोड़े को, टोक को, नजर को, सिर-दर्द को काट-पीट के खारे समुन्दर में बहाएँगे। खारे समुन्दर में बहा के क्या करेंगे? बहोड़ (बहुर) के उल्टे न आवे ईश्वरो वाचा, पिण्ड कांचा मेरे गुरु का शब्द सांचा देखूँ बाबा हनुमान। तेरे शब्द का तमाशा

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री राम-दूत हनुमान विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए १ माला का जप प्रतिदिन करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय मंत्र में कहे समस्त रोग-दोष का झाड़ा करने से नाश होता है।

बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो तडम। उतड भड तेल करे।। दीजे बाती तैल बरै। गलत-सलत।। तू बाई रोग। निनाई रहै:। तो यति हनुमन्त। की दुहाई फिरै।। शब्द सांचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मन्त्र को ग्रहण-काल, होली, दीपावली में श्री बजरंगी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र से बाय वाले रोगी का झाड़ा "भस्म" से करें तो रोगी बाय-रोग से निदान पाये।

कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

आसमीन नगोर। वन्ही कर्म न जायतं।। दोहाई महावीर की। जो रहे कान की पीर।। अंजनी-पुत्र कुमार। वायु-पुत्र महाबल को मार।। ब्रह्मचारी हनुमन्तई। नमो-नमो।। दुहाई महावीर की। जो पीर मुण्ड की।।

विधि—इस मंत्र की साधन दीपावली की रात्रि में श्री रामदूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों को ध्यान में रख कर पाँच माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब कोई कान दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो साँप के बिल की मिट्टी लेकर इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करे तो रोगी दर्द में आराम पाएगा।

अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का। जैसे के लेहु रामचन्द्र।। कबूत ओसई करहु राध। बिनि कबूत पवनपूत।। हनुमन्त धाउ हर-हर। रावन कूट मिरावन श्रवइ।। अण्ड खेतहि श्रवइ अण्ड। अण्ड विहण्ड खेतहि श्रवइ।। वाजं गर्भ हिश्रवइ स्त्री। षीलहि श्रवइ शाप हर-हर।। जंबीर हर जंबीर हर-हर। शब्द सांचा।। पिण्ड काँचा। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान ११ दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रातेदिन २ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर इस मंत्र को जपते हुए अण्डकोश को हलके हाथ से मले तथा २१ बार जल को शक्तिकृत कर रोगी को पिलाए तो अण्डकोश वृद्धि शान्त हो जाती है, तथा मिट्टी के एक ढेले को २१ बार अभिमंत्रित कर साँप के बिल पर रखने से साँप निकल जाता है।

४. यदि बवासीर के मस्से फूले हुए हों और वे विशेष कष्ट दे रहे हों, तो गेंडे की जननेन्द्रिय को सुखाकर उसका कंकण बनवा लें और उसे रोगी के दाहिने

हाथ की कलाई में धारण करवायें, तो सभी मस्से सूख जायेंगे तथा बवासीर की पीड़ा भी शान्त हो जायेगी।

हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु जी का।। काली चिड़ी चिग-चिग करे। धोला आवे वाते आवे हरे।। यती हनुमान हाँक मारे।। मथवाई और वाई जाये भगाई। हवा हरे।। गुरु को शक्ति। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को होली या दीपावली की रात्रि को किसी कुएँ के ऊपर श्री हनुमान् जी की प्रतिमा स्थापित कर हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए, इस मन्त्र का अनगिनत जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय पृथ्वी पर मंत्र का जाप करते हुए २१ रेखाएं सीधी खींचे फिर रोगी को उन रेखाओं के पास बिठा कर इन रेखाओं के ऊपर रोगी के दोनों हाथ रखवा दें पुनः इन मंत्र से रोगी का २१ बार झाड़ा मोर पंख से या लोहे की वस्तु से करें, झाड़ा करते समय रोगी अचानक या अंजाने में आगे की ओर खिसक पड़ेगा तो उसकी मथवाय, वाय, हवादि रोग उसी क्षण नष्ट हो जाएँगी और वही सुखी होगा।

दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ हाथ वेगे चलाई। आदि-नाथ, पवन-पूत।। हनुमन्त कर मोरकत। मेरु चाल, मन्दिर चाल।। नव-ग्रह चाल, दोष-चाल। दिनाई चाल, डोरी चाल। इन्द्रहि चाल, चाल-चाल। हनुमन्त बिना, सह-काल।। उठि विषि तरु-वर चाल। हम हनुमन्ते मुगरे।। लिंगडा परोरे वर्ध छले। तरुयरी घानपरि हि।। यष अष्टोत्तर-शत व्याधि। लावरे विशालाव अहरो।। विष आह।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल या दीपावली में श्री राम दूत हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए ११ माला जप व दशांश हवन करने से यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर ताँबे के कलश में शुद्ध जल भर कर २१ बार शक्ति-कृत कर दाद-वाले व्यक्ति को पिलायें, यह क्रिया नित्य करें जब तक दाद न दूर हो जाय।

आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ कारी चिरई चौकही। राव तीरे बासा।। या किसी हाँक दे हनुमन्त वीर, आधा-शीश विनाशा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में पवन-पुत्र हनुमान् विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा। फिर

आधा-शीशी दर्द से पीड़ित व्यक्ति का उपलों की राख से झाड़ा करने से आधा शीशी का दर्द दूर होता है।

कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

वनरा गाँठि वानरी। तो डाँटे हनुमान, कंठ।। बिलारी, बाधी, थनैली। कर्ण मूल, सम जाइ।। श्री रामचन्द्र की बानी। पानी पथ होइ जाइ।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक अंजनी-पुत्र श्री बीर बजरंगी के समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा। फिर जब कान की पीड़ा से व्यक्ति आये तो मोर पंख की भस्म से २१ बार झाड़ा करें, तो रोगी व्यक्ति की पीड़ा दूर हो, वह सुखी होगा।

नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरू जी का।। सार-सार। महा-सागरे बाँधूँ।। सात बार फिर बाँधूँ। तीन बार लोहे की।। तार बाँधूँ। सार बाँधेहनुमन्त वीर।। पाके न फूटे। तुरन्त सेखे।। आदेश। आदेश। आदेश।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में ११ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, साधन में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करें एवं जब किसी व्यक्ति के नाक से रक्त गिर रहा हो तो राख लेकर इस मन्त्र को जपते हुए २१ बार नाक का झाड़ा करें तत्काल ही नकसीर बन्द हो जाएगी और पीड़ित व्यक्ति सुख का अनुभव करेगा।

समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत। पर्वत ऊपर स्फटिक शिला।। स्फटिक शिला पर अंजनी। जिन जाया हनुमन्त।। नेहला-टेहलाकाँख की कखराई।। पीठे की आदटी। कान की कनफेट।। राल की बद। कण्ठ की कण्ठमाला।। घुटने का डहरु। दाढ़ की दढ़शूल।। पेट की ताप, तिल्ली किया। इतने को दूर करे।। भस्मंत न करे तो तुझे माता अंजनी का।। दूध पिया हराम। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु जी का।।

विधि—जो साधक ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो वह इस मंत्र का जप करते हुए रोगी का झाड़ा करे तो रोगी तत्काल रोग से निदान पाएगा।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

बन में ब्याई अंजनी। कच्चे बन फल खाय।। हाँक मारी हनुमन्त ने। इस पिण्ड से आधा।। सीसी उतर जाय।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण काल में १० माला का जप श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रखते हुए करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर जब

आपके पास कोई आधा-सीसी दर्द से पीड़ित व्यक्ति आये तो राख लेकर २१ बार इस मंत्र का उच्चारण करते हुए झाड़ा करें तो वह शीघ्र ही आधा सीसी दर्द से निजात पायेगा।

डिब्बा (पहली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र

ॐ सत्य नामआदेश गुरु जी का।। डंक खारी। खंखरा कहाँ गया? सवा लाख पर्वतो गया। सवा लाख पर्वतो जाय क्या करेगा? सवा भार को कोयला करेगा।। सवा भार कोयला कर क्या करेगा? हनुमन्त वीर नव चन्द्रहास खड्ग घड़ेगा।। नव चन्द्रहास खड्ग घड़ क्या करेगा? जात व ढोख पसली बाय काल कूट खारो समुद्र नखेगा। जगद्गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में ११ माला जप श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान में रखकर करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय तिल के तेल में असली सिंदूर मिला कर डिब्बा वाले बालक का झाड़ा करने से वह बालक शीघ्र ही इस रोग से निदान पाता है।

नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो। झल-मल।। जहर भरी तलाई।। अस्ताचल पर्वत ते आई।। तहाँ बैठा हनुमन्त जाई।। फूटे न पाकै करै न पीड़ा यती हनुमन्त राखै हीड़ा।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरो मन्त्र। इश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में सात माला का जप, हनुमान् जी के विषयक सभी नियम मानते हुए करने से यह मंत्र सिद्ध होता है, फिर आवश्यकता के समय में निम्बू की टहनी लेकर २१ बार रोगी के नेत्रों का झाड़ा मंत्र जपते हुए करने से वह नेत्र पीड़ा से मुक्ति पाता है।

बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ काका कता। क्रोरी कर्ता।। ॐ करता से होय। यरसना दश हूँस प्रकटे।। खूँनी-बादी बवासीर न होय।। मन्त्र जान के न बताए, द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय। लाख जप करे तो उसके वंश में न होय।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान सात दिन का है, साधक श्री हनुमान् जी के नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रात्रि का रखा हुआ पानी लेकर, इस मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित करके गुदा प्रक्षालन करें तो खूनी और बादी बवासीर दोनों ठीक हो जाती है।

बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र

वात् वात्। अकाल वात्।। अन्ध वात्। कुन-कुने वात्। कुट-कुटे वात्। आभार प्रति चक्रे शीघ्र फाट।। तौमार डांके। पवन-पुत्र हनुमान कार आज्ञाय।। राजा श्रीरामेर आज्ञाय।।

विधि—इस मंत्र को होली की रात्रि या मंगल-पुष्य नक्षत्र में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए सात माला जप करें, तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता होने के समय में २१ बार झाड़ा करने तथा शुद्ध पीली सरसों का तेल को लेकर २१ बार अभिमंत्रित कर दर्द वाले स्थान पर मर्दन करने से रोगी शीघ्र रोग से मुक्ति पायेगा, रोगी के ठीक हो जाने पर रोगी व्यक्ति से सात बालकों को मीठा भोजन तथा हनुमान् जी को चोला व लंगोट चढ़वायें।

आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश-। गुरु जी का।। काली चिडी चिग-चिग करे।। घोली आवै वासे हरै। जती हनुमन्त। हाँक मारे।। मथवाई और। आधा-सी सी नाशै।। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र का ग्रहण-काल में हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को ध्यान रख सात माला जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर रोगी का माथा पकड़ कर इस मंत्र से २१ बार झाड़ा करने सेरोगी व्यक्ति का आधा-सीसी का दर्द थोड़ी देर में दूर हो जाएगा।

उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो नाड़ी-नाड़ी। नौ से नाड़ी।। बहत्तर कोठा। चलै अगाड़ी।। डिगै न कोठा। चले नाड़ी।। रक्षा करे यती। हनुमन्त की आन।। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री पवनतनय के सभी नियमों को मानते हुए ११ माला का जप करें, तो मंत्र सिद्ध होगा फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति जिसकी नाभी उखड़ी होवे, उसे लिटा करके उसकी नाभि के ऊपर एक ऐसा बाँस का पोला, जिसमें कि नौ गाँठ हों, खड़ा कर दें और इस मंत्र को जपते हुए २१ बार फूँक बाँस के छेद में जोर-जोर से मारें तो उखड़ी हुई नाभि ठीक हो जायेगी।

बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वारा रे। तू सदा बलवन्ता।। बाला ने खोदे। हनुमन्ता।। शब्द साँचा। पिण्ड काँचा।। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मन्त्र को होली, दीपावली या पर्व-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय साँभर नमक की कंकड़ी को २१ बार शक्तिकृत कर बाला वाले स्थान पर २१ बार झाड़ा करें, जब तक पीड़ा न दूर होवे तब तक रोज ही झाड़ा करें।

नोट—यंत्र-मंत्र-तंत्र सिद्ध करने के लिए किसी भी तांत्रिक या पहुँचे हुए व्यक्ति की सलाह अवश्य लें। अन्यथा फायदे की जगह आपको नुक्सान हो सकता है।

सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र

लंका में बैठ के। माथ हिलावे हनुमन्त।। सो देखि के राक्षस। गण पराय दूरंत।। बैठी सीता देवी। अशोक वन में।। देखि हनुमान को। आनन्द भई मन में।। गई उर विषाद देवी। स्थिर दरशाय।। "अमुक" के सिर। व्यथा पराय।। "अमुक" के नहिं कछु। पीर नहिं कछु भार।। आदेश कामाख्या हाड़ी। दासी चण्डी की दोहाई।।

विधि—इस मंत्र का सात दिन का अनुष्ठान है, साधक श्री हनुमान जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा और जब आवश्यकता हो तो रोगी व्यक्ति को दक्षिण की ओर मुख करके बैठा दें और उसके सिर को हाथ से पकड़ कर इस मंत्र को जपते हुए राख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो उसका सिर-दर्द दूर हो वह सुख का अनुभव करे।

(अमुक की जगह पीड़ित का नाम उच्चारण करें)

आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वन मे। ब्याई बानरी।। उछल वृक्ष पर। जाय, कूद-कूद।। शाखा नरी। कच्चे वन।। फल खाय। आधा तोड़े।। आधा फोड़े। आधा देय गिराय।। हंकारत हनुमान जी। आधा सीसी जाय।।

विधि—इस मंत्र की सिद्धि के लिए ग्रहण काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। फिर जब कभी आवश्यकता हो तो राख (भस्म) लेकर आधा-सीसी से पीड़ित व्यक्ति का झाड़ा करे तो वह शीघ्र ही सुख का अनुभव करेगा।

नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो वने बिआई। बानरीं जहाँ-जहाँ।। हनुमन्त। आँखि पीड़ा।। कषावरि गिहिया। लाइ चरिउ जाइ।। भस्मन्तन। गुरु की शक्ति।। मेरी भक्ति।। फुरो मन्त्र।। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में श्री हनुमान् जी विषयक सभी नियमों को मानते हुए १० माला का जाप करें तो यह सिद्ध होगा। फिर जब आवश्यकता हो तब नेत्र रोग से पीड़ित व्यक्ति के आँख पर हाथ फेरते हुए २१ बार इस मन्त्र को जपते हुए फूँक मारें तो रोगी की व्यथा मिट जाएगी और वह सुखी होगा।

दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र

ॐ राई-राई। तू मेरी माँई।। धरती नी धूलि। मसानी छाई।। सान खवाई। सो हनुवन्त।। की दुहाई। मारा गुरु।। जपत जलत बाई। हालि मन्त्र गुरु खवाई।। मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति।। फुरे मन्त्र। ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, श्री हनुमान् जी विषयक समस्त नियमों का पालन करते हुए प्रतिदिन १ माला का जप करने से यह मंत्र सिद्ध होता है फिर जब दाँत के दर्द वाला कोई व्यक्ति आये तो इस मंत्र को जपते हुए २१ बार झाड़ा करने से शीघ्र ही दाँत दर्द से पीड़ित व्यक्ति आराम पायेगा।

स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र

हनुमान हठीले। लोहे की लाट।। वज्र का खीला। भूत को बाँध।। प्रेत-को बाँध। मैली कुचमैली।। कूँख मैली, रक्त मैली। ऐसी चौदा मैली। पकड़ चोटी न निकाले। तो अंजनी का दूध।। हराम करे। महादेव की जटा। में आग लगे। ब्रह्मा के वचन से।। राम चन्द्र के वचन से। मेरे वचन से।। मेरे राजगुरु। के वचन से।। इसी वक्त भाग जा।।

विधि—इस मंत्र का अनुष्ठान २१ दिन का है, साधक केशरी नन्दन बजरंग बली विषयक सभी नियमोंका ध्यान रख कर प्रतिदिन १ माला का जप करें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय रोगी व्यक्ति का झाड़ा लोहे की वस्तु से इस मंत्र को जपते हुए करें तो रोगी रोग से निदान पायेगा।

सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो भगवते। चिन्तामणि हनुमान?। अंग-शूल, अति-शूल। कटि-शूल, कुक्षि-शूल।। गुद-शूल, मस्तक-शूल। सर्व-शूल, निर्मूलय।। निर्मूलय, कुरु-कुरु स्वाहा।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में केशरी-नन्दन हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए ११ माला का जप व दशांश हवन करने से यह मंत्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय-शूल-ग्रस्त रोगी व्यक्ति को अभिमन्त्रित जल पिलायें या भस्म अभिमन्त्रित कर खाने को दें अथवा एक निम्बू शक्ति-कृत कर शूल-ग्रस्त भाग के ऊपर फिरायें, बाद में उस निम्बू को नदी या तालाब में विसर्जित

कर दें इन तीनों प्रयोगों से रोगी की शूल-व्याधि नष्ट होगी, शूल रोग जब अच्छा हो जाय तब यथा शक्ति दान-पुण्य अवश्य करवायें।

रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र

ॐ नमो आदेश। गुरु जी का।। अहल बाँधूँ। जहल बाँधू।। अंबर तारा अस्सी। कोस की विद्या बाँधूँ।। बाँधूँ नदी की धारा। बाँधू तर्कशास्त्र का तीर।। मस्तक बैठा। हनुमन्त वीर।। वीर हनुमन्त से। क्या-क्या चले?।। चौंसठ चक्र चलै। चौंसठ चक्र से।। क्या-क्या चले? भूत-चले। प्रेत-चले।। राक्षस चले। ब्रह्म-राक्षस चले।। चुड़ैल चले। सोखा तपोखा चले।। पर्वतऔ धरणी चले। चौंठ योगिनी चलै।। ताप-तिजारी चलै। नव नाड़ि, बहत्तर।। कोठां माँहे सो निकाले। ''अमुक'' को आराम करे।। न निकाले, तो राजा। राम चन्द्र की दुहाई।। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री हनुमान विषयक सभी नियमों को मान कर प्रतिदिन १ माला जप तथा दशांश हवन करें तो यह सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय मोर पंख द्वारा रोगी का २१ बार झाड़ा करने में समस्त रोग-दोष दूर होते हैं।

दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र

तू है वीर। बड़ा हनुमान।। लाल लंगोटी। मुख में पान।। एर-भगावै। वैर-भगावै। ''अमुक'' में। शक्ति जगावै।। रहे इसकी काया। दुर्बल तो माता।। अंजनी की आन। दुहाई गौरा। पार्वती को।। दुहाई राम की। दुहाई सीता की।। लै इसके पिण्ड की खबर। न रहै इस पे कोई कसर।।

विधि—इस मंत्र की साधना २१ दिन की है, साधक श्री बजरंग बली के सभी नियमों का पालन करते हुए १ माला प्रतिदिन जपें तो यह मंत्र सिद्ध होगा, आवश्यकता के समय इस मंत्र को जपते हुए मोर पंख द्वारा २१ बार झाड़ा करें तो रोगी व्यक्ति की दुर्बलता दूर हो एवं उसके सभी रोग-दोष दूर होते हैं।

रोग लकवा ठीक करने का मंत्र

''ॐ नमो गुरुदेवाय नमः, ॐ नमो महादेवाय नमः, ॐ नमो उस्ताद गुरु कूं, ॐ नमो आदेश गुरु कूं, आदेश जमीन आसमान कूं, आदेश पवन पाणी कूं आदेश चंद्र सूरज कूं, आदेश नवनाथ चोरासी सिद्ध कूं, आदेश गूंगी देवी, बहरी देवी, लूली देवी, पांगुली देवी, आकाश देवी, पाताल देवी, उलूझणी देवी, पूकंनी देवी, टकंटुकी देवी, आरीदेवी, चंद्रगेहली देवी, हनुमान जाति अंजनी का पूत, पवन का व्याती, वज्र का कांच, वर्ज का लंगोटा ज्यू

चले, ज्यू चल, हनुमान जति की गदा चले ज्यू चल, राजा रामचंद्र का बाण चले ज्यू चल, गंगा, जमना का नीर चले ज्यू चल, दिल्ली आगरा का गैलो चले, ज्यू चल, कुम्हार का चाक चले ज्यू जल, गुरु की शक्ति हमारी भक्ति, चलो मंत्र ईश्वरी वाचा।''

विधि—चदंन का धूप लगाकर, मोरपंख से दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) झाड़ा देना, प्रत्येक झाड़े में मंत्र को सात बार बोलना २१ दिन तक लगातार यह प्रयोग करने से लकवा ठीक ही जाता है। परंतु २१ दिन तक नित्य तीन बार खेजड़ी सींचनी जरूरी हैं। व्यक्ति के ठीक हो जाने पर 'उतारा' करना भी जरूरी है।

रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो सुरह पर्वत पर जाप हरी दूव खाती फिरे, ताल-तलैय्या पानी पीएं, सरह गाय ने गोबर किया, जा में उपजे बिच्छू सात काले पीले, धौले लाल रंग बिरंगे और हराल उतर रे उतर बिच्छू का जाया नहीं तो गरुड़ जी डडके आया, सत्य नाम आदेश गरु का, शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

उपर्युक्त मंत्र का झाड़ा मोर पंख से पीड़ित व्यक्ति को २१ बार देने पर बिच्छू का विष उत्तर जाता है।

रोग दन्त शूल नाशक मंत्र

अग्नि बांधौ अनिश्वर बांधौ सौलाल विकराल, बांधौ लोहा लुहार बांधौ वज्र के निहाय वज्र घन दांत विहाय तो महादेव की आन।

इस मंत्र को नौ दिन तक रात्रि में नित्य २१०० बार जाप करके सिद्धि कर ले, तब प्रयोग करना हो तो तर्जनी अंगुली से २१ बार मंत्र पाढकर जार देने से दूर हो जाता है। दांत वज्र के समान मजबूत हो जाते हैं।

पूर्व स्नानादि से पवित्र होकर करे। साधना करते समय एक समय भोजन करे तो साधना शीघ्र ही फलीभूत होती है।

रोग प्रेमिका (पत्नी) को वशीभूत करने मंत्र

ॐ शिवे भगवे भगे-भगे भंग, क्षोभय-क्षोभय, मोहय, मोहय, छादय-छादय, क्लेदय क्लेदय क्लीं शरीर ॐ फट् स्वाहा।

यह मंत्र एकांत में जिस किसी भी स्त्री की फोटो के सामने १०८ बार पढ़ा जाएगा, वह युवती काम के वशीभूत होकर दौड़ी चली आएगी यदि ७ दिन तक सोते समय बराबर प्रयोग किया जाए तो अभीष्ट स्त्री कामातुर होकर रात्रि में सेज पर आवेगी, ध्यान रहे, सावधान। इस मंत्र का गलत प्रयोग न करे। मंत्र से गलत कार्य न करे, वरना जातक का भयंकर अहित हो सकता है।

रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र

ॐ नमो हनुमंत, मेरी पीड़ा तेरी पीड़ा हर ले हनुमंत मेरी पीड़ा, बवासीर को ठीक कर, तुझे शपथ लक्ष्मण भाई की, तुझे शपथ सीता माई की।

इस मंत्र के १,००० जाप करने पर खूनी बावासीर बंद हो जाएगा। जब भी बवासीरर की तकलीफ बढ़ने लगे तो इस मंत्र का जाप आपको निश्चित रूप से लाभ प्रदान करेगा। जब तकलीफ बढ़ जाए तो २१ बार मंत्र जाप करते हुए एक मौली पीड़ित व्यक्ति के हाथ में बांध दे। खूनी बवासीर बंद हो जाएगा।

रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र

नमो रामजी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कँवर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र का जाप किसी शुभ मुहूर्त (पुष्य नक्षत्र, रवियोग, अमृत सिद्ध) योग के समय आरंभ करके २१ दिवस तक १०००० जाप रोज करके, धूप, दीप और नैवेध आदि से पूरे मन से लक्ष्मण जी की पूजा करे तो यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता पड़ने पर केवल १०८ बार मंत्र पढ़कर जार देने से कैसा भी नेत्ररोग या नेत्र सम्बन्धी पीड़ा दूर हो जाती है।

रोग शिरः शूलादिशामक मंत्र

वन में ब्याही अजंनी कच्चे फूल फूल खाय। हाक मारी हनुमंत ने इस पिण्ढ से आधा सीस उतर जाय।

कृष्ण पक्ष की चौदस (चतुद्रशी) तिथि को श्मशान में जाकर इस मंत्र के १०००० दस हजार जाप करके कुछ राख (भस्मी) अभिमन्त्रित कर ले। फिर रोगी के मस्तक पर राख (भस्मी) मलते हुए इस मंत्र के सात बार जाप करने से सिरदद्र ठीक ही जाता है।

रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र

ॐ नमो हनुमंताय नमो ॐ नमो विष कटा नख फटा सिर कटा अस्थि मेद मज्जा फोड़ो फनसो आदी८ हुंबल। रेल्या रोग रींघण वाय जावे चौसठ जोगनी बावन पीर, रक्षा कीजै भैख्र आय रक्षा कीजै। शब्द साँचा पिण्ड काच फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण काल में उक्त मंत्र सिद्ध होता है। सूर्य ग्रहण के समय विशेष रूप से फलदायी है। जब ग्रहणकाल में प्रयोग करना हो तो उस समय मोर की पंख को लेकर, मोरपंख से पृथ्वी साफ करते हुए, व उक्त मंत्र पढ़ते हुए सात बार जाड़े और

जमीन की धूल को प्रभावित स्थानों या फोड़े, फुँसी आदि पर लगावे, इससे निश्चित रूप से गांठ, फोड़े, फुन्सी आदि ठीक होगी।

मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र

ॐ नमः आज्ञा गुरु को केश में कपाल, कपाल में भेजा बसै भेजी में कीड़ा करै न पीड़ा कंचन की छेनी रूपे का हथौड़ा पिता ईश्वर गाड़ इनको थापे श्री महादेव तोड़े शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो उवाच।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पहले १०८ बार पढ़कर सिद्धि कर लें, फिर प्रयोग करते समय राख को सात बार पढ़कर काटें तो मस्तक पीड़ा दूर हो जाता है।

सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर इक्कीस बार झाड़ने से समस्त शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

ॐ नमो कोतकी ज्वालामुखी काली दोबर रंग पीड़ा दूर कर सात समुद्र पार कर आदेश कामरु देश कामाक्षा माई हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।

आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र

ॐ नमो बन में बिआई बंदरी। खाय दुपहरिया कच्चा फल कंदरी। आधी खाय के आधी देती गिराय। हूकत हनुमंत के आधा शीशी चलि जाय।।

प्रयोग विधि—भूमि पर छुरी से सात रेखा खींच कर रोगी को सम्मुख बैठाकर सात बार मन्त्र पढ़ कर झाड़ने से आधा शीश का दर्द दूर होता है।

उदर वेदना निवारक मन्त्र

ऊं नून तूं सिन्धु नून सिंधु वाया। नून मन्त्र पिता महादेव रचाया।। महेश के आदेश मोही गुरुदेव सिखाया। गुरु ज्ञान से हम देऊं पीर भगाया।। आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई। आदेश हाड़ी रानी चण्डी का दुहाई।।

प्रयोग विधि—दाहिने हाथ की केवल तीन उँगलियों से सेंधा नमक का एक टुकड़ा लेकर ऊपर लिखे मन्त्र से तीन बार पढ़कर, अभिमन्त्रित करें बाद में यह टुकड़ा रोगी को खिलाने से पेट की पीड़ा शान्त होती है।

नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र

ॐ नमः झिलमिल करे ताल की तलइया। पश्चिम गिरि से आई करन भलइया।। तहँ आय बैठेउ वीर हनुमन्ता। न पीड़ै न पाकै नहीं फूहन्ता।। यती मनुमन्त राखे होड़ा।।

प्रयोग विधि—सात दिन तक नित्य सात बार नीम की टहनी द्वारा झाड़ने से नेत्र पीड़ा शान्त होती है।

रोग निवारण मन्त्र

पर्वत ऊपर पर्वत और पर्वत ऊपर फटिक शिला फटिक शिला ऊपर अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त नेहला टेहला काँख की कखराई पीछे की आदटी कान की कनफटे रान की बद कंठ की कंठमाला धूटअने का डहरु डाढ़ की डढ़ शूल पेट की ताप तिल्ली किया इतने को दूर करे मस्मन्त नातर तुझे मा का दूध पिया हराम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु का।

सिद्ध करने की विधि—सात शनिवार हनुमान् जी की मूर्ति के सम्मुख धूप दीप प्रज्वल्लित कर नैवेद्यादि अर्पित कर नित्य एक सौ आठ बार मन्त्र का जाप करें, मन को सर्वथा शुद्ध रखें, कामेच्छा आदि विकार मन में न आने पावे, इस प्रकार सिद्धि प्राप्त हो जाने पर कखबारी, बद, कंठमाला, दाढ़ शूल, कन फेर, अदीठ, रोगों को राख से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ कर मन्त्र पढ़ कर झाड़ें तथा ताप, तिल्ली को छुरी से एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर झाड़ने से उपरोक्त रोग दूर होते हैं।

विशेष—रोग दूर हो जाने पर रोगी से हनुमान् जी को प्रसाद चढ़वा कर वितरित करें और किसी से कोई द्रव्य ग्रहण न करें।

ऋतु वेदना निवारण मन्त्र

ॐ नमो आदेश देवी मनसा माई बड़ी-बड़ी अदरख पतली-पतली रेशे बड़े विष के जल फाँसी दे शेष गुरु का बचन जाय खाली पिया पञ्च मुण्ड के बाम पद ठेली विषहरी राई की दुहाई फिरै।।

प्रयोग विधि—अदरख को तीन बार मन्त्र पढ़ कर रोगिनी को खिलाने से ऋतुमती को वेदना शान्त होती है।

मासिक विकार दूर करने का मन्त्र

आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु को तोड़ू गाठ औंगा ठाली तोड़ दूँ लाय तोड़ि देऊँ सरित परित देकर पाय यह देखि मनुमन्त दौड़ कर आय अमुक का देह शांति वीर भगाय श्री गुरु नरसिंह की दुहाई फिरै।

प्रयोग विधि—एक पान का बीड़ा ले तीन बार मन्त्र पढ़ कर खिलाने से समस्त प्रकार के मासिक विकार दूर होते हैं।

प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा। आं मुक्ता पाशा विपाशश्च मुक्ता सुर्य्येण रश्यमः।। मुक्ता सर्ध्व फयादर्भ एहि मारिच स्वाहा। एतन्मत्रेणाष्ट वार जयनभि मनय पितम तत्क्षणात सुख प्रसवो भवति।।

प्रयोग विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएँ का जल लाकर आठ बार मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है तथा बालक सुखपूर्वक होता है।

विशेष—एक हाथ से कुएँ का जल खींचने के बाद जमीन पर न रखना चाहिये अन्यथा प्रभाव निष्फल होगा।

मृगी रोग हरण मन्त्र

ॐ हलाहल सरगत मंडिया पुरिया श्री राम जी फूँके। मृगी बाई सूखे, सुख होई ॐ ठः ठः स्वाहा।।

प्रयोग विधि—भोजपत्र पर अष्टगन्ध से इस मन्त्र को लिखकर गले में बाँधने मात्र से मृगी रोग चला जाता है।

रतौंधी विनाशक मन्त्र

ॐ भाट भाटिनी निकली कहे चलि जाई उस पार जाइब हम जाऊं समुद्र। भाटिनी बोली हम बिछाइब हग उपसमाशि पर मुन्डा मुन्डा अंडा।

नैन वेदना विनाशक मन्त्र

नमो राम जी धनी लक्ष्मण के बान। आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुवंर की आन। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फरो मंत्र ईश्वरो वाचा, सत्य नाम आदेश गुरु का।

इस मन्त्र का किसी शुभ मुहूर्त में जाप प्रारम्भ करके इक्कीस दिवस तक दस हजार बार नित्य जाप कर धूप दीप और नैवेद्य आदि से मनोयोग पूर्वक लक्ष्मण जी की पूजा करें तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। प्रयोग की आवश्यकता होने पर केवल एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़ झार देने से नेत्रों का दर्द दूर हो जाता है।

मस्तक शूल विनाशक मन्त्र

"निसुनीह रोई बद कर मेघ गरजहि निसु न दीपक हलुधर फुफुनिबेरि फूनि डमरु न बजै निसुनहि कलह निन्न पुटु काच मई।"

इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि को इक्कीस सौ बार जाप कर सिद्ध कर लेना और प्रयोगावसर पर केवल इक्कीस मन्त्र को पढ़कर फूँक मार देने से दर्द देवता भाग जाते हैं।

आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र

"सातों रीदा सातो भाई भातों मिल के आँख बराई दुहाई सातों देव की, इन आंखिन पीड़ा करै तो धोबी को नाँद चमार के चूल्हे परै। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

इस मन्त्र को दीपावली या होली की रात्रि से प्रारम्भ कर इक्कीस दिवस तक नित्य एक सौ आठ बार जाप कर पूजन करने से यह सिद्ध हो जाता है और

आवश्यकता के समय केवल इक्कीस बार मन्त्र पढ़ फूँक मार देने से दर्द देवता विदा हो जाते हैं।

दन्त शूल नाशक मन्त्र

अग्नि बांधौ अग्नीश्वर बाँधौं सौलाल बिकराल बाँधौ लोहा लुहार बाँधौ बज्र के निहाय वज्र घन दाँत विहाय तो महादेव की आन।।

इस मन्त्र को केवल नौ दिन तक रात्रि में नित्य इक्कीस सौ बार जाप करके सिद्ध कर लें, फिर जब प्रयोग करना हो तो तर्जनी उंगली से इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झाड़ देने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है।

तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र

ओम् कुबेर ते मुखं रौद्रं नन्दिन्ना नन्द मावह। ज्वरं मृत्यु भयं घोरं विषं नाशय में ज्वरम्।।

आम के एक सौ आठ ताजे पत्ते तोड़ शुद्ध गाय के घी में डुबा दें, यदि घी कुछ कम हो तो पत्तों पर चुपड़ दें और जिस स्थान पर रोगी की शय्या पड़ी हो आम, बेरी अथवा पलाश की लकड़ी की समिक्षा में अग्नि प्रज्जवलित करके उपरोक्त मन्त्र से एक सौ आठ आहुति दें, यदि रोगी बैठने योग्य हो तो उसे हवन कुण्ड के समीप बैठा दें यदि रोगी बैठने के योग्य न हो तो उसकी चारपाई हवन कुण्ड के समीप ही डलवा दें और हवन के समय रोगी का मुँह खुला रखें। इस प्रकार की क्रिया से साधारण ज्वर तो केवल तीन या पाँच दिन में ही दूर हो जाते हैं और पन्द्रह या इक्कीस दिवस में टी० बी० जैसे राज रोग भी सदैव के लिये दूर हो जाते हैं।

हवन सामग्री में निम्न वस्तुयें बराबर-बराबर लेकर मिला लेना चाहिये। मण्डूक पर्णी, गूगल, इन्द्रायण की जड़, अश्वगन्ध, विधारा, शालपर्णी, मकोय, अड़ूसा, बांसा, गुलाब के फूल, शतावरी, जटामांसी, जायफल, बंशलोचन, रास्ना, तगर, गोखरू, पाण्डरी, क्षीर काकोली, पिश्ता, बादाम की गिरी, मुनक्का, हरड़ बड़ी, लौंग, आँवला, अभिप्रवाल, जीवन्ती, पुनर्नवा, नगेन्द्र वामड़ी, खूब कला, अपामार्ग, चीड़ का बुरादा उपरोक्त सब चीजें बराबर भाग तथा गिलोय चार भाग, कुष्ठ १।४ भाग, केशर, शहद, देशी कपूर, चीनी, दस भाग तथा गाय का घी सामर्थ्य के अनुसार जितना डाल सकें। समिधा ढाक, शुष्क बांस या आम की ही होनी चाहिये। हवन काल में अन्य कोई औषधि न देना चाहिये।

पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र

हं मन्दिर के किनारे सुरहा गाय सुरहा गाय के पेट में उच्छा बच्छा के

पेट में कलेजा कलेजा के पेट में डब डब कर उमा बढ़े दुहाई लेना लोना चमारी की।

इस मन्त्र को होली, दीपावली की रात्रि या ग्रहण के अवसर पर पवित्रता पूर्वक १००८ बार लोहबान की धूनी देते हुए जाप कर सिद्धि कर लेवे और जब प्रयोग की आवश्यकता हो तो एक सेर लकड़ी और उंगली के नाप की सात सींकें लेकर इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर झारने से पसली रोग से मुक्ति मिल जाती है।

बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो गुरह गाय पर जाप हरी दूब खाती, फिर ताल तलैया पानी पीवे, गुरह गाय ने गोबर किया, जिसमें उपजे बिच्छू सात, काले, पीले, भूरे और हराल, उतरे रे जहर बिच्छू का जाय, नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम, आदेश गुरु का, शब्द साँचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—दीवाली के दिन इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध कर लें। फिर जिसे बिच्छू ने काटा हो इस मन्त्र को पढ़ कर (फूँक कर) पानी पिलावें तो विष उतर जायेगा।

दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)

ॐ सुमेर पर्वत नोना चमारी सोने रायी, सोने के सुनारी हुकबुक वाद-विलारी, धारिणी, नला, कारि-कारि समुद्र पार बहायो दोहाई नोना चमारी की फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को एक हजार बार जपकर सिद्ध कर लें। जब किसी को बिच्छू काटे तो इस मन्त्र से इक्कीस बार पढ़ कर झाड़ें तो बिच्छू का विष उतर जायेगा।

मन्त्र—ओम् सुखं शिर, काली माई स्याहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को प्रातःकाल चारपाई पर से उठते ही और जैसे ही पृथ्वी पर पैर रखा जाये तब इस मन्त्र को पढ़ लें तो आपका सारा दिन ठीक रहेगा और सर्प-बिच्छू आदि से बचेंगे। (सर्प-बिच्छू नहीं काटेगा)।

पीलिया (कँवर) का मन्त्र

ॐ नमो वीर वैताल असुराल नाहर सिंह देव जी स्वादी तरवादी सुभाल तुभाल, पीलिया को काटे, झारे पीलिया रहे न नेक निशान, जो रह जाय तो हनुमान की आन।

प्रयोग विधि—शुद्ध सरसों का तेल एक कटोरे में लेकर रोगी के मस्तक पर सफेद चन्दन से सात बार मलें और प्रत्येक बार मन्त्र का उच्चारण करता जायें और कम-से-कम दिन भर में दो बार प्रयोग करें।

ज्वर नाशक तन्त्र धूप

देवदारू, इन्द्रावणी, लोहबान, गोदन्ती, हींग, सुगंध वाला, कुटकी, नींबू के पत्ते, वच, दोनों कराई, चव्य, सूखा बिनौला, जौ, सरसों, शुद्ध घी, काले बकरे की बाल, गोर शिखा इन सब चीजों को लेकर बैल के मूत्र में पीस कर मिट्टी के कोरे बरतन में रख छोड़ें। इसे माहेश्वर धूप कहते हैं। इसकी धूनी देने से सब प्रकार के ज्वर तथा उन्मत्त रोगी को यह धूप देने से ग्रह, राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, चुड़ैल, नाग, पूतना, शाकिनी, डाकिनी आदि तथा अन्य विघ्न भी क्षण में दूर होते हैं। यह परीक्षित है।

ज्वर नाशक मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये। पिशाचाधिपतये आवश्य कृष्ण पिंगल फट् स्वाहा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज के ऊपर कोयले से लिख कर दाहिनी भुजा पर बाँधे तो नित्य आने वाला ज्वर दूर हो।

ज्वर नाशक अन्य मन्त्र

श्रीकृष्ण बलभद्रश्च प्रद्युम्न अनिरुद्ध च। ऊषा स्मरण मन्त्रेण ज्वर व्याधि विमुच्यते।।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को कागज पर लिख कर धूप-दीप देकर गले में बाँधने से ज्वर दूर होता है तथा उसका जाप करने से भी ज्वर दूर होता है।

बाई झारने का यन्त्र

ओम् मूलनमः धुक्षतमः जाहि जाहि ध्वांक्ष तमः प्रकीर्ण अंग प्रस्तार प्रस्तार मुंच मुंच।

प्रयोग विधि—मंगलवार या रविवार को तिलोई पक्षी के पंख से झारें तो बाई दूर होती है।

बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र

वावति-वावति-छोटी वावति, लम्बी केश वावति, चललीं कामरु देश, कामरु देश से आइल भगाना सिर लोट पर चढ़े मसाना, ठोकर मारी तीन, दीख लेब छीन सत्य नाम कामरु के, विद्या नोना योगिनी के, सिद्ध गुरु के वन्दौं पाँव।

प्रयोग विधि—जो बालक अधिक रोता हो या दीठ लग गई हो तो उस बालक के सिर पर हाथ रख कर मन्त्र पढ़कर फूँक मारें।

जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ा रेकुण्ड कुण्डालों लाल पूँछ, तेरा मुँह काला। मैं

तोंहि पूँछा कंह से आका, तूने सब माँस खाया। अब तू जा, भस्म हो जाय, गुरु गोरख नाथ की दुहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी ताजी डाली से मन्त्र पढ़ कर सात-बार झाड़ें तो सब कीड़े मर जायेंगे।

वायु गोला का मन्त्र

ओम् ऐ चा चा।

प्रयोग विधि—चाकू से बीस आड़ी और चालीस खड़ी लकीरें खींच कर इस मन्त्र को पढ़ कर उसे फूँकें तो वायु गोला का रोग जाता है।

वायु गोला झाड़ने का मन्त्र

कान्हपुर हाई कहाँ चले वनही चले वागहे के कोयला कोयला का करवेह सारी पत्रखण्ड कर बेहु अष्टोत्तर दाँत व्याधि काटे के सिर रावण का दश, भुजा बीस, ककुही वर वटी वायु गोला बाँधू गुल्म महादेव गौरा पार्वती के नीलकंठ लोना चम्माइन की दुहाई।

इस मन्त्र से वायु गोला झारे तो लाभ होता है।

कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र

आसमीन नगोट वन्ही कर्म हीन न जायते, दोहाई महावीर की जो रहे कान की पीर अंजनी पुत्र कुमारी वायु पुत्र महाबल को मारी ब्रह्मचारी हनुमन्तई नमो नमो दोहाई महावीर की जो रहे पीर मुण्ड को।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर कान तथा माथे पर फूँक मारें।

मृगी (मिरगी) का मन्त्र

ओम् हाल हलं स्मगत मंड़िका पुड़िया श्रीराम फुंकै मिरगी वायु सूखे।। ओम् ठः ठः स्वाहा।।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर किसी ताँबे के यन्त्र में भरकर बाँधने से मृगी रोग दूर होता है।

प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र

मन्त्र—**अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी। तस्याहः स्मरण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्।।**

प्रसव वेदना से गर्भिणी बहुत परेशान हो तो वट (बरगद) के पत्ते पर ऊपर लिखा यन्त्र तथा मन्त्र लिखकर उसके (गर्भिणी) के मस्तक पर रखने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

दूसरा प्रसव मन्त्र

गंगा तीरे तसेत काशी चरतेय हिमालये। तस्याः पक्षच्च्युतं तोयं पाप येच्चैव तत् क्षारणात्।। ततः प्रसूयते नारी काक रुद्रो वचो यथा।

प्रयोग विधि—श्वांस को रोककर जितनी बार यह मन्त्र जपा जा सके उतनी बार जप कर, गुड़ या गरम जल अथवा गरम दूध को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी को खिलाने तथा पिलाने से प्रसव बालक सुखपूर्वक पैदा होगा। यह परीक्षित है।

आँख दुखने का मन्त्र

ओम् नमो झल मल जहर नली तलाई अस्ताचल पर्वत से आई जहँ जा बैठा हनुमान जाई, फूटे न पाके करे न पीड़ा यती हनुमन्त की दोहाई।

प्रयोग विधि—नीम की हरी पत्तीदार डाली से सात बार मन्त्र पढ़कर झाड़ना चाहिये।

जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र

अर्जुन फलानी जिस्न सेत बाजी कपिध्वज, गिरिउ विकामुक पार्थर्व सव्य साची धनंजयः इति अर्जुन दश नामानि पशु पीड़ा हराणिचः।

प्रयोग विधि—नीम की डाली से मन्त्र द्वारा (मन्त्र पढ़ कर) झारना चाहिये।

आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो वन में बसी बानरी, उछल, पेड़ पर जाय, कूद-कूद डालन पर फल खाय, आधी तोड़े-फोड़े आधा शीशी जाय।।

प्रयोग विधि—जमीन पर हाथ से सात सीधी लकीरें खींचे तथा फिर सात आड़ी रेखाओं से उन्हें काटते जायें। इस प्रकार सात बार करके रोगी के माथे पर फूंक मारते जायें और हाथ फेरते जायें तो आधा शीशी जाये।

रतौंधी झाड़ने का मन्त्र

मन्त्र पढ़-पढ़ के फूँके भाट भाटिन संग चली कहाँ जाव, जायेउ समुद्र पार, भाटिन कहा मैं विआयेऊ कुश की छाली विआयेऊ उपसमा छीकर मुद्रा अंडा धों सो हिलतारा सोहिल तारा राजा अजैपाल तर कर केदार पानी भरत रहै उन देखे पावा बालाउ गोडिया मेला उजाल तोके मैं अधोखी ईश्वर महादेव की दोहाई, हनुमान कै दोहाई यही समय उतरि जाइ।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को पढ़कर सात बार झाड़े।

बवासीर झाड़ने का मन्त्र

ओम छई छलक कलाई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ फट् फुरो मंत्र ईश्वरो वाचः।

प्रयोग विधि—इतवार और मंगलवार के दिन इस मन्त्र से पानी फूक कर आबदस्त लेने से बवासीर का रोग जाता है।

द्यूत विजय मन्त्र

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे श्वेतगुञ्जां च मूलकम्। धारयेद्दक्षिणे हस्ते द्यूतकार्ये जयो भवेत्।

दत्तात्रेय तन्त्र में कहा गया है कि पुष्य नक्षत्र मे श्वेत गुञ्जा की जड़ लेकर दाहिने हाथ में बाँधने से जूए में विजय होती है।

अन्यत्। धत्तूरं करवीरं च अपामार्गस्य मूलकम्। हरितालसमायुक्तं तिलकं सुदिन कृतम्। अजाक्षीरेण संपेष्य क्षणे राजकुले जयी। विरोधे द्यूतकार्ये च नान्यथा शङ्करोदितम्।

अन्य प्रयोग : धतूरा, कनेर तथा अपामार्ग (चिरचिटा) की जड़ के साथ हरिताल को बकरी के दूध में पीसकर उत्तम दिन तिलक करने से राजकुल में, शत्रु के विरोध में तथा जूए में तत्काल विजयी होती है। यह शंकर का वचन है, अन्यथा नहीं हो सकता।

अन्यत्। हस्तनक्षत्र होय रवि, तादिन ऐसा करै उपाय। न्योतै पेडपवाण्डको, दिन पहेलेही जाय। रविदिन ताकूं ल्यायके, बांध दाहिनी बांह। खेलै जूवा जो कोई, जीतै संशय नाहि।

अन्य प्रयोग : निम्नलिखित यन्त्र को रेड के पत्ते पर कौवे के पंख से स्याही द्वारा रात के समय शुद्ध होकर लिखे। इस ६४ कोष्ठ के यन्त्र में :

मेखैरकन्दयेरूपाजिजनंदनीचनः छदावींयमंत्रंषहेष्ठिवामोक्षिणपात्रम्।

इस ३२ अक्षर के मंत्र को अनुलोम और विलोम रीति से लिखकर भुजा में धारण करे। फिर जूआ खेलने पर साधक सदैव जीतेगा।

अन्य प्रयोग : मन्त्र इस प्रकार है :

याअववाविर्रिज्कुल्फतूहदूकानअमुकस्यवसतनअमुकस्यजारीगद्दीवहक्व-याफताहोयावा सितो। इति मन्त्रः।

गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय

वीरभद्रोड्डीश तन्त्र में १५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं करालिनि पुरुषसुखं मुखं ठं ठः। इति पञ्चदशाक्षरो मन्त्रः।

अनेन मन्त्रेण तृणादिकं अष्टोत्तरशतमभिमन्त्र्य गोमहिष्यादीनां दातव्यं अति क्षीरदास्ता भवन्ति।

इस मन्त्र से तृण आदि को १०८ बार अभिमन्त्रित करके गाय और भैंस आदि को खिलाना चाहिये। इससे ये पशु अधिक दूध देंगे।

भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र

"ओम नमो आदेश गुरू को ओम अपर के या कट मेष खम्ब प्रति प्रहलाद राखे पाताल राखे पाँव देवी जंघा राखे काली का मस्तक राखे महादेव जी कोई या पिण्ड प्राण को छोड़े-छोड़े तो देवदानव भूत-प्रेत-डाकिनी-शाकिनी गण्डा ताप तिजारी जूड़ी एक पहरु दो पहरु सांझ को सबेरे को किया को कराया को उलट वाही के पिण्ड परे इस पिण्ड की रक्षा श्री नरसिंह जी करे शब्द सांचा पिण्ड कांचार फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

विधि—सूर्य या चन्द्र ग्रहण अथवा दीपावली की महानिशा में इस मंत्र को सिद्ध कर लिया जाये। सिद्ध के समय पूजा, प्रसाद, धूप, दूप, फूल, नैवेद्य आदि का ध्यान रखना चाहिए।

आवश्यकता होने पर इस मंत्र से सात बार जल से अभिमंत्रित करके रोगी को वह जल पिला दें साथ ही बाधाग्रस्त व्यक्ति को मोरपंख से मंत्रोच्चारण करते हुए सात बार झाड़ दें।

प्रेतादि दोष नाशक मंत्र

'ओम नमो आदेश गुरू को, लड़गढ़ी सों मुहम्मद पठाण, चढ्या श्वेत घोड़ा, श्वेत पलाण, भूत बाँधि, प्रेत बाँधि, चौसठ जोगिनी बाँधि, अड़सठ स्थान बाँधि, बाँधि, बाँधि रे चोखी तुरकिनी का पूत, बेगि बाँधि, जोतू न बाँधे तो अपनी माता की शैय्या पर पाँव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी को भूत-प्रेत-जिन्न इत्यादि ऊपरी बाधा का रोग लग गया हो तो इस गण्डे को रोगी के बांध देने से समस्त ऊपरी बांधाओं का नाश होता है। परन्तु ध्यान रखें कि यह प्रयोग आमजनों या साधारण मनुष्य के करने के लिए नहीं अपितु किसी आमिल या तांत्रिक द्वारा ही सम्पन्न किया जाना चाहिए।

इस प्रयोग को करते समय आमिल (तांत्रिक) को अपने पास दीपक जलाकर रखना चाहिए, लोबान की धूनी देवें तथा सीप में थोड़ी मिठाई अवश्य रखें।

अब रोगी के सिर से लेकर पाँव तक की लम्बाई का सात रंग वाला डोरा माप कर लेवें और उक्त मंत्र को पढ़ते हुए उस सूत के डोरे में ३१ गाँठें लगाकर गण्डा तैयार कर लें।

इस प्रकार से तैयार गण्डे को उस रोगी के गले में पहना देवें। गण्डे के प्रभाव से रोगी की समस्त ऊपरी बाधाएँ दूर हो जाती हैं।

ध्यान रखें कि पृथक्-पृथक् रोगी के लिए पृथक्-पृथक् ही गण्डा तैयार

किया जाता है। इस **'चमत्कारी गण्डे'** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंद्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र

अन्य भूतों की अपेक्षा प्रेत अधिक शक्तिशाली और दुष्ट होता है। अगर आपके घर में लोग बार-बार बीमार पड़ते हों, स्त्री-पुरुष भयानक स्वप्न देखकर भय से चौंक उठते हों, कोई स्त्री पागल की तरह अनाप-शनाप बकती हुई भूत खेलती हो अथवा घर के छप्पर और हाते में ढेले, रोड़े अथवा हड्डियों के टुकड़े बरसते हों, तो समझना चाहिए कि आपके घर में भूतों के साथ ही प्रेत की भी बाधा है। ऐसी हालत में इस भयंकर भूत-प्रेत बाधा दूर करने के लिए निम्नलिखित तन्त्र का प्रयोग कीजिए।

सर्वप्रशम एक मरे हुए कौवे को तलाश कर ले आइए। फिर मंगलवार को एक कच्चा बांस काटकर ले आइए। उस बांस को करची सहित आंगन में गाड़ दीजिए और उसकी चोटी पर उस मरे हुए कौवे को टांग दीजिए। बांस गाड़ने के पहले ही उस कौवे की उसकी चोटी से बांध देना चाहिए, जिससे गाड़ने के बाद चोटी पर टांगने में कठिनाई न पड़े।

इसके बाद अमावस्या की आधी रात को किसी कौवे के घोंसले से सात लकड़ियाँ, पांच पंख और कुछ बीट ले आइए, फिर आंगन के अन्दर तिकोना होम-कुंड खोदकर उसमें बेल, आम और नीम की सूखी लकड़ियाँ, चिड़चिड़ी, धूप, गुग्गल, जौ, तिल और घी के योग से निम्नलिखित काक-मन्त्र का पाठ करते हुए होम कीजिए।

ॐ काक-पच्यै नमः स्वाहा श्री फट्।

उपर्युक्त मन्त्र का पाठ करते हुए एक सौ आठ बार आहुतियाँ देकर होम-यज्ञ समाप्त कीजिए। याद रहे, होम के समय कौवे के घोंसले की लकड़ियाँ अन्यान्य लकड़ियों में मिला देंगे और पंख एवं बीट साकल में। इस प्रकार होम-यज्ञ समाप्त करने पर घर की सभी प्रेत-बाधाएं दूर हो जाएंगी।

इस होम की भस्म उठाकर मिट्टी के पके हुए पात्र में हिफाजत से रख दीजिए। जब कभी कोई स्त्री भूत-प्रेत खेले, तो कुछ भस्म उसके सिर पर छिड़ककर जरा-सी भस्म उसे चटा दिया कीजिए। उसी समय उसके शरीर से भूत-प्रेत की बाधा दूर हो जाएगी।

भूतप्रेत भगाने का मन्त्र

किसी उल्लू पक्षी को पकड़कर उसके दाएं डैने का एक बड़ा पंख निकाल

लें तथा उल्लू को छोड़ दें। फिर उस पंख को पानी से धोकर रख लें। अगले दिन प्रातःकाल स्नानादि से पवित्र होकर पूर्व की ओर मुंह करके पद्मासन लगाकर बैठें और पंख को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः रुद्राय, नमः कालिकायै, नमः चंचलाय, नमः कामाक्ष्यै, नमः पक्षिराजाय, नमः लक्ष्मीवाहनाय, भूतप्रेतादीनां निवारणं कुरु कुरु ठं ठं ठं स्वाहा।

हर बार मंत्र जप पूरा होने पर पंख के ऊपर एक फूंक मारते जाना चाहिए अथवा गंगाजल छिड़कना चाहिये। इससे पंख अभिमंत्रित हो जाता है। जब मंत्र जप पूरा हो जाए तो अभिमंत्रित पंख को लकड़ी की किसी पेटी के भीतर रेशमी वस्त्र में लपेटकर रख दें तथा आवश्यकता के समय उसे निकालकर प्रयोग में लाएं। जिस स्त्री अथवा पुरुष को भूत-प्रेत आदि लगा हो, उसे अभिमंत्रित पंख द्वारा १०८ बार झाड़ते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते रहने से भूत-प्रेत आदि दूर भाग जाते हैं। इस अभिमंत्रित पंख को तावीज में बंद करके भुजा अथवा कंठ में धारण करने से भूत-प्रेत कभी पास नहीं फटकते।

रविवार की अमावस्या को कहीं से एक उल्लू पकड़ लाएं। उल्लू को पकड़ते समय निम्नलिखित मंत्र का ७ बार उच्चारण करें—

ॐ नमो पक्षिराजाय नमो लक्ष्मी वाहनाय मम अभिलाषा पूर्ति कुरु कुरु स्वाहा।

फिर उस उल्लू के दाएं डैने तथा पूंछ का एक-एक पंख नोचकर अपने पास रख लें और उल्लू को उड़ा दें। दूसरे दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर कुश के आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर उल्लू के दोनों पंखों को अपने सामने रख लें। अब धूप, दीप, गंध, अक्षत एवं पुष्प आदि से उनका पूजन करके निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार जप करें—

ॐ नमः शिवाय, नमः कमलासनाय, नमः लक्ष्मी वाहनाय, नमः मनोभिलाषा पूर्ति करणाय, मम दुष्ट ग्रहं शान्तं कुरु कुरु स्वाहा।

इस विधि द्वारा २१ दिनों तक नित्य प्रातःकाल उल्लू के पंखों का पूजन तथा मंत्र का जप करें। फिर उन पंखों को लाल रंग के किसी रेशमी कपड़े में लपेटकर अपनी दाईं भुजा में बांध लें। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों में अभिचार कर्म, दुष्ट ग्रहों और भूत-प्रेत का प्रभाव दूर हो जाता है तथा मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो रुद्राय नमः सिद्धाय स्वाहा।

भूत बाधा से पीड़ित व्यक्ति द्वारा स्वयं इस मन्त्र का अपनी सामर्थ्य भर अधिक से अधिक संख्या में जप करते रहने से ही भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती है।

भूत-प्रेत हटाने हेतु शक्तिशाली यन्त्र व मन्त्र

रवि, पुष्य, रवि मूल नक्षत्र अथवा किसी शुभ मुहूर्त में नीचे दिये यन्त्र को अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम द्वारा बनाएं और चांदी के तावीज में बंद

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय जंभय जंभय अंघय अंघय वधिरय वधिरय मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

करके, १२५०० बार मन्त्र का जप करें। फिर तावीज को काले डोरे की सहायता से दाएं बाजू पर धारण कर लें। यदि शत्रु आक्रमण करने आए तो तावीज पर बायां हाथ रखकर उपर्युक्त मन्त्र को पढ़ना प्रारंभ कर दें। शत्रु भाग खड़ा होगा अथवा पराजित हो जाएगा। किसी के भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, तो तावीज को दाएं हाथ की मुट्ठी में बंद करके, मन्त्र-जप करें और तावीज से झाड़ा दे दें, भूतादि का उपद्रव शांत हो जाएगा। यन्त्र को बाजू पर बांधकर और मन्त्र-जप करके किसी यात्रा पर जाएंगे, तो मार्ग में किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है।

भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र

इस यन्त्र को आंकडां नामक पौधे के हरे पत्ते पर गोरोचन, हरताल, हिंगुल और मैनसिल के मिश्रण से लकड़ी की कलम द्वारा लिखा जाता है। यन्त्र लिखने के बाद दीप और धूप जलाकर इसकी पूजा करें और फिर पत्ते को लपेटकर कलावे अथवा कच्चे सूत की डोरी से गले, भुजा अथवा कमर से बांध दें। कितना भी शक्तिशाली भूत हो इस यन्त्र के प्रभाव से स्वयं छोड़कर भाग जाता है।

भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र

ऐ सरसो पीला सफेद और काला। तू चलना-फिरना भाई-सा चाला।। तोहरे बाण से गगन फट जाय। ईश्वर महादेव के जटा कटाय।। डाकिया, योगिनी व भूतपिशाच। काला, पीला, श्वेत, सुसांच।। सब मार-काट करूं खेत खरिहान। तेरे नजर से भागे भूत लै जान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी दोहाई।।

थोड़ी-सी सरसों लेकर उपर्युक्त मन्त्र का ३ बार उच्चारण करके भूत-बाधा से ग्रस्त रोगी पर फूंकें और उसमें से थोड़ी-सी बचाकर अग्नि में डाल दें।

ओं नमो भसाणं वरसिने भूत-प्रेतनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रयोग करने से पहले इसकी सिद्धि आवश्यक है। सिद्धि प्राप्त

करने के लिए इसका १००० जप करना चाहिए। उसके बाद ही इसके प्रयोग का अधिकार प्राप्त होता है। भूत-ग्रस्त रोगी को ७ बार झाड़ना चाहिए।

जीरा जीरा महाजीरा जिरिया चलाय! जिरिया की शक्ति से फलानी चलि जाय।। जीये तो रमटले मोहे तो मशान टले। हमरे जीरा मन्त्र से अमुख अंग भूत चले।। जाय हुक्म पाडुआ पीर की दोहाई।।

ऊपर्युक्त मन्त्र से थोड़ा-सा जीरा ७ बार अभिमंत्रित कर रोगी के शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होगी।

भूत सबको भई काहे आमन्द अपार। जिसको गुमान से अमुको को भार।। हमरे संइको पऊं करो सलाम हजार। जाते होय भूत आवेश किनार।। जितनी मेथी छोर बड़े और आदि से अन्त। तिसके ध्रूम ग्रन्थ ते जल में भूत भगते।। अमुक अंग भूत नहीं, यह मेथो के लाय। उठी के आगे रत क्षण में जाय पराय।। आलेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई।।

थोड़ी-सी मेथी को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगीके शरीर से स्पर्श कराएं और उसे अग्नि में डाल दें। रोगी को इस स्थिति में बिठाना चाहिए कि उसका धुआं उसके मुख के सामने लगे। इस प्रयोग से भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

तह कुठठ इलाही का बान। कूडूम की पत्ती चिरावन। भाग भाग अमुक अंग से भूत। मारूं धुलावन कृष्ण वर पूत। आज्ञा कामरू कामाख्या हारि दासी चण्डी दोहाई।

एक मुट्ठी भर धूल लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करें और भूत-बाधा ग्रस्त रोगी पर फेंकें। इससे भूत-बाधा की निवृत्ति होती है।

ओं नमः आदेश गुरु को हनुमंत बीर बीर बजरंगी वज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्न सबको अब मार मार, न मारे तो निरंजनि निराकर की दोहाई।

इस मन्त्र के प्रयोग से पहले हनुमान्‌जी की पूजा-उपासना करना आवश्यक होता है। इसका शुभारम्भ शनिवार से करना चाहिए। निरन्तर २१ दिन तक श्रद्धापूर्वक पूजा, उपासना व २२१ मन्त्र नित्यप्रति जप करने के पश्चात् किसी चौराहे की कंकड़ी लें, उस कंकड़ी और उड़द को ७ बार अभिमंत्रित करके रोगी को झाड़ा दें।

हल्दी गीरी बाण वाण को लिया हाथ उठाय। हल्दी बाण से लीनगिरी

पहाड़ थहराय।। यह सब देख बोलत बीर हनुमान। डाइन योगिनी भूत प्रेत मुंड काटौ तान।। आज्ञा कामरू कामाक्षा माई। आज्ञा हाड़ि की चंडी की दोहाई।।

थोड़ी-सी हल्दी लेकर उसे ३ बार अभिमंत्रित करके अग्नि में छोड़ें ताकि उसका धुआं रोगी के मुख की ओर जाए। इसे हल्दी बाण मन्त्र कहते हैं।

डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र

बैर बैर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सवं नासी मेरी गांसी।। वर बैल करे तूं कितना गुमान। काहे नाहीं छोड़ती यह जान स्थान।। यदि चाहै तूं रखना अपना मान। पल में भाग कलाश लै अपनो प्रान।। आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई। आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई।।

डाइन, चुड़ैल व प्रेतनी आदि से प्रभावित रोगी को स्वस्थ करने के लिए २१ बार इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए फूंक मारनी चाहिए। स्मरण रहे इस मन्त्र का प्रयोग इसे सिद्ध करने के बाद ही करना उपर्युक्त रहेगा। दशहरे में १०८ बार मन्त्र जप से इसकी सिद्धि हो जाती है।

चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि

बैर वर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी मांसी।।

इस मन्त्र को दीपावली, होली, दशहरा या ग्रहण के दिन सिद्ध करना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर मन्त्र पढ़कर रोगी पर फूंक मारें। यह क्रम तब तक करें जब तक कि रोगी चुड़ैल बाधा से पूरी तरह मुक्त न हो जाए।

मसान

सफेदा मसान, गुरु गोरख की आन। यमदण्ड मसान काल भैरों की आन। सुकिया मसान, नोना चमारी की आन। फुलिया मसान, गौरे भैरों की आन। हलदिया मसान, ककोड़ा भैरों की आन। पीलिया मसान, दिल्ली की योगिनी की आन। कमेदिया मसान, कालिका की आन। कीकड़िया मसान, रामचन्द्र की आन। सिलसिलिया मसान, वीर मोहम्मद पीर की आन।

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए २१ बार झाड़ा करने से मसान दोष समाप्त हो जाता है।

डाकिनी मन्त्र

ॐ नमो नारसिंह पार्डहार भस्मना। योगिनी बंध डाकिनी बंध चौरासी दोष, बंध अष्टोत्तर शत व्याधि बंध, खेदी खेदी, भेदी भेदी, मारे मारे, सोखे सोखे, ज्वल ज्वल, प्रज्वल प्रज्वल, कुरों नारसिंह सवीर की शक्ति।।

किसी भी ग्रहण में जपकर उपरोक्त मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र का सस्वर उच्चारण करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को झाड़ा देवें। तुरन्त लाभ होगा।

चुड़ैल हेतु मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का। कवलाछरी बावन वीर। कलू बैठनो जल के तीर। तीन पान का बीड़ा खवाऊं। जैठे बैठा जतलाऊं। वाचा चूके तो कंकाली की दुहाई। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा।।

इस मन्त्र से झाड़ा करने से बाधाग्रस्त सभी चुड़ैल दोषों से मुक्त हो जाता है।

औपरा हेतु मन्त्र

उलटंतं देह, पलटंतं काया। उतर आव गुरु ने बुलाया। शेष सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मन्त्र का जप करते हुए बाधाग्रस्त व्यक्ति को ३१ बार झाड़ा करें तो रोगी स्वस्थ हो जाता है।

डायन हेतु मन्त्र

जल बांका। जल बांका। अमुकेर, काया बांका। डाइनेर दृष्टि पढ़न पानी। सुनो गोमाया अधर कहानी। समन काटि के माता दिहली। बार उज्जान छोड़े भाठी। घर धूला बान। धूसर बान। शब्द भेदी महाबान। ऐहि मन्त्र पढ़ें से। ॐ हानिः श्री राम हुंकारे।

इस मन्त्र का जप करते हुए धूल-राख, सरसों पीड़ित व्यक्ति को मारने से बाधाग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ठीक हो जाता है।

भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं कुंथुं अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च-मम वांछितं पूरय पूरय ह्रीं स्वाहा।

पीले वस्त्र, पीला आसन, पीली माला का उपयोग करते हुए पूर्व की ओर मुंह कर जप शुरू करें। ११००० जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध होने पर भूत-प्रेत आदि के भय के समय एक माला फेरने से संकट टल जाएगा। अनार की कलम से अष्टगन्ध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधने से ज्वर जायेगा। रवि पुष्य नक्षत्र में लिखकर पास में रखने से यात्रा में किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र

श्री मणिभद्र देव एषः योगः फलतु।

यह मन्त्र एक बार प्रतिदिन में ही बोला जाता है।

ओं नमो भगवते मणिभद्राय, क्षेत्रपालाय, कृष्णारूपाय, चतुर्भुजाय, जिन शासन भक्ताय, नव नाग सहस्त्रवलाय, किन्नर किं पुरुष गन्धर्व राक्षस भूत प्रेत पिशाच सर्व शाकिनीनां निग्रहं कुरु कुरु स्वाहा मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तर दिशा की ओर मुंह करके, लाल रंग की माला से तीन दिन में १२५०० जप करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें और दीपक अखंड रखें तब मन्त्र सिद्ध हो। फिर रोज एक माला का जप करें, भूत-प्रेत आदि की सर्व बाधाएं दूर होंगी।

भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्व दुष्टान् स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय जंभय जंभय अंधय बधिरय बधिरय मूकवत् कारय-कारय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः।

किसी को भूत, पिशाच, प्रेत व चुड़ैल की छाया पड़ी हो, मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें व झाड़ें तो उपद्रव निश्चय ही शान्त हो। ईशान कोण की तरह मुंह करके आधी रात के समय आठ रात्रि तक इस मन्त्र की साधना करें, धूप-दीप करें, ११०० जप करें तो व्यन्तर-देवका उपद्रव शान्त हो। यही नहीं जिस समय शत्रु सामने आक्रमण करने आए तो मुट्ठी बंद करके इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। वह मुट्ठी शत्रु के सामने करें तो शत्रु स्वयं परास्त हो जाएगा।

आप एक सद्गृहस्थ हैं अतः ऊपरी हवाओं से लोगों को बचाने और छुड़ाने का कार्य तो अवश्य करें परन्तु इसे अपना व्यवसाय न बनाएं। दूसरों का भला करने के लिए निःस्वार्थ भाव से जो यह कार्य करता है, उसे समाज में सम्मान और परमपिता परमेश्वर की कृपा से सभी सुख स्वयं ही मिलते रहते हैं। परन्तु जो इस कार्य को पेशा बना लेते हैं, उनका तो लोक और परलोक दोनों ही खराब हो जाते हैं, अतः इस बारे में विशेष सावधान रहें।

सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। साथ भवानी कालिका।। बारह वर्ष कुमार। एक माई परमेश्वरी।। चौदह भुवन द्वार। दो पक्ष निर्मली।। तेरह देवी-देव। अष्ट भुजी परमेश्वरी।। ग्यारह रुद्रकर सेव। सोलह कला सम्पूर्णा।। तीन नयन भरपूर। दश अवतारी।। पाँच देव रक्षा करें। नव नाथा-चौरासी सिद्ध।। षट्-दर्शन पाइए। पन्द्रह तिथि जान।। चार वेद वखानिए। काली कर कल्याण।।।

विधि—इस मन्त्र का जो साधक नित्य सच्चे मन से माँ कालिका का ध्यान कर जप करता है वह संसार के सम्पूर्ण सुख प्राप्त करता है। उसको जीवन में किसी तरह का अभाव नहीं रहता है।

इस मन्त्र में महा कालिका के चौंतीस के यन्त्र की सम्पूर्ण विधि समाई हुई है इस लिए इस मन्त्र का जप कर झाड़ा करने से भूत-प्रेतादि दोषों का निवारण होता है।

भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र

तह कुष्ठ इलाही का बान कूडूम की पित्ती चिरावत भाग भाग अमुकं अंग से भूत मारूँ धुनवान कृष्ण वर पूत आज्ञा कामरुकामाख्या हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई।।

एक मुट्ठी धूल तीन बार मन्त्र पढ़कर मारने से भूत भय दूर होते हैं।

चुड़ैल भगाने का मन्त्र

बैर बर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासी। कहुँ तुझे सुनु सर्व नासी मेरी गाँसी।।

किसी भी शुभ रात्रि को १००१ बार जप करके सिद्ध कर लें फिर रोगी पर प्रयोग करना हो तो ११ बार पढ़कर जल छिड़कें।

भूत भय नाशन मन्त्र

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।।

प्रयोग विधि—दीपावली की रात्रि को एक हजार आठ मन्त्र जाप कर सिद्धि कर लें फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को दिन में कुत्ता और घुग्घु का मल (विष्ठा) ऊँट के बाल, सफेद घुघुंची, गन्धक, गोबर, कड़ुवा तेल, सिरस नामक वृक्ष के फल तथा पत्ते लाकर हवन कर उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करने से भूत-प्रेत-वैताल-राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी, आदि समस्त बाधायें दूर होती हैं।

डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र

वर बैल करे तू कितना गुमान काहे नहीं छोड़ता यह जान स्थान यदि चाहै तूँ रखना आपन मान पल में भाग कैलाश लै अपनी प्रान आदेश देवी कामरु कामाक्षा माई आदे हाड़ी दासी चण्डी की दुहाइ।

सिद्धि करने की विधि—इस मन्त्र को विजयादशमी की रात्रि को एक सो आठ बार जाप कर सिद्धि करें, फिर रोगिणी पर इक्कीस बार पढ़कर फूँक मारें तो डायन चुड़ैल पिशाचिनी आदि से छुटकारा प्राप्त हो।

भूत भय नाशन

ॐ नमः श्मशान वासिने भूतादीनां पलायनं कुरु-कुरु स्वाहा।

मंत्र प्रयोग करने की विधि—दीपावली की रात्रि को १००८ बार मंत्र का जाप कर मंत्र को सिद्ध ले, फिर जब प्रयोग करना हो तो रविवार को कुत्ता, बिल्ली

और चूहा का मल (विष्ठा) ऊंट के बाल, गंधक, गोवर कड़वातेल लाकर सबका मिश्रण तैयार कर उक्त मंत्र से १०८ बार हवन करने से भूत-प्रेत-वैताल राक्षस, डाकिनी, शाकिनी, प्रेतनी आदि समस्त बाधाएं स्वत: ही दूर हो जाती है।

भूत बाधा नाशन प्रयोग

गुग्गुल, धूप बत्तीसा, सरसों आदि लावे। इसे पीसी हुई लालमिर्च के साथ मिलाकर-घर में धूप के रूप में जलावें। भूत-प्रेत आपके घर के आस-पास भी फटक नहीं पाएंगे।

चामुण्डा मन्त्र प्रयोग

३२ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ चामुण्डे अमुकीं वशमानय स्वाहा। इति द्वात्रिंशत्यक्षरो मन्त्रः।

पुष्ये पुष्पं च संग्राह्य भरण्यां तु फलं तथा। शाखां चैव विशाखायां हस्ते पत्रं तथैव च।। मूले मूलं समुद्धृत्य कृष्णोन्मत्तस्य तत्क्रमात्। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनासमम्।। तिलकात्स्त्री वशं याति यदि साक्षादरुन्धती। काकजङ्घा वचा कुष्ठं शुक्रशोणितमिश्रितम्।। तैर्दत्ते भोजने बाला श्मशाने रोदिति ध्रुवम्। प्रातर्मुख तु प्रक्षाल्य सप्तवाराभिमन्त्रितम्। यस्या नाम्ना पिबेत्तोऽयं सा स्त्री वश्या भवेद ध्रुवम्।।

काले धतूरे का पुष्य नक्षत्र में फूल, भरणी में फल, विशाखा में शाखा, हस्त में पत्र और मूल में जड़ का क्रमश: संग्रह करके उन्हें पीसकर कपूर, केसर तथा गोरोचन को समभाग मिलाकर उससे तिलक करने पर यदि साक्षात् अरुन्धती के समान पतिव्रता ही कोई स्त्री क्यों न हो वह साधक के वंश में हो जाती है। काकजङ्घा, वचा, कूठ तथा शुक्र और शोणित को मिश्रित करके भोजन में देने से बोला निश्चित रूप से श्मशान में रोती है। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से प्रात:काल सात बार मुख धोकर जिसके नाम से जल का पान साधक करेगा वह स्त्री निश्चित रूप से उसके वश में हो जायगी।

नजर उतारने का मंत्र-१

मुर्गे की चोंच के ऊपरी भाग को दूध में धोने के बाद सोने या चांदी के तावीज में भरें। फिर तावीज में काले रंग का रेशमी डोरा पिरोकर उसका मुंह बंद कर दें। सोमवार के दिन प्रात: काल पूर्वाभिमुख बैठकर तावीज को अपने सामने रखकर निम्नलिखित मंत्र का १००८ बार उच्चारण करके उसे अभिमंत्रित करें अर्थात् प्रत्येक बार मंत्र पढ़ने के बाद तावीज पर एक-एक फूंक मारते चले जाएं। फिर तावीज को बालक के गले में पहना दें। इसके प्रभाव से बालक को किसी की नजर नहीं लगेगी।

ॐ नमः शिवाय दुष्टिदोषविनाशनाय नमः रुद्राय, नमः उमामहेश्वराय, कं खं गं घं ङं डिम डिम स्वाहा।

एक पूरा नीबू लेकर श्री हनुमान्‌जी का स्मरण करके निम्न मंत्र का जप करते हुए नजर से पीड़ित बच्चे के सिर से पैर तक उतारें। फिर उस नीबू को ले जाकर किसी चौरहे पर काटकर प्रत्येक मार्ग पर फेंक दें। छुरी भी चौराहे पर ही छोड़ आएं। बुरी नजर दूर हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्री हनुमते नमः।

नजर उतारने का मन्त्र-२

सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दीपावली, होली में सिद्ध करके निम्नलिखित मन्त्र से नजर झाड़े।

गुरु चरण दिया मन, श्री हरि मोक्ष कारण, देव-दानव-दैत्यादि, खाई नरसिंह वीर आसी सब उड़ाई आलाली पालाली चोटी चोटी हंकारे फूंकारि उड़ाव मारी शलि लेकर पांव पांव टुकरियां जाए, अनुकार आए, डाईनेर दृष्टि, पलायकरा अक्षा वीर नरा सिंह आज्ञा।

नजर उजारने का मन्त्र-३

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा।

इस मन्त्र को दीपावली के दिन, इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें, फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर, रोगी को पिलाने से कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

नजर उतारने का मन्त्र-४

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसकी बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के समय मन्त्र जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़ें। इससे लाभ होगा।

नजर उतारने का मंत्र-५

मोर का पंख या मोर पंख का झाड़ू लेकर बालक के सिर से पांव तक झार दे और झारते हुई इस मंत्र को पढ़ते जाए।

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु का, ॐ नमों हनुमंत वीर नजर को बांधे, बावन वीर कहुरे, नजर कहां से आई। यहां की राह तोहे कौन बताई। क्या है जाति तेरा क्या है नाम किस तरह की लड़की, कहां है तेरा धाम, कहां से आई कहां तक जाए, अबहि बस करले तेरी माय। मेरी जाति सुनो चितलाय। जैसी सुनाऊ आए। तेलिन, तमोलिन, चुड़ि चमारिन, कायथिन, कथरानी, कुम्हारीन्, मेहतरानी, राजा रानी, जिसकी नजरे उसी के जाए पड़े प्रत्यक्ष देव दृष्टि रक्षा करे।

उक्त मंत्र द्वारा झार से नजर उतर जाएगी। यदि मोर पंख नही हो तो जलती हुई अगरबत्ती और चाकू से भी झारा जा सकता हैं।

दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र

मंत्र को दीपवली के दिन इसकी एक माला फेरकर सिद्ध कर लें। फिर शुद्ध जल को इस मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर रोगी को पिलानेसे कैसी भी नजर लगी हो, तुरन्त उतर जाएगी।

ओं नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्लीं धरणेंद्र पद्मावति सहिताय आत्मचक्षु प्रेतचक्षु पिशाचचक्षु सर्वग्रह नाशाय सर्व ज्वर नाशाय ह्लीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें

ग्रहण के समय प्रस्तुत मन्त्र को जप कर सिद्ध करें और बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से झाड़े। इससे फायदा होगा।

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरु को। ॐ नमो नजर जहां पर वीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी। कहो नजर कहां से आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई, कौन जात तेरी का ठाम, किसको बेटी कहो तेरा नाम। कहां को जाया, अब ही बस कर ले, तेरी माया, मेरी बात सुनो चित लगाओ, जैसी होय सुनाऊं आय, तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी राजा की रानी, जाको दोष तुम्हारे सिर पर पड़े। हनुमंत वीर नजर से रक्षा करें। मेरी भवित, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

नजर झाड़ने का मन्त्र-१

ॐ नमो सत्य आदेश गुरु को, ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छलसों अमृतवानी, कहो नर्जर कहा ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन

बताई, कौन जात तेरो कहां ठाह, किसकी बेटी कहा तेरो नाम, कहां से उड़ी कहां को जाया, अब ही बसकर ले तेरी माया। मेरी बात सुनो चित लाय, जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन, तमोलन, चुहड़ी, चमारी, कायथनी, खतरानी, कुम्हारी, महतरानी, राजा की रानी, जाको दोष ताही के शिर पड़े, जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

इस मन्त्र का जप मंगलवार से प्रारम्भ कर शनिवार को समाप्त करना चाहिए, ५१ मालाएं फेरनी चाहिए। साधक को दक्षिण की तरफ मुंह कर तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र को सिद्ध करना चाहिए। शनिवार की शाम को जब मालाएं पूरी हो जाएं, तब एक किलो गेहूं उबालकर जंगल में फेंकने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। इस प्रकार से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध होने पर मोर-पंख से मात्र तीन बार इस मन्त्र को पढ़कर नजर झाड़ दें तो निश्चय ही नजर उतर जाती है। चाहे वो बालक या स्त्री हो अथवा मकान या दुकान।

नजर झाड़ने का मंत्र-२

कई बार बच्चों को नजर आदि लगने की समस्या उत्पन्न हो जाती है जिससे बच्चा बीमार हो जाता हैं, उलटी, दस्त, बुखार, जुकाम आदि समस्या उत्पन्न हो जाती है। निम्न मंत्र से २१ बार झाड़ा देने पर नजर उतर जाती है।

हरि हरि स्मरिके हय मन करुं स्थिर चाउर आदि फेक के पाथर आडिवीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बलक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लखण दूनो भाई धनुष लिए हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माय गई पराय सब डायरी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

उपरोक्त मंत्र को २१ बार पीड़ित व्यक्ति (जो नजर या टोकार आदि से पीड़ित हो) के सामने पढ़े। पढ़ते समय अगरबत्ती अवश्य ही लगा लेवे।

नजर दोष दूर करने का मंत्र

ॐ नमो नजर जहां पर पीर न जानी। बोले छल सों अमृत बानी।। कहौं नजर कहां ते आई? यहां की ठोरि तोहि कौन बताई? कौन जात तेरी कहां ठाम? किसकी बेटी क्या तेरी नाम? कहां से उड़ी कहां की जाया? अब ही बस कर दे तेरी माया? मेरी जात सुनो चितलाय। जैसी होय सुनाऊं आय। तेलन तमोलन चुहड़ी चमारी। कामथनी खातरानी कुम्हारी।। महतरानी राजा की रानी। जाको दोष ताहि सिर पड़े। हनुमन्त वीर नजर के रक्षा करें। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति। फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।।

इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी को सिर से पैर की तरफ झाड़ा करे तो दृष्टि का दोष नजर लगना समाप्त हो जाता है। सूर्य-चंद्र ग्रहण के समय जप करके इस मंत्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। बालकों को नजर लग जाने पर मोर के पंख से ११ बार झाड़ दें। सुख व शांति होगी।

डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र

हरि हरि स्मरिके हम मन करुँ स्थिर चाउर आदि फेंक के पाथर आदि वीर डायन दूतिन दानवी देवी के आहार बालक गण पहिरे हाड़ गला हार राम लषण दूनों भाई धनुष लिये हाथ देखि डायनी भागत छोड़ शिशु माथ गई पराय सब डायनी योगिनी सात समुद्र पार में खावे खारी पानी आदेश हाड़ी दासी चण्डी माई आदेश नैना योगिनी के दोहाई।

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र विधि के अनुसार सिद्धि कर झाड़ने से दृष्टि बाधा दूर होती है।

नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र

हनुमान चलै। अवधेसरिका।। वृज-मण्डल। धूम मचाई।। टोना-टमर। डीठि-मूठि।। सबको खैचि बलाय। दुहाई छत्तीस।। कोटि देवता की। दोहाई लोना।। चमारिन की।।

विधि—इस मंत्र को ग्रहण-काल में, पवन पुत्र हनुमान् जी विषयक सभी नियमों का पालन करते हुए १० माला का जप करें तो यह मन्त्र सिद्ध होगा, फिर आवश्यकता के समय मोर पंख से २१ बार झाड़ा करने से बालकों को लगी नजर दूर हो जाती है।

अतर मोहिनी

मन्त्र—**अलहम्दोगवानीवो मेरेपर हो दिवानी जो न हो दिवानी तो सैयाद कादर अब्दुलं जलानी चुट्टा पकडकर करो दिवानी। इति मन्त्रः।**

उत्कृष्ट अतर (इत्र) को शीशी में डालकर १०८ बार मन्त्र पढ़े और शीशी के भीतर फूँक मारे। इसी तरह प्रत्येक माला पूरी होने पर फूँक मारता रहे। जब १ हजार मन्त्र पढ़ चुके और शीशी में दश फूंके लग चुकें तब शीशी को किसी स्वच्छ स्थान में रख दे। इसी प्रकार २१ दिनों तक करने से शीशी का अतर चक्कर देने लगेगा। जब अतर चक्कर देने लगे तब जान ले कि वह सिद्ध हो गया है। अगर २१ दिन में अतर चक्कर न मारे तो फिर ४० दिन तक मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त जिस स्त्री की इच्छा से यह कार्य किया हो उसे अतर सुँघाने से वह वशीभूत हो जाती है। यह अत्यन्त चमत्कारी और अनुभूत मन्त्र है, इसे मिथ्या नहीं जानना चाहिये।

लूणमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो हयलूण सुहावय लूण अईसा लूण मसाणां हमां पाया अमुकादिद अमुक खाय तरुवाचाटत जन्म जाय। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से २१ बार नमक को अभिमन्त्रित कर खिलाने से वशीकरण होता है।

सुपारीमोहिनी

मन्त्र—**पीर मैं नाथ पीर तूं नाथ जिस्को खिलाऊं तिस्को वश करना फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

ग्रहण के समय नाभि पर्यन्त जल में खड़ा होकर एक सुपारी को सात बार अभिमन्त्रित करके निगल जाय। जब वह (मल के साथ) निकले तब उसे जल से धोकर फिर दूध से धोवे और १०८ बार मन्त्र पढ़कर गूगल की धूनी दे। तदुपरान्त उस सुपारी का एक टुकड़ा भी जिसे खिला दे वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, अवश्य वश में हो जायगा।

इलायचीमोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो काला कलुवा काली रात निसकी पुतली मांझी रात काला कलुवा घाटवाट सोतीको जगाय ल्याव बैठीको उठाय ल्याव खड़ीको चलाय ल्याव वेगी धर ल्याव मोहिनी जोहिनी चल राजाकी ठाव अमुकीके तनमें चटपटी लगाव जियाले तोड़ जो कोई खाय हमारी इलायची कभी न छोड़ै हमारा साथ घरको तजै बहेरको तजै घरके साईको तजै हमे तज और कनेजाय तो छाती फाड तुरत मरजाय सत्य गुरू आदेस गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ईश्वर महादेवकी वाचासे टरै तो कुम्भी नरकमें पड़ै। इति मन्त्रः।**

२१ दिन में इसे सिद्ध कर ले। फिर इस मन्त्र से अभिमन्त्रित इलायची जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जायगा।

लौंग मोहिनी

मन्त्र—**सत्य नाम आदेश गुरूको लौंकलौंग मेरा भाई इन्हीं लौंगने शक्ति चलाई पहेली लौंग राती माती दूजी लौंग जोवनमाती तीजी लौंग अंग मरोड़ै चौथी लौंग दोऊ कर जोड़ै चारों लौंग जो मेरी खाय फलाने के पाससे फलानेकने आजाय गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

शनिवार से प्रारम्भ करके रात्रि के समय पूजन करे और मन्त्र का नित्य १०८ जप करने से २१ दिन में सिद्ध होता है। फिर ४ लौंग अभिमन्त्रित करके जिसे खिला दे वह अवश्य वश में हो जाता है—यह बिल्कुल सत्य है।

राजवशीकरण

मन्त्र—**हथेली में हनुमन्त बसै, भैरूं बसै कापाल। नारसिंहकी मोहिनी,**

मोहा सब संसार। मोहन रे मोहन्ता वीर सब वीरनमें तेरा सीर सबकी दृष्टि बांधिदे तोहि तेल सिन्दूर चढ़ाऊ तोहि तेल सिन्दूर कहांसे आया कैलासपर्वतसे आया कौल ल्याया अञ्जनीका हनुमन्त गौरीका गणेश ल्याया कालागोरा तोतला तीनू वसै कपाल विन्दा तेल सिन्दूरका दुश्मन गया पताल दुहाई कामियां सिन्दूरकी हमें देख सीतल होजाय मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

रविवार को नृसिंह का पूजन करके १२१ बार मन्त्र पढ़े। इसी प्रकार सात रविवारों तक करे, तेल का दीपक जोड़े, लोहबान की धूप दे और मोदक चढ़ाये। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध होता है। सिद्ध मन्त्र से सिन्दूर को अभिमन्त्रित करके मस्तक पर बिन्दी लगाने से राजा का क्रोध शान्त हो जाता है और वह प्रसन्न होता है।

सभा मोहिनी

मन्त्र—**कालूं मुख धोये करूं सलाम मेरी आंखोंमें सुरमा बसै जो देखै सो पायन परै दुहाई गौसुलआजमदस्तगीरकी छू। इति मन्त्रः।**

सवा लाख गेहूं पर मन्त्र पढ़े, फिर उसे पिसवाकर उसके आटे में घी और चीनी मिलाकर हलवा तैयार करे। गौसुल आजमदस्तगीरकी नियाज दिलावे और उस हलवे को स्वयं खाकर सिद्ध हो। पदुपरान्त जब राज दरबार में जाने का काम पड़े तब सुरमें को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर नेत्रों में लगाकर जाय तो सम्पूर्ण सभा वशीभूत होकर साधक की हाँ में हाँ मिलायेगी।

नग्न मोहिनी

मन्त्र—**पद्मनी अञ्जन मेरा नाम इस नगरीमें पैसके मेहेसगरागाम राज करन्ता राजा मोहूं फरस बैठा पञ्चमोहूं पनघटकी पनिहार मोहूं इस नगरीमें पैसके छत्तीस पवना मोहूं जो कोई मारमार करन्ता आवै ताहि नारसिंह वाया पगके अंगूठा तरे घेरघेर ल्यावै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।**

रवि-शनि की रात को धूप, दीप, चन्दन, पुष्प, रोली, चावल, गूगल, पान सुपारी और लौंग से नृसिंह का पूजन करे और १०८ बार मन्त्र का जप करे। प्रत्येक मन्त्र से पान, सुपारी, शक्कर, घृत और गूगल का हवन करे। इससे सिद्धि प्राप्त हो जाने पर नन्दन वन के कपास की रूई में ओंगा की जड़ लपेटकर बत्ती बनावे और तेल से दीपक भरकर उस बत्ती को जलाकर काजल पारे। उस काजल को सात बार अभिमन्त्रित करके नेत्रों में लगा लेने पर सम्पूर्ण पुरुष, बालक, वृद्ध और तरुण वश में हो जाते हैं। जिस ग्राम में साधक जायेगा वहाँ सब ग्रामवासी उसकी सेवा करेंगे।

शत्रु मोहिनी

मन्त्र—**ॐ नमो उच्छिष्टचाण्डालिनि कङ्कालमालाधारिणि साधुसाधु त्रैलोक्यमोहिनि प्रकाण्डक्षोभिणि शत्रून् क्षोभय क्षोभय हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

यह क्षोभणी देवी का मन्त्र है। इसके जप तथा हवन से शत्रुओंको क्षोभ होता है। यदि बट और शमी वृक्ष की समिधा से घी के साथ एक हजार नित्य हवन करे तो स्त्री वशीभूत होती है—इसमें सन्देह नहीं।

मूली मन्त्र प्रयोग

२५ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ मूली मूली महामूली सर्वं संक्षोभय संक्षोभय उपद्रवेभ्यः स्वाहा। इति पञ्चविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अंजलि में जल लेकर इस विद्या का जप करने से एक मास में वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दर स्त्री प्राप्त होती है।

वशीकरण तन्त्र

यह १८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा। इत्यष्टादशाक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री सर्वयोगान् साधयेत्। तथा च। ईश्वर उवाच। नृकपाले रविदिने तण्डुलैः पायसं कृतम्। छायाशुष्कं तु तच्चूर्णं खाने पीने च दीयते। यावज्जीवं वशं याति नारी वा पुरुषोपि वा। अदासो दासतां याति प्राणैरपि धनैरपि।

१०८ बार जप स सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक सभी भोगों को सिद्ध करे। कहा भी गया है : ईश्वर बोले : रविवार के दिन मनुष्य की खोपड़ी में चावल से खीर बनाये फिर छाया में सुखाकर उसका चूर्ण बना ले। उसे खान-पान में देने से चाहे नारी हो या पुरुष वह यावज्जीवन वशीकृत रहता है तथा प्राण और धन सहित दास हो जाता है।

अन्यत्। पल्लीपुच्छं गृहीत्वा तु वर्तिं ऋतुमतीस्त्रियः। ज्वालितां यं रवौ वारे दर्शयेत्स वशो भवेत्। ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं ताम्बूलमिश्रितम्। रवौ वारे कृतं चेत्स सर्वलोकेवशंकरः।

छिपकली की पूंछ को ऋतुमयी स्त्री के वस्त्र में लपेटकर बत्ती बनाकर रविवार के दिन उसे जलाकर जिसे दिखाये वह वशीकृत होता है। ब्रह्मदण्डी, वचा तथा कुष्ठ के चूर्ण को ताम्बूल के साथ रविवार के दिन मिश्रित करने से वह सर्वलोकवशंकारी होता है।

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत्। विभूत्या संयुतं तस्य तिलको लोकवश्यकृत्।

बरगद की जड़ लेकर उसे जल से घिसे। उसकी विभूति के साथ उसका तिलक संसार को वश में करनेवाला होता है।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभि मन्त्रितम्। यस्यास्ते स भवेत्पूज्यो वधूभिः सर्वमोहकः।

पुष्य नक्षत्र में पुनर्नवा की जड़ को सात बार अभिमन्त्रित करके जो अपने हाथ में रखता है वह वधुओं से पूज्य होता है और सबको मोहित करता है।

अपामार्गस्य मूलं तु कपिलाक्षीरपेषितम्। ललाटे तिलकस्तस्य वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्।

अपामार्ग की जड़ को कपिला गाय के दूध में पीसकर जो अपने ललाट पर तिलक करता है वह तीनो लोकों को वशीकृत करता है।

गृहीत्वा सहदेवीं वै छायाशुष्कं तु कारयेत्। ताम्बूले निहितं तस्याश्चूर्णं लोकवशङ्करम्।

सहदेवी को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उसका चूर्ण ताम्बूल में रखकर देने से वह लोकवशंकारी होता है।

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकः कृतः। प्रियो भवति सर्वेषां दृष्टिमात्रान्न संशयः। ताम्बूले या प्रदातव्यं सर्वलोकवशङ्करम्।

गूलर की जड़ को लेकर उसका तिलक ललाट पर लगाकर साधक दर्शन मात्र से सर्वप्रिय हो जाता है—इसमें संशय नहीं है। इसे ताम्बूल में देने से भी सर्वलोकों का वशीकरण होता है।

देवदालीं च सिद्धार्थगुटिकां कारयेदबुधः। मुखनिक्षेपमात्रेण सर्वलोकवशङ्करः।।

बुद्धिमान साधक देवदाली तथा सिद्धार्थ (पीली सरसों) की गुटिया बनाकर उसे मुख में डालकर समस्त संसार को वश में कर लेता है।

कुंकुमं तगरं कुष्ठं हरितालं मनःशिलां। अनामिकाया रक्तेन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

कुंकुम, तगर, कूठ, हरिताल तथा मैनसिल को अनामिका अंगुली के रक्त से मिलाकर तिलक लगाते ही साधक सभी को वश में कर लेता है।

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगु रक्तचन्दनम्। एकी कृत्य जपेन्मन्त्रं सर्वलोकवशङ्करम्।।

गोरोचन, पद्मपत्र, प्रियंगु तथा रुक्तचन्दन को एकत्र कर मन्त्र का जप करने से साधक सर्वलोकों को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा श्वेतगुञ्जायाच्छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धेन तिलको लोकवश्यकृत्।।

श्वेतगुंजा को लेकर उसे छाया में सुखा ले। उनका आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर तिलक बनाने से साधक समस्त लोकों को वश में करने वाला होता है।

तन्मूलं पत्रताम्बूलं सर्वलोकवशङ्करम्। तन्मूलाल्लेपयेद्देहं सर्वलोकवशङ्करः।।

श्वेतगुंजा की जड़ तथा उसके पत्तों को ताम्बूल के साथ खाने से साधक सर्वलोकों को वश में करता है। श्वेतगुंजा की जड़ को देह में लेप लगाना भी सर्वलोकवश्यकारी है।

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलाक्षीरपेषिताम्। तल्लेपनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध में पीस ले। इस लेप को लगाकर साधक सर्वलोकों को वश में करता है।

श्वेतार्कं वै गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत्। कपिलापयसार्द्धन तिलकः सर्ववश्यकृत्।।

सफेद मदार को लेकर छाया में सुखाकर उससे आधा कपिला गाय का दूध उसमें मिलाकर उससे तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलिङ्गं तथैव च। अजादुग्धेन संपेष्य तिलको लोकवश्कृत्।।

बिल्वपत्र तथा बिजौरा नीबू एकत्र करके बकरी के दूध में पीसकर तिलक लगाना सर्वलोकवश्यकारी होता है।

कौमारीकंदमादाय विजयाबीजसंयुतम्। तिलकं धारयेद्भाले सर्वलोक-वशङ्करम्।।

हरताल, अश्वगन्धा, सिन्दूर तथा केले का रस एकत्र पीसकर तिलक करना सर्वलोकवश्यकारी है।

अपामार्गस्य बीजानि छागीदुग्धेन पेषयेत्। तल्लेनाद्भवेन्मन्त्री सर्वलोक-वशङ्करः।।

अपामार्ग के बीच को बकरी के दूध के साथ पीसकर लेप बनाये। इस लेप को धारण करने से साधक समस्त लोकों को वश में करता है।

हरितालं च तुलसी कपिलादुग्धपेषिता। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

हरताल तथा तुलसी को कपिला गाय के दूध से पीसकर ललाट पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करनेवाला है।।७६।।

धात्रीफलरसे भाव्यमष्टगन्धं मनःशिला। अनेन तिलको भाले सर्वलोक-वशङ्करः।।

आँवले के रस में अष्टगन्ध और मैनसिल को पीसकर भाल पर तिलक लगाना समस्त लोकों को वश में करने वाला है।

राजावशीकरण तन्त्र

यह २८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरं तुलसीदलम्। गोक्षीरघर्षितं तस्य तिलको राजमोंहनः।।

१०८ मन्त्र के जप से सिद्धि होती है। इस प्रका मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा गया है : ईश्वर बोले : कुकुंम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल को गाय के घी में घोंटकर तिलक लगाना, राजवशीकरण करता है।

करे सुदर्शनामूलं बध्वा राजप्रियो भवेत्।

हाथ में सुदर्शना की जड़ बाँधकर साधक राजप्रिय हो जाता है।

सिंहीमूलं रहेत् पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः। हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरं च मनःशिला। अजाक्षीरेण तिलको राज्यवश्यकरः परः।।

पुष्य नक्षत्र में सिंही (भटकटैया) की जड़ को कमर में बाँधने से मनुष्य राजप्रिय होता है। हरिताल, अश्वगन्दा, कपूर तथा मैनसिल को बकरी के दूध से पीसकर तिलक लगाकर साधक राजा को वश में कर लेता है।

गृहीत्वा सुदर्शनामूलं पुष्यनक्षत्रवासरे। कर्पूरं तुलसीपत्रं पेषयेल्लिप्तवस्त्रके। विष्णुक्रान्तानि बीजानि तैलं प्रज्वाल्य दीपके। कज्जलं पातयेद्रात्रौ शुचिः पूर्व समाहितः कज्जलं चाञ्जयेन्नेत्रे राज्यवश्यकरो भवेत्। चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोकस्य का कथा।।

पुष्य नक्षत्र में सुदर्शना की जड़ को कपूर और तुलसी के पत्र के साथ पीसकर वस्त्र पर उसका लेप करे। विष्णुक्रान्ता के बीजों को उसमें लपेटकर दीपक में

तेल डालकर रात में पवित्र और शान्तचित्त हो उसका बत्ती जलाकर काजल पारे। उस काजल को आँख में लगाने से साधक राजा को वश में करता है! इससे चक्रवर्ती राजा भी वश में हो जाता है, फिर अन्य लोगों की बात ही क्या?।

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे। खाने पाने प्रदेयानि राजवश्य कराणि हि।।

पुष्य नक्षत्र में रविवार को अपामार्ग के बीजों को लेकर उसे खान-पान में देना चाहिये। ये बीज राजा को भी वश में करनेवाले हैं।

पति वशीकरण तन्त्र

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो महायक्षिणि पतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा चः ईश्वर उवाच। गोरोचनं योनिरक्तं कदलीरससंयुतम्। एभिस्तु तिलकं कृत्वा स्वपतिं वशमानयेत्।।

१०८ जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है ईश्वर बोले : गोरोचन और योनिरक्त को केले के साथ मिलाकर तिलक करने से नारी अपने पति को वश में करती है।

पञ्चाङ्गदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेत सर्षपसंयुताम्। योनिलेपात्पतिं दासं करोत्यपि च दुर्भगा।।

अनार के पंचांग को पीसकर श्वेतगुंजा तथा सरसो के साथ योनि में लेप करके दुर्भगा नारी भी पति को दास बना लेती है।

जिह्वामलं लवङ्गं च खाने पाने प्रदापयेत्। पतिवश्यकरं देव पतिर्दासस्तु जायते।

जिह्वा का मैल तथा लौंग खान-पान में दे। हे देव! यह पति को वश में करनेवाला है। इससे पति दासवत हो जाता है।

स्त्रीवशीकरण तन्त्र

दत्तात्रेय तन्त्र में २० अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कामक्षीदेवि अमुकीं मे वश्यां कुरुकुरु स्वाहा। इति विंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि साधयेत्। तथा चः रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूर पुष्पकम्। शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं

तथैव च। पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम्। तिलकेन वशे कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती।।

१०८ बार जप से मन्त्र सिद्ध होता है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को सिद्ध करे। कहा भी गया है कि रविवार को काले धतूरे का फूल, शाखा, लता, पत्र और मूल लेकर उसमें कपूर, कुंकुम तथा गोरोचन समान भाग डालकर पीसे। इस लेप का तिलक लगाकर मनुष्य स्त्री को वश में कर लेता है चाहे वह साक्षात् अरुन्धती ही क्यों न हो।

अथाकर्षण तन्त्र

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नम आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतं जपेत्। सिद्धिर्भवति। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्। तथा च। ईश्वर उवाच। आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः। राज्ञां प्रजानां सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है। इस मन्त्र के सिद्ध होने पर साधक तन्त्रों को करे। कहा भी गया है: ईश्वर बोले: मैं आकर्षणविधि को कहता हूँ, प्रयत्नपूर्वक उसे सुनो। इससे राजा तथा प्रजा सबका आकर्षण होता है।

कृष्णधत्तूरपत्रस्य सरोचनरसेन तु। श्वेतकवीरलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेन्मनुम्। यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारतापितम्। शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम्।।

काले धतूरे के पत्ते के रस के साथ गोरोचन को पीस कर उस रंग से सफेद कनेर की कलम से भोजपत्र पर उक्त मन्त्र को लिखे। मन्त्र के 'अमुकस्य' पद के स्थान पर साध्य का नाम लिखे। फिर खैर के कोयले पर उसे तपाने पर सौ योजन दूर रहने वाला भी साधक को पास आ जाता है। शंकर का यह कथन अन्यथा नहीं हो सकता।

पगच्छेदन

मन्त्र—**ॐ नमो गण्डियाभैरो गलत हाथ माथे गघरी मसकदारू जहां भेजूं तहां जाय अमुकाकी गांड मार गांड में लोही चलाव न चलावै तो लोनाचमारीकी कुण्ड में जाय फुरो मन्त्र फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

सवासेर मद्य, सवा पाव काला उहद, तिल दो पैसे भर—इन सबको भैरव को भेंट देकर सर्प की हड्डी की माला से नित्य ५०० मन्त्र का जप करने से बैरी की गुदा से रुधिर गिरने लगेगा।

एक अन्य ३८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सूर्यवरण निर्मल तारा साहीका कांटा नीबू मांरा अक्कासले तारा टूटा अमुकिया तेरा पैर छूटा।

रविवार, शनिवार या मंगलवार को अर्धरात्रि के समय कुएँ में पैर लटकाकर नंगा बैठ जाय और मुख उस ओर करे जिधर वांछित स्त्री का घर हो। बायें हाथ में नीबू और दाहिने में सेहनर (नर साही) का काँटा लेकर आकाश की ओर देखता हुआ मन्त्र पढ़ता रहे जब तारा टूटने लगे तब मन्त्र द्वारा उस काँटे को नीबू के भीतर इस प्रकार चुभाये कि काँटा केवल आधे नीबू में चुभे, पार न हो। पार ही जाने पर प्राणनाशक का भय होता है। यह कृत्य करने से स्त्री को तत्काल रुधिर गिरने लगेगा, इसमें सन्देह नहीं है। उस नीबू को लाकर जल के समीप शीतल स्थान में रखने से रुधिर गिरता रहेगा। परन्तु उसका शरीर क्षीण नहीं होगा। किन्तु यदि उस नीबू को धूप में रक्खे तो शरीर भी सूखने लगेगा। उक्त प्रकार से तारा टूटने पर ही काँटे को नीबू के बाहर निकालकर नीबू के छिद्र को किसी वस्तु से बन्द करने से रुधिर का निकलना बन्द होकर आराम होगा।

कुछ अन्य प्रयोग

मन्त्र—**उलटा पुलटा नारा चलै, अर्जुन मारा बान। अमुकिया तेरा गर्भ चलै, कंसासुरकी आन। इति मन्त्रः।**

सफेद फूलवाले हुलहुल के १२१ बीजों को १२१ मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके पान में रखकर मुंह में चबाये और पीक थूके। जो स्त्री उस पीक का उल्लंघन करेगी उसको (योनि से) रक्त गिरने लगेगा। फिर उस पान सिट्टि खिला देने से रुधिरस्राव बन्द हो जायगा यह सर्वथा सत्य है।

मन्त्र—**ॐ हकालूं चौंसठ योगिनी हकालूं बावन वीर घस घट लोही झिरै नैर झिरै वानी मरैरे रक्तिया वीर हियो धरै ना धीर रक्तियो रक्तियो रङ्गकी रक्तियो मांगै मासकी बड़ी चावै चणा चलावै पीड़ मसाणकी माटी भौराके बिलमें लपेटी जिस्के ऊप करूं सही स्त्री झरती दीखै शब्द साचा पिण्डकाचा चलो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

श्मशान की ७ कंकड़ियाँ लेकर कूएँ के जगत् के ऊपर २१ बार अभिमन्त्रित करके धूप दे और उनसे स्त्री को मारे। इससे उसको रक्तस्राव होने लगेगा—यह सत्य है।

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरुको काला कलवां तूं अवधूत हकालूंगा दडाव लाऊ भूत हाड काट चटपटी लगाव छाती छोल पैर चलाव हिये पैठि हूल चलाव चलावचलवा रे कालाभैरूं कालिकाके पूत चलावेगी हुकम साथ न चलावै तो माता चामुण्डाका तीर चूकै। इति मन्त्रः।**

रविवार के दिन काला चिड़ा पकड़े, रेशम का सवा दो हाथ का और सूत

का दो हाथ का डोरा बनावे। दो दीपक—एक घी का और दूसरा तेल का जलावे। तेल के दीपक में ढाई पाव तेल और घी के दीपक में सवा पाव घी डाले। सवा पैसा भर उड़द घी के दीपक में डाले, सवा पैसा भर उड़द और उक्त सूत का डोरा (धांगा) तेल के दीपक में डाले और मन्त्र पढ़े।

रेशम के डोरे से चिड़े को फाँसी लगावे और गला काट डाले, जो रक्त गिरे उसे तेल के दीपक में एकत्र करे। चारों पहरों में सात-सात मन्त्र पढ़े और गूगल की धूप देता जाय। जब रात व्यतीत होने पर दिन निकल आये तब सिद्ध हुआ जानना चाहिये। फिर तेल के दीपक की १ उड़द सात बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को मारा जाय और रेशम का डोरा स्पर्श कराया जाय उसको रक्तस्राव होने लगेगा। घी के दीपक का उड़द उसे देने से रक्तस्राव शान्त होगा।

४. सत्यानासी का बीज २ माशा और चीनी ४ माशा खिलाने से मासिक धर्म के पूर्व ही रक्तस्राव होने लगेगा इसमें सन्देह नहीं है। यह सिद्ध प्रयोग है।

५. खटमल में दो विशेष गुण हैं। उसे नीचे-ऊपर के दो भागों में विभक्त करके यदि नीचे के भाग को स्त्री को खिला दिया जाय तो तत्काल रक्तास्राव होने लगेगा। फिर ऊपर के भाग को खिला देने से रक्तस्राव रुक जायगा।।१४।।

६. कौवे की चोंच से रविवार को मार्ग में रेखा खींच दे। यदि स्त्री उस रेखा का उल्लंघन करेगी तो उसको रक्तस्राव होने लगेगा। फिर उसी चोंच को धोकर उसके धोवन को पिलाने से रक्तस्राव बन्द होगा।

शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः। कृकलाया मुखे क्षिप्वा कंकवृक्षे च बन्धयेत्।। मूत्रबन्धो भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी। बिना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोगः उदाहृतः।।

मंगलवार को शत्रु द्वारा मूत्रत्याग किये स्थान की मिट्टी लेकर गिरगिट के मुख में डालकर उसे धतूरे के वृक्ष से बाँध दे तो शत्रु का मूत्रबन्धन हो जायगा। उसको खोल देने से पुनः शान्ति होगी। इसमें बिना मन्त्र के ही सिद्धि होती है यह सिद्ध योग कहा गया है।

बुदे वा शनिवारे वा कृकलां गृह्य यत्नतः। शत्रुर्मूत्रयते यत्र कृकलां तत्र निक्षिपेत्। निखनेद्भूमिमध्ये च उद्धृते च पुनः सुखी। नपुंसको भवेत्सत्यं नान्यथा शङ्करोदितम्।।

बुधवार को या शनिवार को गिरगिट को यत्न से पकड़ ले। शत्रु जहाँ मूतता हो वहाँ गिरगिट को खोदकर गाड़ दे तो शत्रु का मूत्र—बन्ध होगा। गिरगिट को

निकाल लेने से सुखी होगा। इससे शत्रु नपुंसक भी हो जाता है—यह शंकर का कथन असत्य नहीं हो सकता।

प्राकृत ग्रन्थ का प्रयोग : रविवार के दिन मरे हुए छछून्दर की खाल में शत्रु के मूत्र की मिट्टी भरकर ऊँचे स्थान में लटकाने से मूत्र बन्द हो जाता है और वह गूंगा तथा पागल हो जाता है। उस मिट्टी को छछून्दर की खाल से निकाल देने से सुख होता है। शत्रु के मूत्र में बिच्छू का डंक गाड़ने से भी शत्रु को अत्यन्त पीड़ा होती है। फिर डंक निकालने से शान्ति होती है।

शत्रुशिरसि पादुकाहनन

मन्त्र—**ॐ नमो हनुमन्त बलवन्त माता अञ्जनी पुत्र हलहलन्त आवो चढन्त आवो गढ़किला तोड़न्त आवो लङ्का जालि वालि भस्मकरि आवो ले लङ्का लंगूरते लपटाते सुमेरते पटकावो चन्द्री चन्द्रावली भवानी मिलगावो मङ्गलचार जीते राम लक्ष्मण हनूमानजी आवोजी तुम आवो सात पानका वीडा चावत मस्तक सिन्दूर चढ़ावो आवो मन्दोदरीके सिंहासन डुलन्ता आवो यहां आवो हनुमान आया जागते नृसिंह माया आगे भैरूं किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजै दुर्जनको डार दुष्टको मार संहार राजा हमारे सतगुरु हम सतगुरुके बालका गुरुकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

मन्त्र की सिद्धि के लिये २१ दिन या ४१ दिन में दश हजार जप करे, पान का बीड़ा तथा मोदक का भोग लगावे, नैवेद्य द्वारा हनुमान्जी का पूजन करे और सिन्दूर तथा सुगन्धित पुष्प चढ़ावे। फिर भूमि पर शत्रु की एक प्रतिमा बना कर यथोचित बीजों को लिखे। उसके वक्ष पर शत्रु का नाम लिखकर उस पर मन्त्र से दो जूते मारे। यदि प्रतिमा के सर पर जूता मारा जाय तो शत्रु का सर फूट जाता है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वह पागल हो जाता है—इसमें सन्देह नहीं है।

शत्रुपीडन

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिपुरभैरव त्रिपुरवीर मम शत्रोरमुकस्य पीडां कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर नीचे दिये तन्त्र को लिखे। उसमें नीचे शत्रु का नाम और उसकी माता का नाम लिख कर यन्त्र को गूगल की धूप देकर १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु के चौखट के नीचे या आँगन में अथवा मार्ग में गाड़ दे। जब शत्रु इस मन्त्र का उल्लंघन करेगा तो उसे अत्यन्त पीड़ा होगी अथवा शत्रु के पाँव के नीचे की मृत्तिका को सात करेलियों में भरकर प्रत्येक करेलों के ऊपर सात बार मन्त्र पढ़कर चरखे के टेकुये में पिरोये और फिर उन्हें अग्नि में तपाये। इससे बैरी को अवश्यमेव अत्यन्त कष्ट होगा।

मन्त्र—ॐ कालाभैरूं झङ्कालका तीर मार तोड दुश्मनकी छाती घोर हाथ कलेजो काढ बत्तीस दांत तोड यह शब्द नाचलै तो खड़ी योगिनी का तीर छूटै गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्यनाम आदेश गुरूको। इति मन्त्रः।

कनेर का २१ फूल और गूगल की २१ गोली सरसों के तेल सहित मन्त्र पढ़-पढ़कर होम करे तो ११ दिन अथवा २१ दिन में शत्रु को पीड़ा प्राप्त होगी।

मन्त्र—ॐ नमो आदेश गुरूको लाल पलङ्ग औरङ्गी छाया काढ कलेजा तूही चख। इति मन्त्रः।

चौका देकर दीपक जलावे और तीन बार कहे कि 'आओ महावीर पहलवान् हनुमान्जी।' फिर तीन बार कहे 'आओ कलुवा वीर रणधीर।' ऐसा कहने के बाद गूगल की धूप देकर नैवेद्य चढ़ावे, नित्य १ हजार मन्त्र पढ़े तथा घी, लौंग, सुपारी, जायफल, गूगल और मिश्री का १२५ बार होम करे। ऐसा करने से ११ दिन में सिद्धि होती है। फिर ब्राह्मण भोजन कराकर २१ दिन तक प्रतिदिन मन्त्र का १ हजार जप करें तो शत्रु का नाश होता है।

एक अन्य प्रयोग

मन्त्र—ॐ नमो आगिया वैताल पैठ सातवें जाहु पाताल लावो अग्निकी जलती झाल बैठजाहु ब्रह्माके कपाल पहेरौ लाल फूलकी माल चडौ ठोकके अपनी ताल चलौ चलौ जलावो आग न जलावो तो माता कालिकाकी आन। इति मन्त्रः।

होली से आरम्भ करके मन्त्र का १ लाख जप करके मछली का नैवेद्य लगाने और गन्धक का धूप देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर जहाँ आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट करनी हो वहाँ मन्त्र पढ़कर फूंक मारने से आग प्रकट होती है।

मूठचालन मन्त्र

मन्त्र—ॐ नमो कालाभैरों मसाणवासा चौसठ जोगनी करै तमासा उड़दकी मुट्ठी रक्तावाण चल रे भैरों कचियामसाण मै कहूं तोसों समझाय सवापहेरमें धुवा दिखाय मूवा मुरदा मरघटवास माता छोडै पुत्रकी आस जलती लकड़ी धिकै मसाण भैरों मेरा वैरी तेरा खान सेलीसिङ्गीं रुद्रबाण मेरे वैरीको नहीं मारै तो राजारामचन्द्रलक्ष्मणजतीकी आन शब्द साचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।

किसी मुर्दे को देखकर श्मशान में जाकर उसकी हड्डी लेकर चिता में खूब

लाल करे और उसमें एक मुट्ठी उड़द डाले दे। इन उड़दों में जो जल जायँ उन्हें अलग कर ले और जो खिल जाय उन्हें अलग कर ले जले उड़दों पर २१ बार मन्त्र पढ़कर प्रात:काल बिना मुंह धोये शत्रु को मारे तो वह यमलोक चला जायगा।

सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग

मन्त्र—**ॐ काली कङ्काली महाकालीके पुत्र कङ्कालभैरुं हुकम हाजिर रहै मेरा भेजा काज करै मेरा भेजा रक्षा करै आन बान्धूं वान बान्धूं चलते फिरतेके औसान बान्धूं दसोंसुर बान्धूं नौ नाड़ी बहत्तर कोठा बान्धूं फलमें भेजूं फूलमें जाय कोठे जो पड़ै थरथर कांपै हलहल हलै गिरगिर पड़ै उठउठ भागै बकबक बकै मेरा भेजा सवाघड़ी सवापहेर सवादि सवामास सवावरसकूं बावल न करै तो माता कालीकी शय्यापर पग धरै वाचा चूकै तो ऊभा सूखै वाचा छोड़े कुवाचा करै तो धोबीकी नाद चमारके कुण्डेमें पड़ै मेरा भेजा बावल न करै तो रुद्रके नेत्रसे अग्निकी ज्वाला कढै सिरकी लटा टूटि भूमिमें गिरै माता पार्वतीके चीरपर चोट पड़ै विना हुकुम नहीं मारना हो कालीके पुत्र कङ्कालभैरू फुरो मन्त्र इश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।**

कालरात्रि अथवा ग्रहण की रात्रि को तिकोना चौका लगाकर दक्षिणमुख बैठे और लाल कनेर के फूल, मोदक, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक रखकर इस मन्त्र का १ हजार जप तता दशांस हवन करे। जब भयङ्कर स्वरूप में भैरव सम्मुख आवे तब भयभीत न हो और तत्काल फूलों की माला उसके गले में डालकर मोदक अर्पण करे। इससे भैरव प्रसन्न हो जायगा और फिर उससे जो कार्य कहा जाय वह तत्काल कर देगा।

कुछ अन्य प्रयोग

२७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति दुर्वचने किलिकिलि वाचोभञ्जिनि मुखस्तम्भिनि स्वाहा। इति सप्तविंशत्यक्षरो मन्त्रः।**

इसके जपमात्र से सभी के मुख का स्तम्भन होता है॥२॥

मन्त्र—**ॐ नमो याचली याचली उस्का चश्मा कुलफ उस्का बाजू कुलफ दुश्मनको जेर कर हमको सेर। इति मन्त्रः।**

हनुमानजी का विधिपूर्वक पूजन करके मन्त्र का १ हजार जप और १ हजार गूगल की गोली का होम करने से सिद्ध होता है। तदुपरान्त सात बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंके तो वह बड़बड़ाने नहीं पावेगा।

मन्त्र—**ॐ अलफ अलफ अलफ दुसमनके मुहमें कुलफ मेरे हाथ कुञ्जी रूपा तेरे कर दुश्मन जेर कर। इति मन्त्रः।**

शनिवार की रात्रि में घृत का दीप जलाकर फूल, बताशा चढ़ाकर गूगल की १ हजार आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारकर यदि उससे बात किया जाय तो वह बोल नहीं सकेगा। यदि आवेदन पत्र पर १०८ बार पढ़कर लोहबान की धूप देकर वह आवेदन पत्र अधिकारी को दे तो निश्चित रूप से मनोरथ सिद्ध होगा।

मन्त्र—**ॐ ह्रीं श्रीं खेतलवीर चोसठयोगिनी प्रतिहार मम शत्रू अमुकस्य मुखबन्धनं कुरुकुरु स्वाहा। इति मन्त्रः।**

घी, शहद और मद्य की १ हजार आहुतियाँ देकर लोहे की ४ अंगुल की कील श्मशान में गाड़ने से शत्रु का मुख स्तम्भन हो जाता है।

मेघ स्तम्भन

यह १६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ हूं ह्रीं क्षं क्षां क्षिं क्षीं क्षुं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः हूं फट् ठः ठः। इत्येकोनविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

पूर्वाभिमुखो भूत्वा लक्षं जपेत्। वैश्वानरसमीपे वेतसमिदा घृताक्तयाऽयुतं जुहुयात्। सिद्धो भवति। पुनः मन्त्रं पठित्वा मेघावलोकनेन सर्वे मेघाः प्रणश्यन्ति वासवो न वर्षन्ति। नदीं समुद्रगां शोषयति। मेघशब्दो न भवति। उदकमध्ये स्थित्वा जपेत्। आनावृष्टिर्भवति।।

पूर्वाभिमुख होकर एक लाख जप और अग्नि मेंघी से सिक्त बेंत की समिधा का दश हजार होम करे। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। पुनः मन्त्र पढ़कर मेघ को देखने से सभी मेघ नष्ट हो जाते हैं और इन्द्र वर्षा नहीं करते। यहाँ तक कि समुद्रगामिनी नदियों को साधक सुखा देता है और मेघों का गर्जन बी नहीं होता। पानी में खड़े होकर जप करने से अनावृष्टि के समय वर्षा होती है।

सेना स्तम्भन

२८ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्यष्टाविंशत्यक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्र जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

स्नापलायन

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकोनत्रिंशदक्षरो मन्त्रः।

अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ जप से सिद्ध होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधको तन्त्रों को करे।

अग्नि स्तम्भन

निम्नलिखित मन्त्र को बजनपत्र पर पीले द्रव्य से लिखकर पूजा करे। फिर इसे भूमि में गाड़कर पानी की धार डालता रहे। इससे घर में अग्नि का भय नहीं रहता।

यह २१ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमोऽग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कुरुकुरु स्वाहा। इत्येकविंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात् सिद्धिः एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ मन्त्रजप से सिद्धि होती है। इस प्रकार सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

कुछ अन्य प्रयोग

१. प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ वज्रयोगिनी वज्रकिवाड़, वजरी बांधू दसूं दुवार। झाड़ो झड़ै न लिङ्गी करै, तो वज्रजोगनीका वाचा फुरै।

२. अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो आदेस गुरूको चार घाटी चार बटी रक्त चुवै चोरासी घाटी रक्त चुवै भील धीर थांभ हनुमन्त वीर लङ्कासा कोट समुदरसी खाई इस नारीके रक्त चुवै तो सोषिया वीरका दुहाई लूणा चमारीका दुहाी अजैपाल जोगीकी दुहाई लूंणा चमारीकी दुहाई अजैपाल जोगीकी दुहाई इति मन्त्रः।

उक्त दोनो मन्त्रों का विधान समान है।

कुमारी कन्या का काता हुआ ढाई पूणी सूत लेकर उसका डोरा बनाकर मन्त्र द्वारा सात गाँठ देकर उसे कमर में बाँधने से गर्भपात रुक जाता है। यह सत्य है।

पदस्तम्भन

मन्त्र—**ॐ नमो आदेस गुरूको चार आंटी चार वाटी नीर चढ़ै चौरासी घाटी आवै नीर भीजै चीर बांधगाय सोखता वीर सोखता वीर लङ्का वसै सोला कुण्डा रक्तका भर्षै शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा। इति मन्त्रः।**

आधी रात को मन्त्र पढ़कर २१ बार लोहबान जलावे। २१ दिन तक ऐसा करने से सिद्धि होती है। फिर कुमारी कन्या द्वारा काते सूत का डोरा बनाकर कमर में बाँधने से पदस्तम्भन होता है।

यह २६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्विष्टं कुरुकुरु स्वाहा। इति

षड्विंशत्यक्षरो मन्त्रः। अष्टोत्तरशतजपात्सिद्धिः। एतस्मिन्सिद्धे मन्त्रे मन्त्री तन्त्राणि कुर्यात्।

१०८ बार जप से सिद्धि होती है और सिद्ध मन्त्र से साधक तन्त्रों को करे।

प्राकृत ग्रन्थ में मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ बारा सरसो तेरा राई यारकी मारी मसाणकी छाई पढ़के मारू कर दलवार अमुका कढ़ै न देखै अमुकीका द्वार मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेस गुरूको। इति मन्त्रः।

सरसों, राई और श्मशान की भस्म इन तीनों को मङ्गलवार के दिन आक की लकड़ियों की अग्नि में १०८ बार होम करे। इस होम की भस्म को स्त्री या पुरुष के द्वार पर डाल दे तो दोनों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जायगा।

एक अन्य मन्त्र इस प्रकार है :

सत्य नाम आदेस गुरूको आकढाक दोनों वन राई अमुका अमुकी ऐसी करै जैसे कूकर और विलाई। इति मन्त्रः।

शनिवार से प्रारंभ करके ७ दिन इस मन्त्र को आक के पत्तों पर लिख अर्ध रात्रि के समय प्रत्येक पत्ते को सात मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके ढाक की लकड़ी के अङ्गारों में जलावे तो साध्यों के बीच अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

कुछ अन्य प्रयोग

वस्त्र पुर्षसिलवालमें हरिया मङ्गलके दिन जारै। तेहिकी राख खवावै उनको वैर बन्धै या मारै।। गधामुत्र लेवै शनिरविदिन, धरतीपड़न न पावै। तामें राई रखे तीन दिन, फिरले ताहि सुखावै। रविदिन धूनी दे लेजावै, जहांमित्र दोपावै। उनके मध्य डारकर आवै, वैरबाव होजावै।।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवति श्मशानकालिके अमुकममुकेन सह विद्वेषय विद्वेषय हनहन पचपच मथमथ हुं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः।**

इस मन्त्र से कड़वा तेल में नीम के पत्ते, तिल और चावल मिलाकर होम द्रव्य तैयार करे। फिर श्मशान की अग्नि से खैर की लकड़ियाँ जलाकर उसमें उक्त द्रव्य की १० हजार आहुतियाँ दे। इससे दो साध्यों में अवश्य बैर भाव उत्पन्न हो जाता है।

व्यापार वृद्धि मंत्र-१

व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व यदि इस मंत्र का १०८ बार उच्चारण करके दुकान खोलें और व्यापार का दैनिक कार्य प्रारम्भ करें तो उस दिन ब्रिकी बढ़ती है और किसी प्रकार का कोई उपद्रव या परेशानी नहीं आती। इस मंत्र

को सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नित्य दुकान खोलने से पूर्व एक माला जपना ही पर्याप्त है।

श्री लुल्ले महाशुक्ले कमलदल निवासे महालक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई, ना करो तो समुद्र की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोमीट तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहीई।

व्यापार वृद्धि मंत्र-२

भंवरवीर तू चेला मेरा खोल दुकान कहा कर मेरा उठै जो डंडी बिकै जो माल भंवरवीर की सौंह नहि खाली जाय।

बिक्री बढ़ाने के लिए यह अनुभूत मंत्र है। इसका प्रयोग केवल रविवार के दिन ही माना जाता है और ३ रविवार तक लगातार करने से सफलता मिलती है। प्रयोग इस प्रकार से है कि काले उड़द को २१ बार अभिमंत्रित कर व्यापार स्थल पर डालें। बिक्री में वृद्धि होगी।

व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र

कभी-कभी अचानक ही व्यवसाय चौपट होता हुआ प्रतीत होता है। सम्भव है धन्धे की बरकत तन्त्र-तन्त्र से बाँध दी गई हो। अगर ऐसा हो तो इस मन्त्र का प्रयोग किया जाना चाहिए। तुरंत लाभ मिलने लग जाता है।

"ओम नमो आदेश गुरू को वावन वार चौसठ सातऊ कलवा पांचऊ वड़वा जिन्न भूत परीत देव दानव दुष्ट मुष्ठ मैली मशाण इन्हीं को कील कील नजर दीठ मूँठ टोना टारे लोना चमारी गाजे या धन्धे दुकान की बरकत को बन्धन न छुड़ावे तो माता हिंगलाज की दुहीई।"

विधि—नवरात्रि में एक हजार जप से उक्त मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्धि के समय धूप जलाना चाहिए। मन्त्र सिद्धि के बाद बालकों और कन्याओं को भोजन कराना चाहिए।

बंधित दुकान में पाँच नीबुओं को इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित कर एक सूत्र में पिरो कर दुकान में टाँगना चाहिए। सरसों के कुछ दानों पर २१ मन्त्र पढ़कर दुकान में डालें।

रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र

'ओम नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल पूर्व को धाया देव दानवों को बाँधि लाया दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया भूत-प्रेत कूं बाँधि लाया तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया अयुत पितृ को बाँधि लाया चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ि लाया चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें छलछिद्र

कोऊ रहन न पावें रोग-दोष को दूर भगावें शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

यदि किसी का धंधा ठप्प पड़ गया हो, दुकान चलती नहीं हो, व्यवसाय मंदा पड़ गया हो अथवा चलते व्यापार में विघ्न आने लग गये हों तो उक्त शाबर मंत्र का विधिपूर्वक प्रयोग करने से अप्रत्याशित रूप से रोजगार चलने लगा जाता है और व्यापार की समस्त बाधाएं नष्ट हो जाती हैं।

एक बुर्जुग फकीर बाबा ले मुझे यात्रा प्रवास के दौरान रेल में बातचीत के समय विशिष्ट प्रयोग बताया था। उनका कहना था कि यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ इस प्रयोगल को सम्पन्न कर लिया जावे तों कोई भी ताकत व्यापार को वृद्धि करने से नहीं रोक सकती हैं इस प्रयोग को करने वाले साधक का व्यवसाय दिन-दूनी-रात-चौगनी तरक्की करने लग जाएगा।

प्रयोग इस प्रकार है कि इस कपड़े के चार पुतले बनावें और इस मंत्र को पढ़कर उन चारों पुतलों पर फूंक मारकर उन्हें अभिमंत्रित कर लेवें। तत्पश्चात् अपने व्यावसायिक स्थल के चारों कोनों में एक-एक पुतला उक्त मंत्र को पढ़ते हुए गाड़ देवें। इसके बाद प्रतिदिन प्रातः व्यापार स्थल पर जाने से पूर्व एक माला इस मंत्र की अवश्य जपें।

इस प्रकार करते रहने से रोजगार की समस्त बाधाएँ नष्ट होकर आश्चर्याजनक रूप से व्यापार चल निकलता है यह एक सिद्ध प्रयोग है। इन चमत्कारी पुतलों को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

धन प्राप्ति का मंत्र-१

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः स्वाहा।

व्याघ्र चर्म, मृग चर्म अथवा किसी भी चर्मासन पर बैठ कर या किसी नदी या जलाशय के तट पर वट वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्रं की साधना करने से साधक को अनायास धन प्राप्त होता है। साधना २१ दिन में एक लाख पच्चीस हजार मंत्र जाप द्वारा ही सम्पन्न की जा सकती है। परंतु मंत्र सिद्ध होने पर अकस्मात् धन प्राप्त होता है। यह निश्चित है।

धन प्राप्ति का मंत्र-२

ॐ सरस्वती ईश्वरी भगवती माता क्रां क्लीं, श्रीं श्रीं मम धनं देहि फट् स्वाहा।

धन की प्राप्ति में यदि बराबर रुकावट आ रही हो, तो इन मंत्र का एक सौ आठ-आठ बार (१०८) जप ४० दिन तक करें। लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर धन देगी,

यदि किसी की उधारी बाकी हो, व्यक्ति की नियत रुपया वापस नहीं देनी की हो, तो इस मंत्र के जप द्वारा व्यक्ति की बुद्धि निर्मल व शुद्ध हो जाती है तथा आपका रुका हुआ रुपया मंत्र बल से मिलने लगता है।

धन प्राप्ति का मंत्र-३

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी, महासरस्वती ममगृहे आगच्छ-आगच्छ ह्रीं नमः।

इस मंत्र को दीपावली की रात्रि को कुमकुम या अष्टगंध से थाली पर लिखें तथा उसी रात्रि को १८०० या यथेष्ट जप करें। तो उस वर्ष में साधक बहुत अधिक दौलत या ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करता है, यह अद्भुत प्रयोग है।

धन का भंडार प्राप्त करने का मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय, धन धन्याधिपतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा।

यह देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर का अमोघ मंत्र है। इस मंत्र के तीन माह तक रोज १०८ बार जाप करे, जाप करते समय एक कौड़ी (धनलक्ष्मी कौड़ी) अपने सन्मुख अवश्य ही रखे। तीन माह बाद प्रयोग पूरा होने पर उस कौड़ी को आप अपनी तिजोरी, गल्ले या लॉकर में स्थापित कर दे। आपके धन का भण्डार हमेशा भरा हुआ रहेगा।

धन वृद्धि करने का मन्त्र

ॐ नमो भगवती पद्म पदमावी ॐ ह्रीं ॐ ॐ पूर्वाय दक्षिणाय उत्तराय आष पूरय सर्वजन वश्य कुरु कुरु स्वाहा।

सिद्धि करने की विधि—विधान पूर्वक दीपावली की रात्रि को सिद्धि कर लें, पत्पश्चात् प्रातः शय्या त्याग से पूर्व एक सौ आठ बार मन्त्र पढ़कर चारों दिशाओं के कोणों में दस-दस बार फूँकें तो साधक को सभी दिशाओं से धन प्राप्ति हो।

अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र

"ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा"

प्रयोग विधि—सर्वप्रथम इस मन्त्र को दस सहस्त्र बार जाप कर सिद्धि करें, फिर जब प्रयोग करना हो तो जब पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो बहेड़े नामक वृक्ष का बाँदा लेकर एक सौ आठ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करें तथा जिस खेत की उपज बढ़ानी हो उस खेत में गाड़ देने से अन्न की उपज अधिक होती है।

गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र

"ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलम्"

प्रयोग विधि—उपरोक्त मन्त्र एक सौ आठ बार पढ़कर पशुओं को चारा खिलाने से दूध की वृद्धि होती है।

अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र

"ॐ नमो विघ्नविनाशाद्य निधि दर्शन कुरु कुरु स्वाहा"

प्रयोग विधि—शुभ दिवस तथा नक्षत्र में इस मंत्र को सहस्त्र बार जप करे, सिद्धि हो जाने पर जब प्रयोग करना हो तब जिस स्थान में धन गड़े होने की सम्भावना हो उस स्थान पर धतूरे के बीज, हलाहल, सफेद घुघुंची, गन्धक, मैनसिल, उल्लू की विष्ठा तथा शिरीष वृक्ष का पंचांग बराबर-बराबर लें सरसों के तेल में पकावें तथा इसी से धूप करने दस सहस्त्र बार मन्त्र का जाप करने से भूत-प्रेत तथा पितृ आदि का साया उस स्थान से हट जाता है और भूमि में गड़ी धनराशि साधक को दृष्टिगोचर होने लगती है।

ऋद्धि करण मन्त्र

ॐ नमो पदमावती पद्मानने लक्ष्मी दायिनी बाछां भूत-प्रेत विंध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहनी सिद्ध ऋद्धि वृद्ध कुरु कुरु स्वाहा ॐ नमः क्लीं श्री पद्मावत्यै नमः।

प्रयोग विधि—छार छबीला, कपूर, कचरी, गूगुल, गोरोचन समभाग लें मटर के समान गोलियाँ बनाकर रविवार या शनिवार की आधी रात से जाप प्रारम्भ करें और बाईस दिन तक एक सौ आठ बार मन्त्र जाप करें तथा एक सौ पाँच बार मन्त्र जाप कर हवन करें तथा पूजन में लाल वस्तु ही रखें तथा लाल वस्त्र ही पहने तो बाईस दिन पश्चात् लक्ष्मी जी की अनुकम्पा से ऋद्धि प्राप्त होगी।

आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः ध्वः ध्वः।।

प्रयोग विधि—मृगशिरा नक्षत्र में वध किये श्याम मृगचर्म पर आसीन हो किसी सरिता के तट कनकागुदी वृक्ष के नीचे बैठ श्रद्धा विश्वास पूर्वक इक्कीस दिन में एक लाख बार मन्त्र जपने से अनायास धन प्राप्त होता है।

नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि

इस जन्म तथा उस जन्म के असत् कर्मों के फलस्वरूप नौ ग्रहों की अशुभ दृष्टि से मानव को नाना प्रकार के अनिष्टों की उपलब्धि होती है अथवा यों मानिये कि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आकाश मण्डल में स्थित ग्रह पिण्डों के प्रभाव से उत्पन्न उत्पात दो प्रकार के होते हैं।

१. सम्पूर्ण राष्ट्र पर प्रभाव डालने वाले ग्रह, उत्पात ग्रह, युद्ध, भूकम्प, तूफान, रक्त वर्षा, केतूदय आदि। २. व्यक्ति विशेष पर होने वाले नाना प्रकार के ग्रह युतियों द्वारा परिलक्षित होते हैं, जिनका विवेचन ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में किया गया है।

तन्त्र शास्त्र के अन्तर्गत यन्त्र मन्त्रों का विशिष्ट महत्त्व है। इस विषय पर कई स्वतन्त्र ग्रन्थ भी निर्मित किये गये हैं, मगर तन्त्र-मन्त्र गुरु परम्परा वैशिष्ट्य के कारण गुह्य हैं, इसलिये सर्वसाधारण बहुत से विषयों से अपरिचित रहते हैं। हमने परम्परा प्राप्त ग्रह दोष निवारणार्थ यन्त्रों आदि का विशेष अनुभव किया है, जिन्हें जन साधारण के लिये बहुत ही सरल रीति से यहाँ उद्धृत कर रहे हैं। इन यन्त्रों को प्रारम्भ में सिद्ध करना पड़ता है, तदुपरान्त ही कोई व्यक्ति इन्हें किसी दूसरे को बनाकर दे सकता है। इन्हें सिद्ध करने की विधि संक्षेप में आगे लिख रहा हूँ।

प्रयोग विधि—प्रारम्भ में जिस ग्रह मन्त्रादि को सिद्ध करना ही उस ग्रह के देवता के बार (दिन) व्रतोपवास करें और विधिवत आठ हजार या बत्तीस हजार (ग्रह सम्बन्धित) मन्त्रों का जप-हवनादि प्रतिदिन दो हजार के हिसाब से करें, फिर उस ग्रह की काल होरा में यन्त्र निर्माण कर उसका पूजनादि करें, इसके पश्चात् अभिलाषित व्यक्ति को उपवास एवं यन्त्र पूजन कराकर यन्त्र धारण करना चाहिये और ग्रहण, होली, दीपवाली, विजयादशमी (दशहरा), रामनवमी, अमावस्या, बसंत पंचमी आदि शुभ ग्रह नक्षत्रों में यन्त्रों का पूजन करना चाहिये व जिस ग्रह का यन्त्र हो उसके वार (दिन) में प्राय: पूजन धूप-दीप, आदि करते रहना चाहिये तो अति उत्तम होगा।

विशेष ध्यान रखें—

१. यन्त्रों को भोजपत्र पर अष्टगन्ध, केशर अथवा रक्त चन्दन (लाल चन्दन) या केशर मिश्रित सफेद चन्दन आदि से अनार या तुलसी की कलम (लेखनी) अथवा सोने (स्वर्ण) की निब (कलम) से ही लिखना चाहिये।

२. यन्त्र स्वर्ण अथवा रजत (चाँदी) के पत्र पर भी अंकित हो सकते हैं।

३. यन्त्रों को ताँबा-चाँदी अथवा सोने के ताबीज (खोल) में भरकर धारण करना चाहिये।

४. इन यन्त्रों का निर्माण यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण अथवा गुरुधारक व्यक्ति ही कर सकते हैं।

५. सूर्य यन्त्र, चन्द्र, मंगल, गुरु (बृहस्पति) शुक्र इन यन्त्रों को लाल डोरे में, बुध यन्त्र को हरे डोरे में, शनि-केतु-राहु के यन्त्रों को काले रंग में डोरे में पिरोकर दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करना चाहिये।

अष्टगन्ध बनाने की विधि

असली केशर, कस्तूरी, कपूर, काला अगर, गोरोचन, हाथी का मद,

सफेद चन्दन तथा लाल चन्दन इन सबको पीस लें और घोलकर रोशनाई बना लें। हाथी मद के अभाव में पिसी हल्दी लेनी चाहिये।

नवग्रहों के यन्त्रादिकों की जानकारी निम्न प्रकार से हैं—

१. रवि (सूर्य) यन्त्र मन्त्रादि

रसेंदुनागा नगबाणरामा युग्मांववेदा नवकोष्ठमध्ये। विलिख्य धार्यं गद्नाशनाय वदन्ति गर्गादिमहामुनीद्राः।।

पुराणोक्त रवि मन्त्र

ह्रीं जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

अर्थात्—जपा (अढौल) के फूल के समान जिन सूर्य भगवान् की कान्ति है और जो 'कश्यप' से उत्पन्न हुए हैं, अन्धकार जिनका शत्रु है, जो सभी प्रकार के पापों को नष्ट करते हैं, उन सूर्य-भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक रवि मन्त्र

ॐ आकृष्टोनेत्यस्य मन्त्रस्य हिरण्यस्तुः सविता। त्रिष्टुप् सूर्य प्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आकृष्णेनन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतंमर्त्य च। हिरण्ययेन सविसार थेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन्।।

तन्त्रोक्त रवि मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। अथवा **ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।** जपसंख्या सात हजार। कलियुग में अट्ठाइस हजार।

सूर्य गायत्री मन्त्र

ॐ सप्त तुरंगाय विद्महे सहस्राय किरणाय धीमहि तन्नोरविः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ आदित्याय विद्महे प्रभाकराय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदयात्।।

सूर्य—मध्य भाग, वर्तुल मण्डल, अंगुल बारह, कलिंग देश, कश्यप गोत्र, रक्तवर्ण, सिंह राशि का स्वामी, वाहन सप्ताश्व, समिधा मदार।

दानद्रव्य—माणिक्य (माणिक) सोना, ताँबा, गेहूँ, घी, गुड़, लाल फूल, केशर, मूँगा, लाल गऊ, लाल चन्दन, दान का समय अरुणोदय (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—माणिक्य (माणिक रत्न)।

यदि रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो जड़ी बिल्व पेड़ (बेल) की जड़ को गले अथवा भुजा में धारण करना चाहिये।

२. चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि

नगद्विनंदा गजषट् समुद्रा शिवाक्षदिग्बाण विलिख्यकोष्ठे। चंद्रकृतारिष्ट-विनाशयनाय धार्यं मनुष्यैः शशियंत्रमीरितम्।।

पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र

दधि, शंख, तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुट भूषणम्।।

अर्थात्—दही, शंख अथवा हिम के समान जिनकी दीप्ति है और उत्पत्ति क्षीरसागर (समुद्र) से है, जो शिव (शंकर भगवान) के मुकुट पर अलंकार की तरह विराजमान रहते हैं, मैं उन चन्द्रदेव को प्रणाम करता हूँ।

वैदिक चन्द्र मन्त्र

ॐ आप्याय गौतमः सोमो गायत्री सोमप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ आप्यावस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सगथे।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः।

जपसंख्या—ग्यारह हजार, कलियुग में चौवालीस हजार।

सोम गायत्री मन्त्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

चन्द्र—अग्निकोण, चतुरस्त्र मण्डल, अंगुल चार, यमुनातटवर्ती देश, अत्रिगोत्र, श्वेत वर्ण, कर्क राशि का स्वामी, वाहन हरिण, समिधा पलाश।

दान द्रव्य—मोती, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दही, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, शंख, कपूर, सफेद बैल, सफेद चन्दन। दान का समय संध्या काल। (गोधूलि वेला)

धारण करने का रत्न-मोती या चन्द्रकान्त मणि (मूनस्टोन), अभाव में सीप अत्यधिक प्रभावशाली। जड़ी-खिरनी वृक्ष की जड़ को, सफेद कपड़े में सीकर गले अथवा भुजा में धारण करें।

३. मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि

गजग्निदिश्याथ नवाद्रिबाणा पातालरुद्रारससंविलख्य। भौमस्य यंत्रं क्रमशो विधार्यमनिष्टनाशं प्रवदन्ति गर्गाः।।

पुराणोक्त भौम जप मन्त्र

ह्रीं धरणीगर्भसभूतं विद्युत-कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पृथ्वी के उदर से जिनकी उत्पत्ति हुई है, विद्युत-पुंज (बिजली) के

सदृश (समान) जिनकी (प्रभा) है, और जो हाथों में शक्ति धारण किये रहते हैं, उन मंगल देव को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक जप मन्त्र

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः रूपोऽङ्गारको गायत्री, अङ्गारकप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

अथवा

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाठ रेतार्ठसि जिन्वसि।

तन्त्रोक्त भौम मन्त्र

क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

अथवा

ॐ हूँ श्रीं मंगलाय नमः।

जपसंख्या—दस हजार, कलियुग में चालीस हजार।

भौम गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धिमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।

मंगल—दक्षिण दिशा, त्रिकोणमण्डल, अंगल ३, अवन्ति देश, भारद्वाज गोत्र, मेष, वृश्चिक का स्वामी, वाहन मेढा, समिधा-खदिर।

दान द्रव्य—मूँगा, सोना, ताँबा, मसूर, गुड़, घी, लाल कपड़ा, लाल कनेर का फूल, केशर, कस्तूरी, लाल बैल, लाल चन्दन।

दान का समय—सबेरे दो घटी तक।

धारण करने का रत्न—मूँगा, अभाव में जड़ी-अनन्त मूल, नागजिह्वा की जड़, लाल डोरा व कपड़ में सिलकर धारण करना चाहिये।

ऋणमोचन मंगल स्तोत्र

मङ्गलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थितसनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः।।
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टेः कर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः।।
एतानि कुजनामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमवाप्नुयात्।।

धरणीगर्भ-संभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
स्तोत्रमङ्गारकस्यैतत् पठनीयं सदा नृभिः।
न तेषां भौमजा पीडा स्वल्पाऽपि भवति क्वचित्।।
अङ्गारक महाभाग! भगवन्! भक्तवत्सल।
त्वां नमामि ममाशेषमृणमाशु विनाशय।।
ऋण-रोगादि-दारिद्रयं ये चान्ये ह्यपमृत्यवः।
भय-क्लेश-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अतिवक्त्र दुराराध्यं भोग-मुक्त-जितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।
विरञ्चि शक्र-विष्णूनां मनुष्याणां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्त्वेन ग्रहराजो महाबलः।।
पुत्रन् देहि धनं देहि त्वामस्मि शरणं गतः।
ऋण-दारिद्रय-दुःखेन शत्रूणां च भयात्ततः।।
एभिर्द्वादशभिः श्लोकर्यः स्तौति च धरासुतम्।
महतीं श्रियमाप्नोति ह्यपरो धनो युवा।।

।।ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्र सम्पूर्णम्।

४. बुध का यन्त्र-मन्त्रादि

नवब्धिरुद्रा दशनागषट्का बाणार्कसप्ता नवकोष्ठयंत्रे। विलिख्य धार्यं गदनाशहेतवे वदंति यंत्रं शशिजस्य धीराः।।

पुराणोक्त बुध जप मन्त्र

ह्रीं प्रियङ्ग कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—प्रियंग की कली की भाँति जिनका श्याम वर्ण है, जिनके रूप की कोई उपमा ही नहीं है, उन सौम्य और सौम्यगुणी से युक्त बुध को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक बुध मन्त्र

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टासूर्ते सठं सृजेयायमं च। अस्मिन्त्सधस्थेऽअद्ध्यत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

अथवा

ॐ उद्बुध्यध्वं बुधो बुधस्त्रिष्टुप्, बुधप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः। ॐ

उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिध्वं बहवः सनीलाः। दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावती वसे निह्वये वः।।

तन्त्रोक्त बुध मन्त्र

ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। अथवा **ॐ ऐं श्रीं श्री बुधाय नमः।**

जपसंख्या—नौ हजार, कलियुग में तैतीस हजार।

बुध गायत्री मन्त्र

ॐ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

बुध—ईशानकोण, बाणकार मण्डल, अंगुल ४, मगधदेश, अत्रिगोत्र, पीतवर्ण, मिथुन, कन्या का स्वामी, वाहन सिंह, समिधा अपामार्ग, चिचिड़ा, लटजीरा।

दानद्रव्य—पन्ना, सोना, काँसी, मूँग, खाँड़, घी, हरा कपड़ा, सफेद फूल, हाथी दाँत, कपूर, शस्त्र, फल।

दान का समय—सबेरे पाँच घटी तक।

धारण करने का रत्न—पन्ना, अभाव में जड़ी-विधारा (वृद्ध मूल)। हरे रंग के डोरे या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

५. बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि

दिग्बाणसूर्या शिवनन्दसप्ता षड्विश्वनागाः क्रमतोऽककोष्ठे। विलिख्य धार्य गुरुयंत्रमीरितं रुजाविनाशाय वदंति तद्बहुधाः।।

पुराणोक्त गुरु जप मन्त्र

ह्रीं देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

अर्थात्—जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, कंचन (स्वर्ण) के समान जिनकी प्रभा है और जो बुद्धि के अखण्ड भण्डार तथा तीनों लोकों के प्रभु हैं उन बृहस्पति जी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त गुरु मन्त्र

ॐ बृहस्पते अतीत्यस्य गृत्समदो बृहस्पतिस्त्रिष्टुप्, बृहस्पतिप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ बृहस्पति अतियदर्यो अहद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र

ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।

जपसंख्या—उन्नीस हजार, कलियुग में छिहत्तर हजार।

गुरु गायत्री मन्त्र

ॐ अङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि, तन्नो जीवः प्रचोदयात्।

गुरु—उत्तर दिशा, दीर्घ चतुरस्र मण्डल, अंगुल ६, सिन्धु देश, अंगिरा गोत्र, पीत वर्ण, धनु, मीन का स्वामी, वाहन हाथी, समिधा पीपल।

दानद्रव्य—पुखराज, सोना, काँसी, चने की दाल, खाँड़ घी, पीला फूल, पीला कपड़ा, हल्दी, पुस्तक, घोड़ा, पीला फल।

दान का समय—संध्या काल।

धारण करने का रत्न—पुखराज नग। अभाव में जड़ी भारंगी (बमनेठी, पीले डोर या कपड़े में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

६. शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि

रुद्रांगविश्वा रविदिग्गजाख्या नगामनुश्चांकक्रमाद्विलेख्या। भृगोः कृतरिष्ट-निवारणाय धार्यं हि यंत्रं मुनिना प्रकीर्तिता।।

पुराणोक्त शुक्र मन्त्र

ह्रीं हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—तुषार, कुन्द अथवा मृणाल के समान जिनकी आभा (शोभा) है और जो दैत्यों के परम गुरु हैं, उन सब शास्त्रों के अद्वितीय वक्ता श्री शुक्राचार्यजी को मैं प्रणाम करता हूँ।

वेदोक्त शुक्र मन्त्र

ॐ शुक्रं त इत्यस्य मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः शुक्रो देवतास्त्रिष्टु, छन्दः, शुक्रप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ शुक्र ते अन्यद्यजनं ते अन्यद्विषुरुपे अहनीद्यौरिवासि। विश्वादि माया अवसिस्वधावोघद्रा ते पूषन्निहरातिरस्तु।

तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र

द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

जपसंख्या—सोलह हजार, कलियुग में चौसठ हजार।

शुक्र गायत्री मन्त्र

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्येदेहाय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात्।

शुक्र—पूर्वदिशा, षट्कोण मण्डल, अङ्गुल नौ, भोजकट देश, भृगुगोत्र, श्वेतवर्ण, वृषभ (वृष), तुला का स्वामी, वाहन अश्व, समिधा उदुम्बर।

दानद्रव्य—हीरा, सोना, चाँदी, चावल, मिश्री, दूध, सफेद कपड़ा, सफेद फूल, सुगन्ध, दही, सफेद घोड़ा, सफेद चन्दन।

दान का समय—अरुणोदय काल (सूर्योदय काल)।

धारण करने का रत्न—हीरा। अभाव में जड़ी। मंजीठ की जड़ को सफेद कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

७. शनि का यन्त्र-मन्त्रादि

अर्काद्रिमन्वास्मररुद्रअंका नगाख्यतिथ्या दश मन्दयन्त्रम्। विलिख्य भूर्जोपरि धार्यविद्वच्छनेः कृ तारिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त शनि जप मन्त्र

ह्रीं नीलञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यामग्रजम्। छायामार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनश्चरम्।।

अर्थात्—नील अंजन के समान जिनकी दीप्ति है और जो सूर्य भगवान के पुत्र तथा यमराज के बड़े भ्राता हैं, सूर्य की छाया से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन शनैश्चर (शनि) देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक शनि मन्त्र

ॐ शमग्निरित्यस्यरिंविठिः ऋषिः, शनैश्चरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ॐ शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः। शं वातो वात्वरपा अपस्त्रिधः।।

तन्त्रोक्त शनि मन्त्र

प्रां प्रीं प्रौं शनये नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

जपसंख्या—तेइस हजार, कलियुग में बानवे हजार।

शनि गायत्री मन्त्र

ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नः शौरिः प्रचोदयात्।

शनि—पश्चिम दिशा, धनुषाकार मण्डल, अङ्गुल दो, सौराष्ट्र देश, कश्यप गोत्र, कृष्ण वर्ण, मकर, कुम्भ राशि का स्वामी, वाहन गिद्ध, समिदा शमी।

दान द्रव्य—नीलम, सोना, लोहा, उड़द, कुलथी, तेल, काला कपड़ा, काला फल, कस्तूरी, काली गौ, भैंस, खड़ाऊँ। दान का समय-मध्याह्न काल।

धारण करने का रत्न—नीलम अथवा कालाश्वपदीय अँगूठी (काले घोड़े के पैर की नाल की अँगूठी), शनिवार के दिन के होरा में बनवा कर उँगली में धारण करना चाहिये। अभाव में जड़ी-अम्लवेत (श्वेत विरैला) की जड़ को काले कपड़े या डोरे में दाहिनी भुजा या गले में धारण करें।

८. राहु का मन्त्र

विश्वाष्टतिथ्या मनुसूर्यदिश्या खगमहींद्रैकदशांककोष्ठे। विलिख्य यंत्रं सततं विधार्य राहोः कृतरिष्टनिवारणाय।।

पुराणोक्त राहु मन्त्र

ह्रीं अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहूं प्रणामाम्यहम्।।

अर्थात्—जिनमा केवल आधा शरीर है तथा जिनमें महान् पराक्रम है, जो चन्द्र और सूर्य को भी परास्त कर देते हैं और सिंहिका के गर्भ से जिनकी उत्पत्ति हुई है, उन राहु देवता को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक राहु मन्त्र

ॐ कयान इत्यस्य मन्त्रस्य वामदेवो राहु गायत्री, राहुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदसावृधः सखा। कया शचिष्ठयावृता।।

तंत्रोक्त मन्त्र

भ्रां भ्रीं सौं सः राहवे नमः।

अथवा

ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

राहु गायत्री मन्त्र

ॐ शिरो रूपाय विद्महे, अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।।

राहु—नैऋत्य कोण, सूर्पाकार मण्डल, अङ्गुल बारह, राठीनापुर (मलयदेश), पैठीनस गोत्र, कृष्णवर्ण, वाहन व्याघ्र, समिधा दूर्बा (दूब)।

दाद द्रव्य—गोमेद, सोना, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नीला कपड़ा, काला फूल, तलवार, कम्बल, घोड़ा, सूप।

दान का समय—रात्रि।

धारण करने का रत्न—सीलोनी गोमेद नग। अभाव में जड़ी, सफेद चन्दन।

९. केतु का यन्त्र-मन्त्रादि

मनुखेचर-भूपातिथि-विश्व-शिवा दिग्सप्तादशसूर्यमिता। क्रमतो विलिखेन्नवकोष्ठमिते परिधार्य नरा दुःखनाशकराः।।

पुराणोक्त केतु मन्त्र

ह्रीं पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह-मस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

अर्थात्—पलाश के फूल की तरह जिनकी लाल दीप्ति है और जो समस्त तारकाओं में श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो स्वयं रौद्र रूप और रौद्रात्मक हैं ऐसे रूप वाले केतु को मैं प्रणाम करता हूँ।

वैदिक केतु मन्त्र

ॐ केतु कृण्वन्नित्यस्य मन्त्रस्य मधुच्छन्दा ऋषिः, केतुर्देवता गायत्रीछन्दः, केतुप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

तन्त्रोक्त मन्त्र

स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं केतवे नमः।

जपसंख्या—अठारह हजार, कलियुग में बहत्तर हजार।

केतु गायत्री मन्त्र

ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नः केतुः प्रचोदयात्।

केतु—वायव्य कोण, ध्वजाकार मण्डल, अङ्गुल छह, अन्तर्वेदी (कुश) देश, जैमिनी गोत्र, धूम्र वर्ण, वाहन कबूतर, समिधा-कुशा।

दान द्रव्य—लहसुनियाँ, सोना, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूमिल कपड़ा, धूमिल फूल, नारियल, कम्बल, बकरा, शस्त्र। दान का समय-रात्रि।

धारण करने का रत्न—लहसुनियाँ नग या लाजवर्त नग, अभाव में जड़ी, असगन्ध की जड़ी को काले कपड़े या डोरे में गले अथवा दाहिनी भुजा में धारण करें।

नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि

जिन व्यक्तियों के कई ग्रह अरिष्ट चल रहे हों उन्हें चाहिये कि ग्रहण, होली, दीपावली, विजयादशमी, रामनवमी, अमावस्या, नागपंचमी, वसंत पंचमी आदि शुभ मुहूर्तों में विधि-विधान पूर्वक यन्त्रों का निर्माण, भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही से पूरा विधान ऊपर नवग्रहों के यन्त्रों में लिखा जा चुका है। निर्माण करके

निम्नलिखित नवग्रह स्तोत्र से कम-से-कम छियानवें हजार मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके विधि-विधान पूर्वक धारण करने से नवग्रह दोषों की पीड़ा शान्ति होती है।

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्-कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकामगर्भसंभूतं तं राहूं प्रणमाप्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः।।

अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय

जिस समय कोई अशुभ ग्रह आप को अशुभ फल दे रहा हो उसकी शान्ति हेतु प्राचीन काल के महर्षियों-विद्वानों ने उसके यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि का जपानुष्ठान, व दानादि का विधान किया है, जो आपको उपरोक्त नवग्रह जन्य दोष

शान्ति आदि का पूरा विधान जप-संध्या आदि विस्तृत रूप से लिखकर समझाया गया है। मन्त्र-जपादि स्वयं अथवा किसी कर्मनिष्ठ यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मण से करायें। जो महानुभाव असमर्थ हों वे सब ग्रहों के दोष शान्त्यर्थ सामान्य औषधि से स्नान करें।

औषधि स्नान—लाजवन्ती (छुई-मुई), कूट, खिल्ला, कंगुनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, लोध, सवौषधि (कूट-जटामांसी, दोनों हल्दी, मुरा, शिलाजीत, चन्दन, वच, चम्पक और नागर मोथा ये दस औषधि सर्वौषधि हैं।), इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सभी ग्रहों की पीड़ा नाश होती है।

सभी ग्रहों के दुष्ट दोष नाश के सबसे सुलभ उपाय है, पीपल वृक्ष पर जल, दीपदान तथा गौ और ब्राह्मण पूजा आदि से ग्रहों के दोष नाश होते हैं।

मूलमन्त्र

मन्दवारे तु येऽश्वत्थं प्रातरुत्थाय मानवाः।
आलभन्ते च तेषां वै ग्रहपीडां व्यपोहतु।।
यथा ग्रहो द्विजस्तद्वद्विज्ञेयो वेदपारगः।
तोषयन् मृदुवस्त्राद्यैस्तुष्टमेनं विसजर्दयेत्।।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर! ग्रहपापहरं परम्।।

।। इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत तन्त्र-मन्त्र साधना द्वितीय परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ।।२।।

।। शुभमिति ।।

□□□